



# ભાવસુયશવાટિકા

અર્થાત્

અખંડપ્રૌઢપ્રતાપ પોરબંદરાધિપતિ

શ્રીમન્ મહારાણાશ્રી

ભાવસિંહજી બહાદૂરની

પ્રસંગોપાત લખાએલી કવિતાઓનો

સંગ્રહ.

---

રચનાર.

રાજ્યકવિ નથુરામ સુંદરજી શુક્લ,

વાંકાનેર નિવાસી.

---

રાજકોટ :

ધી રાઇઝીંગ સ્ટાર પ્રીન્ટીંગ પ્રેસમાં

વ્યાસ કાલિદાસ પીતાંબરે છાપ્યું.



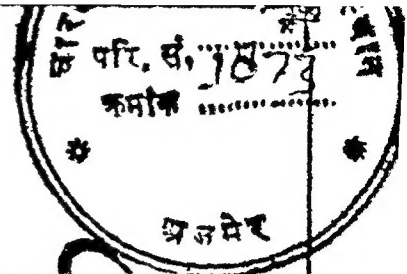


મહારાજા શ્રી ભાવસિંહજી બહાદુર—પોરબંદર.





॥ श्रीः ॥



# भावसुयशवाटिका.

प्रथम भाग-हिन्दी काव्य.

॥ कवित्त ॥

संत सुखदायिनी महंत वसुधाके मध्य,  
सुभग सुदामापुरी परम प्रख्यातहै ॥  
अमित उमंगी अष्टसिद्धि नवनिद्धि जहां,  
निश्चल निवास करि प्रौढ मुदपातहै ॥  
श्रेष्ठ ज्येष्ठ वंश अवतंस देव अंशवारे,  
पाटपैं पवित्र भाव भूपति सुहातहै ॥  
वैभव वखानत सुरेशसे समग्र जाके,  
कवि नधुराम आज वाके गुनगातहै ॥ १ ॥

शचीसी सलोनी लोनी श्यामा सती स्नेहवारी,  
 सेवामें सदैव रहै हाजर हुलाससों ॥  
 कवि नथुराम श्याम भक्त स्वच्छ प्रेम नेमी,  
 दासी दास दोरतहै पास सेवा आशसों ॥  
 किंकरसो काम रति रहती लजाई देखि,  
 सुखमा समस्त दंपतीके हिय हाससों ॥  
 भावसिंह भूपतिके विभव सुवासवतें,  
 बढतहे वाल युवराजके विलाससों ॥ २ ॥

पन्ना पुखराज हीरा मानिक मनीओ मोति,  
 जोति भरे जाहिर जवाहिरको जोरहै ॥  
 कवि नथुराम भाति भाति भव्य भूखनके,  
 मंजुश महान भरे ठेरे ठोर ठोरहै ॥  
 मुन्नेकी न संख्या वहां रजतको लेखो कहा,  
 कुंदनके आभरन कलित करोरहै ॥  
 नकी भाव भूपके निधानहै कुवेर कैसे,  
 दानमें लुंटात यह आभा भरे ओरहै ॥ ३ ॥

घूमत गयंद मतवारे घुवरारे घने,  
 असित पहार कैसी उपमा धरावते ॥  
 कवि नथुराम साजे सुतर सलोने रहे,  
 चालवेमें चोट अग्निरथकी चुरावते ॥  
 वाजिनके जुथ्य बलवारे रहे राजी रोज,  
 धुनिसों धरातलकों गहर गजावते ॥  
 राना भावसिंह जू रसीली यह रचासतसों,  
 छितिपें सुरेन्द्र कैसो विभव बतावते ॥ ॥४॥

म्याना मजेदार मंजु पालकी प्रभासों पूर,  
 वग्गी विध विधकी बनाई गई वेशहै ॥  
 कवि नथुराम तावदान भरे तेजहूसों,  
 मन हरि लेत जायें मढित मुकेशहै ॥  
 भावसिंह भूपतिके वाहन विचित्र जाति,  
 पेखिकें प्रमान लेखि शकत न शेशहै ॥  
 रवि रथके समान रथपथ रोक रहै,  
 साङ्ग सारथीको संग बढ़त विशेषहै ॥ ॥५॥



जोरदार जाहिर मरोरदार तोरदार,  
 शूरदार साची भरपूर भव्य भाकीहै ॥  
 कवि नथुराम वर वस्त्रदार शस्त्रदार,  
 अमित उमंगदार रन छक छाकीहै ॥  
 सेना चतुरंगिनी भुपाल भावसिंहजूकी,  
 कलित कवायतकी जुगति जमाकीहै ॥  
 कालकों डवावनी जरावनी अरिके जोर,  
 खल मद खावनी हठावनी हलाकीहै ॥ ॥ ६ ॥

बुद्धवारे शुद्धवारे वंशके दिखाव दिव्य,  
 कलमवारे इल्मवारे मोद मतिवारेहै ॥  
 कवि नथुराम अभिराम धर्म कर्मवारे,  
 दाने दीर्घदर्शी नीति रीति रखवारेहै ॥  
 छांया छत्रधारीके पवित्र अधिकारी ऐसे,  
 भावसिंह भूपतिके नेनसों न न्यारेहै ॥  
 न्याय ओ अन्याय पयपानीके निवेरिवेमें,  
 धीरे राजहंसके तमाम गुन धारेहै ॥ ॥ ७ ॥

कुंदनको कलित सिंहासन करोरी मोल,  
जटित जवाहिरको छत्र छवि छातहै ॥  
कवि नथुराम भाव भूपति विराजमान,  
लखन रसीली छवि द्रग ललचातहै ॥  
भट्टनकी भीर ओर थट्ट गुनी लोकनकी,  
कंचनी कलावत गंभीर गुन गातहै ॥  
रानाकी सभाकी विभा देखिकें दिमागदार,  
साहिबी सुरोंकी लाख बखत लजातहै ॥ ८॥

॥ दोहा ॥

रानाकी रचासत रसिक, बरनत पाउँ न पार ;  
अब बरनौं आनंदसों, पट् ऋतु विविध विहार ॥ ९ ॥

## ॥ कवित्त ॥

पावसमें प्रवल प्रयोदको पयान देखि,  
 परम प्रमोद पूर अंतर उमंगतें ॥  
 कवि नथुराम मधु जाम भरी भाम देत,  
 अमित अराम लेत सुखप्रद संगतें ॥  
 मधुर मलार धुनी गहरी गजावे भोंन,  
 विविध विछौना सोंधा स्रवत पलंगतें ॥  
 भावसिंह भूपति यौं वरपा व्यतीत करे,  
 धेने परिधानकों रंगाय नये रंगतें ॥ ॥१०॥

फूलको चितान त्यां विछात फूलकी वनाई,  
 फूलनके सेरे चारों ओर चित चोर धार ॥  
 कवि नथुराम किये खंभे खडे फूलनके,  
 फूलनकी सांकरैं फवीहे नई नोकदार ॥  
 फूलनकी गादी ओ गलीचे गूंदे फूलनके,  
 फूलनके गुच्छे हियहरन धरे हजार ॥  
 फूलनकी डोरिसों झुलावे भाव भूपतिकों,  
 फूली फूलवेलीसी नवेली अलवेली नार ॥ ॥११॥

शरद सुहावनी वितावे भावसिंह भूप,  
 अभ्रख लिपाय आछे अयन दिवालपर ॥  
 सुभग विछावत विछात नथुराम श्वेत,  
 चमकै मयूखें चन्द्र वादलेकी जालपर ॥  
 चोसर चमेलीके धरेहै चारु अंगअंग,  
 सेवती सुगंध छाजै वसन विसालपर ॥  
 एक चंद अंबर सिताम्बरमें दूजो चंद,  
 राजत दुचंद विच उज्ज्वल अटालपर ॥१२॥

मोतिनकी मार हीरा हारकों उतार कर,  
 धारत अरगजादि मृगमद मालाकों ॥  
 कवि नथुराम आछे अंबर अलग करि,  
 पसँद करत दानी सालन दुशालाकों ॥  
 गरम गिजाही ल्यों मसाला मजेदार मजुं,  
 पामर बनाई देत पोरपति पालाकों ॥  
 बालाके बिनोद संग प्यालाको प्रमोद पूर,  
 भाव भुविपाला सेवै स्वच्छ चित्र शालाकों ॥ १३ ॥

शिशिरकी शीतकों धरे हैं कौन चित्तपर,  
 विविध विछौना मखमलके विछाये जात ॥  
 कवि नथुराम वारी जारियां अटारियां पै,  
 द्रढ पशमीनाहूके परदे धराये जात ॥  
 अनल अंगीठियां अधूम धूम धार सोंधा,  
 अतर भभकहूसों भुवन भराये जात ॥  
 आसव अनंत जाति वासवकों दुर्लभ सो,  
 भावासिंह भूपतिकों प्रमदा पिलाये जात ॥ १४ ॥

चंपक चमेली जाई जुई मोगरामें मंजु,  
 पुहुप परागवारे भव्य छवि भरते ॥  
 कवि नथुराम सोनजुही ओ सुहाग जपा,  
 मालतीके मध्य मधु मत्त गुंज करते ॥  
 गुनी गुन गावत वसंतकी बहार बड़ी,  
 आयस प्रमान परिजन अनुसरते ॥  
 वसन वसंती रंग सुमुखी हसंती संग,  
 खंती भाव भूपति वसंतमें विहरते ॥ १५ ॥

गहरि गुलाल घटा घुमत छटासों पूर,  
 गरजत प्रवल मृदंग धुनी पावतहै ॥  
 कवि नथुराम ठाम ठाम धाम धाम हूमैं,  
 केसरगुलाव आव बुंद वरषावतहै ॥  
 कलित सुकंठी कलावंतीके अलाप यामैं,  
 मोर कोकिलाके शोर जाहिर जतावतहै ॥  
 खैलत भुपाल भाव फाग अनुराग भरे,  
 बहादुर वसंत विच वरषा बतावतहै ॥ १६ ॥

परम हुलास पुहुपनको प्रकाश उत,  
 मुदित महान इत सुजन समाजहै ॥  
 कवि नथुराम उत कलरव कोकिलाके,  
 इत छरिदार हाकैं करत दराजहै ॥  
 शिलिमुख श्रेणी सुखदेनी उत गुंजरत,  
 गान इत गायकाको सहित सुसाजहै ॥  
 नित निज रयासतकों रसिक करन चहे,  
 उत ऋतुराज इत भाव महाराजहै ॥ १७ ॥

पुनित सरोरुहसे संतको प्रकाश करि,  
 करिर कुपात्रनकों जोर धरी जारो आप ॥  
 कवि नथुराम सद्य सुमन सुगंध वैसो,  
 प्रवल जहान मध्य सुयश प्रसारो आप ॥  
 किंशुक कुसुम जैसे अंकुश अनंत करि,  
 मंगल मदान्ध जनहूके कर्त फारो आप ॥  
 आज महाराज भावसिंह ऋतुराज बनी,  
 रस प्यासे, कोकिल कविके पुंज तारो आप ॥ १८ ॥

सरसोंके सुमन समान छिति यश छायो,  
 भरि मुख सौरभसे कलित हृदय रूप ॥  
 कवि नथुराम वन वीथीके समान महान,  
 वर विकसाय प्रजा रसिक वनाओ रूप ॥  
 सुदभर मुखरी समान मधुमालिकाकी,  
 वंदी मुख विरद बुलाओ यशके अनूप ॥  
 विविध वसंतोत्सव अमित विलोको आप,  
 युत युवराज शिर ताज धरि भाव भूप ॥ १९ ॥

खसके अरासनपै छिड़के गुलाब आन,  
 अमित उड़ावै आसपास जलजन्धार ॥  
 कवि नथुराम चारु चंदन चहल करे,  
 लिपतहै घन घलसारसों दसों दियार ॥  
 संदलकी सेज कंज दलसों बिछाय राखी,  
 विविध सुरवे धरे दरफ बढ़ावै प्यार ॥  
 ग्रीष्मको मारत गुमान छांया छत्रधारी,  
 वासव समान भाव भूपति करे विहार ॥ ॥ २० ॥

### ॥ दोहा ॥

विभव विविध वरडेसके, कहाँ तक करौं बखान;  
 कलुक बताउं वानिमें, महिषति दान महान ॥ ॥ २१ ॥

### ॥ कवित्त ॥

सुन्यो कहनावतमें परम प्रसिद्ध सिद्ध,  
 नाम रहे स्थायी जग गीतडेकी भीतडे ॥  
 कवि नथुराम यातें अमित उड़ायो द्रव्य,  
 दिग अंतलों बहाये दान दरिया बडे ॥



जाचक अजाचक वनाय दिये जगतीके,  
 खंतसों कथत कवि सुजस खडे खडे ॥  
 पोर पतशाह भोज तुल्य भावसिंह जूने,  
 नाम कियो चारु चिर गुनिनसों गीतडे ॥ २२ ॥

### ॥ दोहा ॥

नधुरामके नाथकों, ओर भयो अभिलाष;  
 भुवन वनायो भव्य अति, भयहर भाव विलास ॥ २३ ॥

### ॥ कवित्त ॥

तीर रतनाकरको शीतल समीरवारो,  
 आवत उशीरको न लेश जहां लेखेमैं ॥  
 कवि नधुराम हरियारी हितवारी छाई,  
 ब्रच्छ नारिकेल दै प्रतच्छ मोद पेखेमैं ॥  
 स्वच्छ सिकताके जहां फरस फवेहे खूब,  
 होत प्रतिविम्बित दिनेश स्वर्न रेखेमैं ॥  
 भावसिंह भूपतिने भुवन बंधायो वहां,  
 दिल हरि लेत स्थान दिव्य छवि देखेमैं ॥ २४ ॥

वर वरडेशजूकी उत्तंग अटान छटा,  
 लखत घटानको गरव गरिजातहै ॥  
 कवि नथुराम भाव भूपतिके भौन जूकी,  
 समता सुमेरु छोडि द्रग न दिखातहै ॥  
 रजत पहारहूकै श्रंग समताकै लिये,  
 अजहुंलों बढत घटत दुःख पातहै ॥  
 सुरके समस्त धाम वरनों विसातमैं न,  
 राज्य म्हेल रानाको अनूठी छवि छातहै ॥२५॥

तूलके पहलसो महल भावसिंहजूको,  
 कैधों दूध फेनसो दमंकित दिखातहै ॥  
 कवि नथुराम कैधों फटिक शिलासो फवे,  
 कैधों शर्द चांदनीसी ज्योति चमकातहै ॥  
 कैधों चन्द्रकान्तसो की पेखों पुखराज कैसो,  
 कैधों हंसपञ्चकैसी शोभा सरसातहै ॥  
 सुरसरिधार कैसो रजत पहार कैसो,  
 उपमां मिले न यातैं मन सुरझातहै ॥२६॥

राना भावसिंहने रसिक राज्य म्हेल आगें,  
 वर वनवायो वाग नजर विलासहै ॥  
 विच नथुराम कीने बैठक विलास भौन,  
 झूलवेले झूले जनमोले सुलरासहै ॥  
 खुछे होद खाछे दायें पंकज मकाश पाये,  
 नीर भरी कहैं उपावत उलासहै ॥  
 सेवती सलोदी लोनी लपटी लवंग लता,  
 दरखत दोनावारे खवत सुवासहै ॥ ॥२७॥

नजर विलास वाग भाव भुविपालजूको,  
 देखिवेके लाथक दिमागदार दूनोहै ॥  
 कवि नथुराम जाति जातिके जनावरके,  
 पींजरोसे पूरित सुहावन सलूनोहै ॥  
 और कलखसों अनंत सुख देनहारो,  
 मुदको मुकाम अभिराम द्रग दूनोहै ॥  
 सिंहनके जोडे चीते कलित कलोलें करे,  
 जानों जगदर्शनको नौतम नमूनोहै ॥ ॥२८॥

दिव्य अग्रद्वारकी मैं सुखमा सकों न कही,  
लोहसों लपेटे जाके कलित किंदार है ॥  
कवि नथुराम ठाम ठाम शस्त्र साजि साजि,  
राजी रहै रात दिन जहां रखवार है ॥  
आरब ईरानी मुगलान मकरानवारे,  
हाजर हमेश धारे हाथ हथियार है ॥  
राना भावजूके राजद्वारको दमाम देखि,  
बानुन तलाम गये भाजि सिन्धुपार है ॥ २९ ॥

राना भावजूके राजद्वारकी घटीदा घूष,  
पापिनकों बल्लत पायसालकों बतावती ॥  
कवि नथुराम आठोजाम जव उत्तमकों,  
सुकत कियेकै लिये जवर जतावती ॥  
ग्यानी जनहूकों यह फानी दुनियांके फैल,  
घटि घटि जातहै दो घंटासैं गिनावती ॥  
पोर पतशाहको पवित्र विजै वाद्य बनि,  
चलि निशिघोस घोष विजय बजावती ॥ ३० ॥

भाति भाति भव्य स्वच्छ ब्रच्छ भाव भूपतिने,  
 लखि लगवाये जुगतीसों जागजागहै ॥  
 कवि नथुराम किये फरस फुहारे वारे,  
 देखत द्रगनकों उपावे अनुरागहै ॥  
 विविध लतानके वितान ठाम ठाम ठये,  
 गृहुप प्रफुल्लितसों झरत परागहै ॥  
 मुखको समंदर ओ मंदिर प्रमोद,  
 पोरबंदर पतिके रूहेल अंदरको बागहै ॥ ३१ ॥

पोर पतशाहके पवित्र राज्यमहलनमें,  
 पूरन प्रमोद भरी मंगलकी मालाहै ॥  
 कवि नथुराम ठाम ठाम भड भूपतिके,  
 कीने चित्र चारु चित्रकार वे रसालाहै ॥  
 ओर अवनीतलके अभिनव द्रश्य धारे,  
 दान दया धर्म युद्ध वीर मतवालाहै ॥  
 जोतिनकी जाला भरी नयन कसालाहरै,  
 भाव भुविपालाकी विशाला चित्रशालाहै ॥ ३२ ॥

दरन दिवारन किंवारन छतें ओ छजें,  
 तलन तमाम भाग धारसीसे ढांकेहै ॥  
 कवि नथुराम होत एकके अनेक रूप,  
 ओपत अनूपसे समुद्र सुखमाकेहै ॥  
 इन्द्रके न ऐसे भौन चन्द्रकी मयूखें दवे,  
 है न होनवारे तो कहों मैं ओर काकेहै ॥  
 लख छवि छाकै जनु पूरन प्रभाके पुंज,  
 भाव नृप दांकेकै महल आयनाकेहै ॥ ॥ ३३ ॥

विविध विछायेहे पटीरके पलंग जहां,  
 साटिन गिलम गदले सुखकारहै ॥  
 कवि नथुराम धाम कामके निवासकैसो,  
 कोककी कलाके धरे आसन अपारहै ॥  
 मेनका मदालसा तिलोत्तमा ल्यों रंभारति,  
 गोपतिके चित्रन विचित्र गर्वगारहै ॥  
 स्वच्छताकी सीमा भर्यो सोंधाको समुद्र मानो,  
 भावको विलास भौन मंजु मजेदारहै ॥ ॥ ३४ ॥

कलित कवालै छुटे कंचनी कलावतीकी,  
 नूपुरके नाद चारु लेत हरी चित्तकों ॥  
 कवि नथुराम शब्द मधुर मृदंगनके,  
 तंबुर सितार वीन छावै राग रीतकों ॥  
 सुभग सरंगी संग तानकी तरंगे छोडे,  
 रंगे अंग अंग दे उमंग पोपे प्रीतकों ॥  
 छाया छत्रधारी भाव भूपको संगीत भौन,  
 मित्त बुद्ध आगरको सागरहै गीतको ॥ ॥ ३५ ॥

सुन्नेको सिंहासन जवाहिरकी जोत भर्यो,  
 कोंच खुरसीकी लैन शुभ सरसावनो ॥  
 कवि नथुराम मनोहारी मीनाकारी काम,  
 आयनेकी आवसों अनंत छवि छावनो ॥  
 हांडी ग्लास झुम्पर दिवालगिरी वालसेट,  
 विद्युत चिरागमाला द्रग दरसावनो ॥  
 भावसिंह भूपतिको कलित कचेरीहोल,  
 भावनो भलेजनकों आनंद उपावनो ॥ ॥ ३६ ॥

सिंहनीसी शूरी प्रेम पूरी सती रूप रति,  
 शर्म धर्म सानी जहां रानीको निवासहै ॥  
 कवि नथुराम त्यों पवित्र परिचारिकाके,  
 प्रचलित पुंज पुंज हृदय हुलासहै ॥  
 करत हुंकारे खेले वाल हरिसो कुमार,  
 जात उडि माते अरि मंगलके सासहै ॥  
 राना भावसिंहको रसीलो रनवास खास,  
 सिंहके अवासकैसो करत प्रकाशहै ॥ ॥ ३७ ॥

सौंधा भौन स्नान भौन विविध विचार भौन,  
 सेवा भौन मेवा भौन लखि सुख पाउँमें ॥  
 कवि नथुराम लीके वस्त्र भौन शस्त्र भौन,  
 आभूषण भौनहै ललित ललचाउँमें ॥  
 शांति भौन कांति भौन अनुप इकान्त भौन,  
 शाक भौन पाक भौन कितने गिनाउँमें ॥  
 राना भावसिंहके रसीले राज्यम्हेलहूमें,  
 अगनित भौन देखि मौन रह जाउँमें ॥ ॥ ३८ ॥



## ॥ दोहा ॥

रसप्रद रथासत कुसुमको, नौतम भाव नरेन्द्र;  
षट्पद वनि शतवरप लगि, चूसो चतुर मरंद ॥ ॥३९॥

## ॥ विजयादशमी वर्णन ॥

विजयी विजया दशमी दिन, विजयी स्वारी विशाल;  
विजयी शस्त्र शमी पूजियो, विजयी भाव भुपाल । ॥४०॥  
सुजश जाज सुदराज गुन, महद भाव महोराज;  
अचल रहो चिरकाल यह, तुमरे शिर पर ताज । ॥४१॥  
जश ध्वज फहराते रहो, गहराते गुन गान;  
अरिदल थहराते रहो, मकरध्वज कुल म्हान । ॥४२॥

## ॥ कवित्त ॥

(स्वारी वर्णन.)

कारे मेघ मंडलके पटल प्रचंड वैसैं,  
अमित उमंड आवै विजयी वितुंड गन ॥  
कवि नथुराम साजी राजी वेश वाजिनकी,  
सहित अत्राजी गाजी रहत अखंड घन ॥

घट्ट थट्ट भट्टनकी हट्टन न देत हथ्थी,  
रथ्थी महारथ्थी पुंज पथ्थीके दवात तन ॥  
जात शमी पूजन सुहातहै अमात्य संग,  
भावसिंह भूपति धनंजयसे धीरे वन ॥ ॥४३॥

(शस्त्र पूजन.)

आदितकी आभासें अनोखी भूरि भा'की भरी,  
छाकी नागिनीसी वांकी श्रेनी समशेरकी ॥  
कवि नथुराम प्रौढ पट्टिस प्रचंड सांग,  
वान भरे नूतन निपंगनके ढेरकी ॥  
चक्र गदा दुवन निकंदिनी दुनाली आली,  
कालीसी कंराली तोप अनुप अमेरकी ॥  
पोर पतशाह पूजे सहित सनेह शस्त्र,  
भाव भुविपाल संग भव्य धुनि भेरकी ॥ ॥४४॥

(राजसभा वर्णन.)

पोर पतशाहकी रसीली दिव्य राजसभा,  
भावसिंह भूपतिहे इन्द्रसे विराजमान ॥

कवि नथुराम जश धारी छत्र जेठवाको,  
 शिरपैं विराजै छाजै नौतम प्रभानिधान ॥  
 हाक प्रतिहारनकी हरप उपावे हिय,  
 वेहद बढावै मुद ग्हेरो गायकाको गान ॥  
 कवि कृतकाव्य कलरवसों कलित भरी,  
 देवकी सभासी देखी परत दिमागवान ॥ ४५॥

(भूपगुन वर्नन.)

॥ छप्पय ॥

वचन सत्य प्रन सत्य, सत्यभर अनुपम अंतर,  
 मतिहि सत्य रति सत्य, सत्यकृति सहित निरंतर;  
 सत्यदान दातार, सत्य यश छहरै दिगंतर,  
 सत्य कृत्य करधार, करहिं वश जग जिमि मंतर;  
 सत्यरूप नथुरामको, नाथ भाव नरवर नविन,  
 हनुमंत वंश अवतंसहै, क्यौं न सुजश कथही कविन । ४६।

## ॥ सवैया ॥

विक्रम तुल्य सुविक्रमवंत,  
 सुविक्रम पौत्र पवित्र मतिके ॥  
 मित्र समान सुचित्र प्रभामय,  
 मित्र निभात रसीक रतिके ॥  
 है नथुराम सदा हितकारक,  
 भाव भुपाल कलीत कृतिके ॥  
 दीन निवाह दराज करे नित,  
 काज करे खलवृन्द क्षतिके ॥ ४७ ॥

## ॥ कवित्त ॥

प्रबल प्रतापमें प्रतापको प्रताप पाओ,  
 न्यायमें नरेश नवशेरखांसे है रहो ॥  
 कवि नथुराम राजकाजमें अकञ्चरसे,  
 सुजस तुम्हारे क्षितिमंडलमें छवै रहो ॥  
 पंडित परिच्छामें त्यों ओर शुभसिच्छामेंजु,  
 सबल सदैव मोज भोज सम ले रहो ॥  
 भावसिंह भूप कवि कोविदके कल्प ब्रच्छ,  
 करन समान दान सुवरनदे रहो ॥ ४८ ॥

माधव प्रमान सुत माधवके सत्यवादी,  
 भक्त भयहारिवेकी आप द्रढ टेकहै ॥  
 कवि नथुराम लक्ष लाईकें सुलाभ रूप,  
 विविध विचार हर्ष भरित हरेकहै ॥  
 गायक तमामकों सहायक भुपाल भाव,  
 सद्य सुखदायक तुम्हारो तन एकहै ॥  
 छुपत कविकों देखि दुपत न दान ढिग,  
 गुपत गरथी और भुपत अनेकहै ॥ ४९ ॥

कविं गुनीं पंडितके मंडित करत मान,  
 खंडित करत खल मारगकों खोदकर ॥  
 कवि नथुराम प्रेमप्यासे जो पपीहरेहै,  
 वाकों करे तृप्त भूरि अमृतके होदभर ॥  
 दुष्टनकों दंडदे प्रचंड कष्ट पापिनकों,  
 नष्ट करी नीचनके कीचमें मिलातघर ॥  
 भावसिंह भूपकी अनेक राजनीति देखि,  
 पोर पतशाहसं प्रसिद्ध अरि पातडर ॥ ५० ॥

शस्त्र धरी शत्रुनकी आली पायमाली करो,  
जोर धरी जालिमके जोरनकों जारो आप ॥  
कवि नथुराम श्याम पोरके प्रतापी भाव,  
गोद्विज सहाय करी पित्रुनकों तारो आप ॥  
छूटो बनी सिंहसे लवारनके लूटो भौन,  
क्रोध करी जोद्ध क्रूर कौरवकों मारो आप ॥  
संतकों उगारो त्यों संहारो नेष्ट दुष्टनकों,  
भारथमें धारो प्यारो पारथको वारो आप ॥ ॥५१॥

(आशिर्वचन.)

परम उदारताको अचल अगार हैकें,  
क्षत्र कर्म कलित ललित धरि राजो आप ॥  
कवि नथुराम धर्म धाम श्याम घुमलीके,  
भावसिंह भूप भव्य भूतलमें भ्राजो आप ॥  
विविध विहार प्यार हरष हुलास भर,  
लूटि सुखरास गाढ शत्रु शिर गाजो आप ॥  
पोर पतशाह काज पुन्यके दराज करी,  
युत युवराज क्षितिमंडलमें छाजो आप ॥ ॥५२॥

दर्शनके प्यासी प्रजा पुंजकों दरश दैकें,  
हरप समेत वात श्रुति धरते रहो ॥  
कवि नथुराम दाद मुनिकें वेदादहुकी,  
हित उपजायकें विपाद हरते रहो ॥  
आपुनेकों आदर विरादरकों सत्यवात,  
चुगल चवायनतें दिल डरते रहो ॥  
पोर पतशाह भाव ल्हाव शुभ लेते रोज,  
कोटी जुग ऐसे राजकाज करते रहो ॥ ५३ ॥

प्रात उठ नित्य धरी प्रीत करवेके पिछे,  
अश्व चढी जैवो कारखानेके तपासमैं ॥  
कवि नथुराम सही सिका रुक्का फेर करी,  
मंत्र वात करवी बुलाई मंत्री पासमैं ॥  
अशन करीकें फिर वांचनको वख्त लेवो,  
न्याय भौन जाकें न्याय देवो जन रासमैं ॥  
फिर कवि गुनीकों बुलाय भाव ज्येष्ठ भूप,  
कोटी जुग राजो ऐसैं विविध विलासमैं ॥ ५४ ॥

आमद खरचको तपास खास करलेवो,  
 जवर खजानची जलेवमैं बुलायकैं ॥  
 कवि नथुराम दोस्त गिनकैं दिवानजूकों,  
 कवी सुनी लहेवी वात मन मुद पायकैं ॥  
 सलिलके आये आगें सेतु बांधवेको बोध,  
 सत्य शोध लेवो हंस वदन बनायकैं ॥  
 भावसिंह भूप काज करते अनूप ऐसे,  
 कोठी जुग राजो छत्रधारी यश छायकैं ॥ ५५ ॥

### ॥ सवैया ॥

चन्द्र पियूष सवे जवलों,  
 जवलों रवि ध्वान्त अहार करे ।  
 जवलों नथुराम विधि कर वेद,  
 अभेद गिरा सुउचार करे ।  
 जवलों हरसंग हरि मिलकैं,  
 परिपूरन प्रेम प्रचार करे ।  
 तवलों भुविपैं नित भाव भुपाल,  
 वडे सुख विच विहार करे ॥ ५६ ॥



## ॥ कवित्त ॥

ज्योलों धरा धारी रहे शिरपैं हमेश शेश,  
 ज्योलों अमरेश दुष्ट दानव हने रहे ॥  
 कवि नथुराम ज्योलों जागत कृशानु जोति,  
 ज्योलों जगदम्ब शंभु भगति सने रहे ॥  
 ज्योलों दिगपाल दश ख्यालवश होये विन,  
 तंत धरि पछे धरातलके तने रहे ॥  
 रुजसैं रहित त्योलों हरदम हितभर,  
 कुंवर सहित भाव भूपति वने रहे ॥ ॥ ५७ ॥

शक्रके समान सुख संपत सलोनी सदा,  
 शुभ गुन गेह राना स्नेह धरि साजो आप ॥  
 कवि नथुराम ठाम ठाम शुभ काम करी,  
 नाम करी नीको भुवि मंडलमें भ्राजो आप ॥  
 नेष्टकों हठाई श्रेष्ठ होईकें यथेष्ट वली,  
 छत्र शिर धारी अत्र छांयापाति छाजो आप ॥  
 गाजो अरिगनपैं निवाजो कवि कोविदकों,  
 कुंवर समेत कोटी वरष विराजो आप ॥ ॥ ५८ ॥

(पुनर्विजयादशमी वर्नन.)

॥ छप्पय ॥

विविध विजय दायिनी, आज विजयादशमी नृप,  
पाओ प्रौढ प्रताप, सद्य पूजिकें शमी नृप;  
जुगल चित्त चमकाव, वनी अभिनव उद्यमी नृप,  
जाहिर जशकी ज्योत, रहे जग विच जमी नृप;  
भावसिंह भूपाल तुम, अचल रहो अशरन शरन,  
आशिष कवि नथुरामकी, सदा होइ संपत भरन ॥५९॥

॥ कवित्त ॥

महिप मचाओ युद्ध ओर भूपतें अनोखो,  
सत्यताके शस्त्र ओर अस्त्र धार नीतिके ॥  
कवि नथुराम धर्म कवच धरीकें धीर,  
दयाके द्विरद हो सवार भरे प्रीतिके ॥  
दावकी दिमागदार सेना मुखरूप साजो,  
राजो भाव भूप सजी साज राजरीतिके ॥  
अमित उडाओ कलहंस कीरतिके नीके,  
पारथ प्रमान जग भारथकों जीतिकें ॥ ॥ ६० ॥

कुटिल कुपात्र कौरवोंकी फोज फोर डारो,  
 तोर डारो किछै सब कुधरम धारीकै ॥  
 कवि नथुराम जोर जयद्रथ जालिमको,  
 खोजिकें खपाओ तुंड खरित उतारीकें ॥  
 दुष्ट दगावाज दंभी दुःखद दुःशासनके,  
 वक्षपर बैठ पियो रुधिर निकारीकें ॥  
 पोर पतशाह भाव पारथ ओ भीम वैसे,  
 विजय असीम लो मदांध अरि मारीकें ॥ ॥६१॥

धन्यहो धरापें धराधीश वरडेश वीर,  
 नाथ हो अनाथनके दुष्टके दहनहो ॥  
 कवि नथुराम कवि कोविदके कल्पतरु,  
 रसके रसेश भाव जश केलि बनहो ॥  
 कामिनीके काम अभिराम राम रैयतके,  
 भानुसे प्रतापी त्यों भलाईके भवनहो ॥  
 घनहो पपीहाके सुमनहो मधुपनके,  
 पोर पतशाह मेरे प्रानके पवनहो ॥ ॥ ६२ ॥

प्रबल प्रताप प्रभा पुर्न प्रसराओ राना,  
जाहिर जगत मध्य जालिमका जीनापैं ॥  
पोर पतशाह पाँव तरल तुरंगमके,  
सुभट धराओ धाय शत्रुनका सीनापैं ॥  
छाँया छत्रधारी कृपा कुंदन चडाओ आप,  
कवि नथुराम नेही नवल नगीनापैं ॥  
भावसिंह भूपहो अनुप अवनीके विच,  
नष्ट कर नीच कष्ट करकैं कमीनापैं ॥ ॥ ६३ ॥

दुनीमें भयेतें भाव लीन दिग अम्बरको,  
अरध उमाने आधो लक्ष्मीपतिने लह्यो ॥  
इन्दुकला अंबरमें पन्नग पताल गयो,  
गङ्गाको प्रवाह वेगि वारिनिधिमें बह्यो ॥  
कवि नथुराम सरवज्ञता अधीशपनौं,  
भिक्षाटन यहै तीन ताके शेषमें रह्यो ॥  
पोर पतशाह भाव आदि युग आप लह्यो,  
अन्त अरिजूकों देन विधि चितमें चह्यो ॥ ॥ ६४ ॥

सुभग सिंगार रस छविपैं छटासों छाजे,  
 हरदम हास्य राजे मुख सुखरासमें ॥  
 कवि नथुराम बडे वाहुमें विराजे वीर,  
 अदभुत आय वसे बुद्धिके विलासमें ॥  
 शान्त हृदयेमें चन्द्रकान्तसो प्रकाश करे,  
 सुसमयरूप भाव भूपति हुलासमें ॥  
 पोर पतशाह ओर करुना भयानक,  
 विभत्स रहे घेरे तेरे अरिके अवासमें ॥ ॥ ६५ ॥

### ॥ छप्पय ॥

प्रतिदिन परमानंद, भव्य सु प्रताप भानसो,  
 हरष हास हुल्लास, छाओ मङ्गल महानसों;  
 यासवके सम विभव, बढो नित नित निधानसों,  
 रहो ध्वनित गृह रोज, काव्य कल गहर गानसों;  
 कोटि वरष राजो रसिक, भावसिंह भूपाल तुम,  
 कवि नथुराम सु कंठमें, धरि जयमाल विशाल तुम ॥ ६६ ॥

## ॥ कवित्त. ॥

(वर्षगांठ महोत्सव.)

पोषक शशीको पाख प्रवल प्रतिपदाकों,  
 पुन्य धाम परम पवित्र पोष मासमें ॥  
 कवि नथुराम पोरबंदर प्रभासों पूर,  
 नूरके फुहारे छूटे नृपति निवासमें ॥  
 लूँटे लच्छ याचक न खूँटेहे खजाने भरे,  
 तूटे दंड दारिदही पो'चे भाव पासमें ॥  
 जय जयकारकी जमावटसों जग्त छायो,  
 आये देव देखनकों उमडि अकाशमें ॥ ॥ ६७ ॥

मानिनीके मुखतें महान घोष मंगलके,  
 सुरन समेत हेत श्रुति परिवो करै ॥  
 कवि नथुराम धाम धाम धूम धाम छई,  
 आंगन अनूपरूप छवि धरिवो करै ॥  
 बिबिध पताके बाँके लेकें सौध शिखरपैं,  
 चित्रित विचित्र पुर चित्त हरिवो करै ॥  
 राना भावसिंहकी रसीली जन्मगांठ जान,  
 पुर जन परम सुभाव भरिवो करै ॥ ॥ ६८ ॥

दुगुन दिवालीसैं दिमागदार देख्यो द्रष्ट,  
 मधुपंचमीसैं पंच गुन मन भावनो ॥  
 कवि नथुराम जन्म अष्टमीसैं अष्टगुनो,  
 दश गुन दशरासैं हिय हरखावनो ॥  
 शत गुनो श्रावनी समाजसैं समग्र भाति,  
 सादीसैं सहस्रगुनो आनँद उपावनो ॥  
 ज्येष्ठ भाव भूपतिको श्रेष्ठ जन्मगांठ दिन,  
 लाखगुनो लाभतैं छितिमें मुद छावनौ ॥ ६९ ॥

छाजी रहे छत्र छायापतिके छवीसों शीश,  
 हाजिरहैं हिम्मती हजार हथियार धर ॥  
 साजी रहे संगीतकों कविं नथुराम गुनी,  
 राजी रहे सरव समाजी भूप भाव पर ॥  
 गाजी रहे गान गरवीले कंचनीके नीके,  
 बाजी रहे बाद्य भरे विविध विधान स्वर ॥  
 पांजी रहे पाय छर नृपति निवाजी रहे,  
 लाजी रहे पेरि कैं पुरंदर प्रताप वर ॥ ७० ॥

आप अंशवंस राजहंस अवतंस रूप,  
 भव्य भावसिंहको जनमदिन जानकै ॥  
 कवि नथुराम जमे जटिल जमात युत,  
 जलसामें जवर अमित मुद आनकै ॥  
 तांडव त्रिनेत्र नाचे लास्य नाचे पारवती,  
 गावत गणेश त्यों कुमार तीखे तानकै ॥  
 तंडु कर ताल धीरभद्र कर वीन वाजे,  
 मनिभद्र मुरज वजावे भरे मानकै ॥ ७१ ॥

इन्द्रनके इन्द्र रामचन्द्रकी सभामें रहे,  
 अनिल कुमार धरे आनंदसों मूछ पान ॥  
 कवि नथुराम पूछे प्रश्न प्रभु धारी प्रेम,  
 आज कहा अमित उमंग उर धरे आन ॥  
 लाये शुधि लंकते न इतनो उमंग आयो,  
 धाये द्रोनाचलकों उठाये औपधी निधान ॥  
 कुंभकर्णवारे कर्ण नासिका विडारे मारे,  
 असुर अपारे न्यारे मन मुद ना महान ॥ ७२ ॥



दुगुन दिवालीसैं दिमागदार देख्यो द्रष्ट,  
 मधुपंचमीसैं पंच गुन मन भावनो ॥  
 कवि नथुराम जन्म अष्टमीसैं अष्टगुनो,  
 दश गुन दशरासैं हिय हरखावनो ॥  
 शत गुनो श्रावनी समाजसैं समग्र भाति,  
 सादीसैं सहस्रगुनो आनँद उपावनो ॥  
 ज्येष्ठ भाव भूपतिको श्रेष्ठ जन्मगांठ दिन,  
 लाखगुनो लाभतैं छितिमें मुद छावनौ ॥ ६९ ॥

छाजी रहे छत्र छायापतिके छवीसों शीश,  
 हाजिरहै हिम्मती हजार हथियार धर ॥  
 साजी रहे संगीतकों कविं नथुराम गुनी,  
 राजी रहे सरव समाजी भूप भाव पर ॥  
 गाजी रहे गान गरवीले कंचनीके नीके,  
 वाजी रहे वाद्य भरे विविध विधान स्वर ॥  
 पांजी रहे पाय रर नृपति निवाजी रहे,  
 लाजी रहे पेरि त्रिकें पुरंदर प्रताप वर ॥ ७० ॥

आप अंशवंस राजहंस अवतंस रूप,  
 भव्य भावसिंहको जनमदिन जानकैं ॥  
 कविं नथुराम जमे जटिल जमात युत,  
 जलसामें जवर अमित मुद आनकैं ॥  
 तांडव त्रिनेत्र नाचे लास्य नाचे पारवती,  
 गावत गणेश त्यों कुमार तीखे तानकैं ॥  
 तंडु कर ताल धीरभद्र कर वीन वाजे,  
 मनिभद्र सुरज वजावे भरे मानकैं ॥ ७१ ॥

इन्द्रनके इन्द्र रामचन्द्रकी सभामें रहे,  
 अनिल कुमार धरे आनंदसों मूछ पान ॥  
 कवि नथुराम पूछे प्रश्न प्रभु धारी प्रेम,  
 आज कहा अमित उमंग उर धरे आन ॥  
 लाये शुधि लंकतें न इतनो उमंग आयो,  
 धाये द्रोनाचलकों उठाये औपधी निधान ॥  
 कुंभकर्णवारे कर्ण नासिका विडारे मारे,  
 असुर अपारे न्यारे मन मुद ना महान ॥ ७२ ॥

आये सब अमर सहितें अमरेश वहां,  
 लाये अवनीके नीके खोजिकें खबर खास ॥  
 कवि नथुराम पद प्रथम प्रभूके बंदि,  
 हित चरचाकों जाय वेठे हनुमान.पास ॥  
 जानी जगदीश भावसिंहजूकी जन्मगांठ,  
 पवनकुमारको प्रकाश्यो हियको हुलास ॥  
 राम भेय राजी सीता नेहसों निवाजी रहे,  
 गाजी रहे लखन प्रमोदको कंरी प्रकाश ॥ ॥७३॥

भग्त हनुमानजूको जगत्तमध्य ज्यैष्ठवंश,  
 परम प्रतापसों विनोद करे वासवसे ॥  
 कवि नथुराम राग सुरके समाज सह,  
 दैन लगे आशिष यों रसके भरे रवसे ॥  
 जाहिर जतावे जोर शोर जगतीके विच,  
 वरस करोर जीवे आनंद अभिनवसे  
 माधवको नंद भाव बखत बुलंद भूप,  
 मस्त रहे मनमें महान मुद आसवसे ॥ ॥ - ७४ ॥

१ (पुनर्वर्षगांठ महोत्सव.)

॥ दोहा ॥

प्रियकरनी तिथि प्रतिपदा, प्रेम प्रसारन पोष;  
विशदपक्ष दुःखविखहरन, मंगल मंगल घोष ॥॥७५॥

॥ छप्पय ॥

विविधविलास विशाल, फोज ले दुरग दवावत,  
प्रबल प्रेमपरकाश, दुरग दर दर छवि छावत;  
हर्षपाय उत्कर्ष, शोक अरि रोक हटावत,  
जवर हासको वास, खास घर घर प्रति पावत;  
मुद अमात्य मंगल नृपति, भाव जन्मदिन जानिकै,  
उर पुरकवि नथुरामको, कब्ज कियो बल आनिकै ॥७६॥

१-यह वर्षगांठ महोत्सव हास्तिनापुर (दिल्ली.) में हुआ था.

## ॥ कवित्त ॥

साहिबी सदैव रहे सबल सुरेश कैसी,  
 पोरकी प्रतिभा सुरपुरसी बनी रहै ॥  
 कवि नथुराम श्यामा शचीसी रिझावै सद्य,  
 विविध विहार क्रिया सुखसों सनी रहै ॥  
 कलित कुवेरहूकी ललित रसीली रमा,  
 खंतसों खजाने मध्य गहरी घनी रहै ॥  
 जीवे शतवर्ष भावसिंह भुवि भूषन है,  
 सुजश सदैव ब्रह्मतनया भनी रहै ॥ ७७ ॥

युधिष्ठिर और प्रथिराज शा' अकब्वरसे,  
 जा थलमें करत रहेथे नित्य राजकाज ॥  
 कवि नथुराम ठाम ठाम जिनके तमाम,  
 छावतहै जवर जलूस जसके समाज ॥  
 या थलमें पोर पतशाह भावसिंहजूकी,  
 सालग्रह पाय दिल हरप भयो दराज ॥  
 मोदप्रद साधनसों चित्रित चिराग युत,  
 देखों दिव्य सुखद दिमागदार दिल्ली आज ॥ ७८ ॥

## ॥ सवैया ॥

उत्तम राज्य युधिष्ठिर कैसो,  
 अहोनिश न्यायसों आप चलाओ ।  
 त्यों नथुराम प्रताप प्रभा,  
 प्रथिराजसी ये पुहुमीपर पाओ ।  
 पूर्न प्रजामनरञ्जनता,  
 शुभ शाह अकव्वरसी उर आओ,  
 भाव भुपाल पाति पुर पोरके,  
 छत्र धरी यशसों छिति छाओ ॥ ॥७९॥

आप प्रभासों अखंड रहो,  
 हरवरुत हरामी अरिकी प्रभा हर ।  
 त्यों नथुराम जहान तमाममें,  
 जाहिर जल्द करो जसके स्वर ।  
 पोरहुके पतशाह पवित्र,  
 सुभावसों भाव रहो सुखमा भर ।  
 छाजो सदा छिति छत्रपाति,  
 रतिवंत अति ध्रुवसे धर ऊपर ॥ ॥८०॥

## ॥ कवित्त ॥

विजय पताके वडे छाई बहोतेरे रहो,  
 घेरे रहो गुनी गन देते धन्यवाद धाम ॥  
 कवि नथुराम सद्य सुखद सुजसवारे,  
 बंदीवर विरद उचारे रहो आठो जाम ॥  
 पोर पतशाह भाव जाहिर जगत मध्य,  
 आप रहो अचल अनंत जुग ले अराम ॥  
 छाजे रहो छत्र शिर राजे रहो रिद्धि सिद्धि,  
 गाजे रहो अरिपैं विराजे रहो नीको नाम ॥८१॥

## प्रशंसा

देखे देश देशके नरेश वेश देश फिरी,  
 पग्यो कवि प्यारमें प्रथेश नहिं पेख्योमैं ॥  
 कवि नथुराम धीर वीर ओ उदार दिल,  
 पीर परपीरको अमीर नहिं देख्योमैं ॥  
 दानी तो न ग्यानी दानी ग्यानी तो प्रमानी नाहिं,  
 दानी ग्यानी ओ प्रमानी लाखमें न लेख्योमैं ॥  
 करनसो दानी पृथुराजसो प्रमानी आज,  
 पोर पतशाह भाव एक अवरेख्योमैं ॥ ८२ ॥

सागरमें खार मारतंडको प्रचंड मार,  
मघवा सभीत चित उनकों न चाउंमैं ॥  
कवि नथुराम त्यों धनंजय वन्यो शिखंडी,  
भीम अति अहारी यातें हियकों हठाऊंमैं ॥  
पंकजहै पंकमें मयंकमें कलंक लग्यो,  
दिलके विचार पल पल पलटाऊंमैं ॥  
भूपनके रूप भावसिंह गुनकूप राना,  
घटित तिहारी कौन उपमा घटाऊंमैं ॥ ८३ ॥

कामनको काम सुखधाम साधु संतनको,  
कवि कुलहुपैं कल्पवृक्षकैसो छायोहै ॥  
दुष्ट खल चौरनपैं कालदंडसो दिखायो,  
अरि झुंड तुंड क्रोधी नाहरसो धायोहै ॥  
अर्थिनको कर्न सुखभर्नहै सनेहिनको,  
शत्रु अभिमानीको प्रसिद्ध पद पायोहै ॥  
कवि नथुराम ऐसे बहुत बनाय रूप,  
भूप भावसिंह देवरूप दरसायोहै ॥ ८४ ॥



महद प्रभाकों मेढ भोज भुवि छोरि गयो,  
 यातें काव्यकंजन समूह कुमलायेहै ॥  
 कवि नथुराम कविकोक विछराने व्होत,  
 दारिद तिमिरहुसैं मन मुरझायेहै ॥  
 वित्तचखके विहीन दीनहैं न देखे जरा,  
 सूमशिला संग अंग पूर्न दुःख पायेहै ॥  
 भावसिंह भूप भानु पूरन प्रकाश्यो जान,  
 अव कविकोक थोक धीर तजि धायेहै ॥ ८५ ॥

कविकुल कमल बहुत विकसाय जिने,  
 गुनीगन भौरके तजाये दुःखदलहै ॥  
 कवि नथुराम वंदीकोकके विदारे कष्ट,  
 क्रूरन कुमुदकों वतायो निजवलहै ॥  
 खलनखघोतहुकी जोतको हर्योहै जोर,  
 अरिउदुगनपैं पसारे करानलहै ॥  
 माधवको नंद भाव वखत बुलंद आज,  
 रानो रविरूप आभा धरन अटलहै ॥ ८६ ॥

(आशीर्वचन.)

सुखद सुधासी नित्य भानुकी प्रभासी कीर्ति,  
काशी कलकत्तापै प्रकाशी छिति छवै रहो ॥  
कवि नथुराम भावसिंह भुविपाल तेरे,  
अरिन उदासी वनवासी दीन है रहो ॥  
आप अविनाशी होय विविध विलासी बनो,  
बंदी हितसानी वानी विजय भने रहो ॥  
हृदय हुलासी कवि भनत अशीश खासी,  
शक्र शची वैसे तुम दंपति बने रहो ॥ ८७ ॥

(असि वर्नन.)

अनलशिखाहै की शिखाहै कालकूटहुकी,  
किधौं शर दुःसह अगस्त्य अवरख्योमैं ॥  
किधौं नथुराम ज्वालामुखीकी जगीहै जोत,  
तिच्छन त्रिशूल शूलपान कर लेख्योमैं ॥  
भीषमको वान की प्रचंड दंड कालहुको,  
किधौं वज्र पान पाकशासनके पेख्योमैं ॥  
रनमें रमत समशेर राना भावकी के,  
असुरको अंतक बराहदंत देख्योमैं ॥ ८८ ॥

छूटीहै छंछेडी किधों वाधिनी वितुंड तुंड,  
 तूटी किधों नागिनी कराल तलातलकी ॥  
 किधों नथुराम फूटी कालिकाकी क्रोध ज्वाल,  
 वज्र वालिका की किधों वेटी हलाहलकी ॥  
 किधों पाकशासनको पुहुमी पर्योहै वज्र,  
 किधों चली ज्वाल बडी वाडव अनलकी ॥  
 अरिनकी छातीकों कंपाती मदमाती आज,  
 किधों तेग ताती भावसिंहजुकी झलकी ॥ ८९ ॥

(दुनाली वर्नन.)

वाडव चढ्योहै नभ वारिधिकों छांड किधों,  
 ज्वाला चढी जारिवेकों नगरी सुरेशकी ॥  
 कवि नथुराम किधों धाम निज छोरि आज,  
 दामन चलीहै लेन खवरी दिनेशकी ॥  
 भव चखज्वाल कामजारिवेकों कोप चली,  
 किधों लंक जरत पलात असुरेशकी ॥  
 अरि अंत बूटीहै कि तूटी मारतंड कला,  
 छूटीहै दुनाली भाव छांयाके नरेशकी ॥ ९० ॥

## ॥ छप्पय ॥

(श्री शिवालय खातमुहूर्त्त प्रसंग.)

संवत् शत उन्नीस, साठ श्रावन सुखदाता,  
शुक्ल पक्ष शनि दशमी, वंश हनुमत विख्याता;  
भावसिंह भूपाल, पोरवंदर पतशाही,  
धर्मधुरंधर धीर, वीर गुनिके गुनग्राही;  
माधवसुत माधव सदृश, प्रिय नथुरामहुके पत्नी,  
हरमंदिरको हरखतें, खात मुरत किय धर रती ॥११॥

## ॥ कवित्त ॥

विधविध वाद्य वर वाजत वनारसमें,  
शृंगी भृंगी एकदन्त मुदित भये दराज ॥  
कविं नथुराम कियो ताण्डव त्रिलोचननैं,  
आये मुनि नारदजी श्रवन सुनी अवाज ॥  
पूछत भये है कहा कारन अनंदको ये,  
ताहिं समे ताकों यह कहत सर्वें समाज ॥  
भाव भुविपाल पोर पुरमें पवित्र शिव,—  
आलयको खात म्हूर्त्त करत अनूप आज ॥१२॥

(आशीर्वाद.)

शिरकों नमाय रहो अरि तुव पायनमें,  
 परम प्रतापवान तो समान फिरको ॥  
 कवि नथुराम होहु जयको निवास नित्य,  
 हरीकें गरीबनको चिन्ताज्वर चिरको ॥  
 दानी निरमानी ग्यानी विविध विधानीवीर,  
 पोर धराधीश अंश तूहै गंगधरको ॥  
 भूपवर भावसिंह सुरतरुरूप होहु,  
 हरको कलीत कर तेरो ताज शिरको ॥ १३ ॥

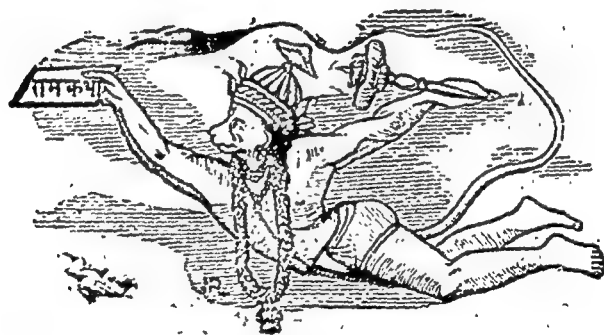
साहिबी सुरेशकैसी पाय पुहुमीपै नित्य,  
 चलित न चित्त जाको कलित करेहे कर्म ॥  
 कवि नथुराम ज्येष्ठ वंश अवतंस श्रेष्ठ,  
 धारतहै धीरवर धवल धरापै धर्म ॥  
 स्नेहसों करत खात मुरत शिवालयको,  
 माधवको नंद सब जानत महान मर्म ॥  
 पोर पतशाह भावसिंह भूपतीके नीके,  
 करहु शिवाकेपाति शङ्कर सदैव शर्म ॥ १४ ॥

कर्न सम दानमें त्यों प्रवीन कलानमेंजु,  
 सिंह सम सबल विसेख्यो कुल मानमें ॥  
 ज्ञानको निधान देख्यो खूब मन ख्याल करी,  
 भोज महिपाल सम आज गुनजानमें ॥  
 कवि नथुराम वरडेश भावसिंह भूप,  
 राजत अनूपरूप भूपति महानमें ॥  
 रिपुकुल काल पोरबंदर नरेन्द्र वीर,  
 जीवो चिरकाल वाल सहित जहानमें ॥ ॥९५॥

मंजुल निकुंजमें ललितादी सखीसों कह्यो,  
 चौरी खेलिवेकी चाह चितमें हमारेहै ॥  
 कवि नथुराम यातें एककी मुंदाय आंख,  
 और दुरी दोर ठोर ठोर वषु धारेहै ॥  
 आप तरु जालमें भुलाय नववाल संग,  
 लुपन बताय तन लुवन विचारेहै ॥  
 भारे भारे भूपनके रूप भावसिंह राना,  
 ऐसे राधारमन तिहारे रछवारेहै ॥ ॥ ९६ ॥

## ॥ छप्पय ॥

जव लगि रविकर तिमिर, नाश करते रहै भू'पर,  
 जव लगि शशिकर शीत, अधम आतपके ऊपर;  
 जव लगि हर धर रहे, ध्यान हरिको निज अंतर,  
 जव लगि हरि हरहुको, ध्यान धरि रहे निरंतर;  
 भावसिंह भूपाल तुम, प्रवल पोरवंदर पती,  
 अचल रहो अचला मधी, तव लगि कर शुभ यश सुकृति. ॥९७॥



॥ संपूर्ण : प्रथमविभाग : ॥

॥ श्रीः ॥

# भावसुयशवाटिका.

द्वितीय भाग-गुर्जर काव्य.

छन्द हरिगीत.

छे पुहुमि पीठपरें पराक्रमौ जपर जहिर जेठवा,  
शुभ काम धारी काम जनहितनां करे नित नित नवां;  
तुं आप धन्यरं ओहने आरोग्यता सह व्रतति,  
भयहरण भाव छेवे जुगो जुग पोरअंदरनो पति. १.

कविभां करणु सम कोउथी हरिया वहावे दानना,  
जपर जपेछे जप गुणौगुणु गर्वथी गुणुगानना;  
कवि पंडितोने पाणतां रसवंत नित राणी रती,  
भयहरण भाव छेवे जुगो जुग पोरअंदरनो पति. २.



બહોં રીત ભોજ સમાન જેણે ભાવ વિધાપર બયોં,  
સાક્ષર તણા સમુદાયનો ચિત ત્યાવ સ્થિર ચૈને કર્યોં;  
ઉત્તમ કૃતિ મોટી મતિ ખલવૃન્દને આપે ક્ષતિ,  
ભયહરણુ ભાવ હૈવે જુગો જુગ પોરખંદરનો પતિ. ૩.

છે સમરસિંહ સમો સમરમાં શુદ્ધ શર સુહામણો,  
બરપૂર વીરરસેં બયોં સુનિધાન છે સદ્ગુણ તણો;  
બોધ્યા વિના કરોંને બતાવે કામ દામ દઈ અતિ,  
ભયહરણુ ભાવ હૈવે જુગો જુગ પોરખંદરનો પતિ. ૪.

પૂરી કરેછે પ્રેમથી કોડો જનોની કામના,  
અનમી અચલ દ્રઢ ઉર કરી નવલી વધારે નામના;  
ગંભીર ધીર અમીર અંતર અમિત મુદપ્રદ આકૃતિ,  
ભયહરણુ ભાવ હૈવે જુગો જુગ પોરખંદરનો પતિ. ૫.

હરિચંદ્ર પેઠે હાલ જેને મુખ નકાર મળે નહીં,  
ભાગે તણને માનતો મુખ શત્રુને પણ દે સહી;  
દૈવી દયા દિલમાં વસી સતયુગમહી જે શોભતી,  
ભયહરણુ ભાવ હૈવે જુગો જુગ પોરખંદરનો પતિ. ૬.

પૂરણ પ્રતાપ સમી પ્રતિજ્ઞા પાળવામાં પ્રેમછે,  
જલિમ નરોનાં જોર નિત્યેં જાળવાનું નેમ છે;  
દિગ્અન્ત સૂધી અંતયા કીરતિ કલિત કીધી હતી,  
ભયહરણુ ભાવ હૈવે જુગો જુગ પોરખંદરનો પતિ. ૭.

વિક્રમસમો વરદાષ્ટ કષ્ટ વિદારવાના કામનો,  
રે'અચલ અવનીપર અહોનિશ નાથ કવિ નથુરામનો;  
એ શુદ્ધ મનથી સર્વદા આશીર્વચન આપું અતિ,  
ભયહરણ ભાવ જીવે જુગો જુગ પોરખ'દરનો પતિ. ૮.

## નવિન વર્ષ મુખ્યારક.

રોજા વૃત્ત.

પોરખ'દરના પ્રવિણ, રાજ રાણા રસમૂરતિ,  
દેવ સમા દાતાર, બની શોભાવો સુરતિ;  
ખુદ્દો થાને ખચિત, ધરે મુકતાનો ખાજો,  
નવિન વર્ષમાં ભાવ, ભૂપ નવલાં સુખ ન્યાજો. ૯.

અષ્ટ સિદ્ધિ નવ નિદ્ધિ, વાસ લુવને નિત વસજો,  
મંગલ મોદ સમેત, હરોજ હસાવી હસજો;  
વિવિધ વિહારોમહી, અધિક આનંદ ઉછાજો,  
નવિન વર્ષમાં ભાવ, ભૂપ નવલાં સુખ ન્યાજો. ૧૦.

દન્દ્ર સમો અધિધર, આપ ભોગવજો ભૂ'માં,  
અચલ પાટપર પાય, અચલતા જેની ધૂમાં;  
બહુ બળથી બહાદુર, બેઠમાનીને બાજો,  
નવિન વર્ષમાં ભાવ, ભૂપ નવલાં સુખ ન્યાજો. ૧૧.

વિજયી કરમાં રહે, અચલ દ્રઢ તેગ ચમકતી,  
મુગટ મણીની પ્રભા, દશે દિશ રહે દમકતી;  
ખળ ખઘોતો તણાં, તેજ તૃણ પેઠે ટાળો,  
નવિન વર્ષમાં ભાવ, ભૂપ નવલાં સુખ ન્યાળો. ૧૨.

અભિનવ ગામ ગરાસ, મહદ ખળથી મેળવજો,  
પ્રથુ પેઠે પ્રતિદિવસ, કલિત પૃથ્વી કેળવજો;  
ધરી શત્રુ શિર પાય, વૈર પૂર્વજનું વાળો,  
નવિન વર્ષમાં ભાવ, ભૂપ નવલાં સુખ ન્યાળો. ૧૩.

પરમ ધર્મની પાજ, ખાંધો જશ જગમાં લેજો,  
સંતોને સંતોષ, દુઃખ દુષ્ટોને દેજો;  
દેખાડો દિગ અન્ત, લગી કીર્તિ દ્રુમ ડાળો,  
નવિન વર્ષમાં ભાવ, ભૂપ નવલાં સુખ ન્યાળો. ૧૪

રાજકાજમાં રસિક, રૂપ રચાસત રસવાળી,  
દિવ્ય રાજ્ય ગૃહમાહિં, સદા દેખાઓ દિવાળી;  
સુગલખોરને ચિત્ત, જગવજો જળરી જનાળો,  
નવિન વર્ષમાં ભાવ, ભૂપ નવલાં સુખ ન્યાળો. ૧૫

કોટિ વર્ષ કમનીય, છત્ર શિર હેપર ધરજો,  
પ્રખળ જયેષ્ઠ કુળ શ્રેષ્ઠ, બિરદ સુવિકાશિત કરજો;  
કવિ નથુનો કર સાહો, ગ્રેમ ધરોને નિત પાળો,  
નવિન વર્ષમાં ભાવ, ભૂપ નવલાં સુખ ન્યાળો. ૧૬

છન્દ હરિગીત.

મહિપાલ મહિમંડલમહો રાજે મહિપની માજ યૈ,  
દ્રઢ ધર્મ ધરણીમાં ધરો, પ્રીતે ધરમની પાજ યૈ;  
પ્રતિદિન પરમ આનંદમાં રહો પોરખંદરના પતિ,  
તૃપ ભાવ નૂતન વર્ષમાં નૂતન લિઓ સુખસંપતિ. ૧૭

નવ નિદ્ધિ સિદ્ધિ અષ્ટ ભુવને ભાવથી વાસો વસે,  
વરસે કૃપા દ્રષ્ટિ કરી કુલદેવ નિત અમૃત રસે;  
શત વર્ષ શોભો હર્ષમાં ઉત્તમ નિરોગી આકૃતિ,  
તૃપ ભાવ નૂતન વર્ષમાં નૂતન લિઓ સુખ સંપતિ. ૧૮

મનમાં વસો મનહરણુ સુદ મહતા ભયો મમતા થકી,  
તનમાં વસો ધરો તંત શાન્તિ કાન્તિ નેહ થકી નકી;  
અમૃત વસો દ્વય આંખમાં આનંદ ધારીને અતિ,  
તૃપ ભાવ નૂતન વર્ષમાં નૂતન લિઓ સુખ સંપતિ. ૧૯

રસવંત તૃપની રાજિમાં રાજે રસીલા રાજ યૈ;  
અરિ અંત આણ્યો ગહંત શોભો સર્વના શિરતાજ યૈ;  
કવિ કોવિદોના સુખ થકી ક્ષિતિમાં કરો કીર્તિ છતી,  
તૃપ ભાવ નૂતન વર્ષમાં નૂતન લિઓ સુખ સંપતિ. ૨૦

વાજે વિજયનાં વાઘ વસુધામાંહિ સહુકોથી વડાં,  
કરજો પ્રતાપ તણા પ્રબલ ખાંતે ઘણા યોદ્ધા ખગ;  
ખલ અંધકાર નિવારવા રાખો હરે રાણ! રતી,  
તૃપ ભાવ નૂતન વર્ષમાં નૂતન લિઓ સુખ સંપતિ. ૨૧

નિશિઘોસ મંગળધોષથી ગહરાં રહો ગૃહ ગાજતાં,  
 સુવિશાલ બંધનમાલથી, રહો રોજ દ્વારો રાજતાં;  
 રહો ફરકતા જય ધ્વજ પતાકા, પ્રતિદિને ગૃહ ગૃહ પ્રતિ.  
 તપ ભાવ નૂતન વર્ષમાં નૂતન લિઓ સુખ સંપત્તિ. ૨૨

રંગોલિથી રંગેલ આંગણ અતિ રહો નિત આપતાં,  
 ચંદ્રક સુતીના ચાર ચોક રહો શશીધુતિ લોપતા;  
 ઇન્દ્રાણી જેવી રાણિઓ શોભો જીવનમાંહી સતી,  
 તપ ભાવ નૂતન વર્ષમાં નૂતન લિઓ સુખ સંપત્તિ. ૨૩

ધર સુત્ર પુત્ર પ્રભા બરું સુપત્રિત શોભો સર્વથી,  
 શિર છત્ર ધારી અત્ર સિંહ સમાન ગાળે ગર્વથી;  
 નયુરામ દેવિના નાથ પામે ઇન્દ્ર જેવી ઉન્નતિ,  
 તપ ભાવ નૂતન વર્ષમાં નૂતન લિઓ સુખ સંપત્તિ. ૨૪

### શાર્દૂલવિકીરિત છન્દ.

મારો અર્થ સુખે રહી સુજનના, રાણા કુળે છો રવિ,  
 દીર્ઘાયુ સુતસંગ રંગરસમાં, રાજ રહો રાજવી;  
 માણો મોજ મજા વિવિધ મુદથી, ઉદ્યોગ આરામની,  
 આ આશીશનવીન વર્ષમહિંછે, નિત્યે નયુરામની. ૨૫

ગાળો વખત તમામ ભાવ નૃપતિ, આનંદ ઉવાનમાં,  
ખ્યાતી ખૂબ કરી ખરી ખલકમાં, ગાયે ગુણી ગાનમાં;  
પાળો પ્રેમ ધરી પ્રજા ગણ સદા, રાખી પ્રથા રામની,  
આ આશીશ નવીન વર્ષમહિં છે, નિત્યે નયુરામની. ૨૬

વાળે વાઘ નવાં નવાં વિજયનાં, ખાસાં નવે ખંડમાં,  
શત્રુ વર્ગ સમગ્ર વ્યથ ખનોંતે, દાડી રહો દંડમાં ;  
ગાયે મંગલગીત પ્રીત ધરોંતે, ગોરી સહુ ગામની,  
આ આશીશ નવીન વર્ષમહિં છે, નિત્યે નયુરામની ૨૭

કીર્તિવંત કુખેર તુલ્ય ધનના, ભંડાર ઝાઝા ભરે,  
બહાલે દાન દઈ નવીન ગુણોના, સંકષ્ટ સર્વે હરે ;  
ધીરા ધર્મ સુકર્મના પ્રબળથી, રક્ષા કરે ધામની,  
આ આશીશ નવીન વર્ષમહિં છે, નિત્યે નયુરામની ૨૮

સારાં કાર્યે નવીન નિલ કરથી, કોડે રસીલા કરે,  
રંગીલા નૃપ રાજ્ય લક્ષ્મી નવલી, વેગે તમેતે વરે ;  
પામે સિદ્ધિ પવિત્ર હેત ધરોંતે, હૈયા તણી હામની,  
આ આશીશ નવીન વર્ષમહિં છે, નિત્યે નયુરામની ૨૯

ભાળો કામિનો ભાવથી ભુવનમાં, કાન્તિ રડી કામની,  
માળા મોદધરી જપો નૃપતિ આ, ભાવેશના નામની ;  
સેવા સર્વ કરે વિશુદ્ધિલથી, શ્રી પોતના સ્થામની,  
આવી આશ નવીન વર્ષમહિં છે, નિત્યે નયુરામની ૩૦

આપો આશીશ રાજકીય જન સૌ, “ભાવેશ છવો ધણું,”  
 ધમ્મો શ્રેય સદૈવ અન્તરવિષે શ્રી અન્નદાતા તણું ;  
 હેતે સર્વ હલાલ નિમક કરો, દૂરે તૃપા દમની,  
 આવી આશ નવીન વર્ષમહિ છે, નિત્યે નયુરામની ૩૧

જેઠી વંશ વિષે જવાંમરદ શ્રી રાણા તણા રાજમાં,  
 હંમેશી હરવખ્ત હાજર રહો, કીર્તિ બધીં કાજમાં  
 આખાદી પુરની કરો જન સહ, જાગી દિવા જામની,  
 આવી આશ નવીન વર્ષમહિ છે નિત્યે નયુરામની ૩૨

### મનહુર છંદ.

જેવા ધામધૂમ આજ થતી પોરખંદરમાં,  
 સુરના સમૂહ તંબૂ અંબરમાં તાણે છે.  
 રાણાની અલૌકિક ઉદારતા અપાર તેમ,  
 રૈયતપરેની રેમ અન્તરમાં આણે છે.  
 કહે નયુરામ પાત્રી વિરમ્ય તમામ સહાં,  
 વિશ્વપરે વિશ્વકર્મા જેઠવાને જાણે છે.  
 ઉદ્યોગી જનોને અતિ ઉત્તેજન આપવાથી,  
 વિવિધ વડાઈ ભાવ ભૂપતી વખાણે છે. ૩૩

આ કવિતા ઉદ્યોગીખાતામાં અમૂલ્ય ઉત્તેજન આપતી વખત કરેલી છે.

સાગર સમાન દિલ નાગર નરેશતણું,  
 હઠેછે તરંગ દિનરાત જેમાં દાનના.  
 કહે નથુરામ કીર્તિ વરણ વિશેષ થતાં,  
 આવીને મળેછે નદીવૃન્દ નિત માનના.  
 આગળોટ જેમાં અતિ ઉત્તમ વિચારો તણી,  
 ખારે માસ આલ્સતીછે આવે ના ખયાનમાં.  
 પોરના પવિત્ર ભાવસિંહ ભૂપતિને પ્રભુ,  
 આપો સુખ અરજ અમારી ધરી ધ્યાનમાં ૩૪

ભાવસિંહ ભૂપતિને ભૂમીપર બાળ્યા છતાં,  
 ગાળ ગાળ વારિધિ ગુમાન વૃથા ધારેછે.  
 તારછ કયાં કહે તારા આશ્રિત તમામને તું,  
 આતો સર્વ આશ્રિતને તાંતધરી તારેછે.  
 તાં જળ પુષ્કળ ના આવે ઉપયોગમહીં,  
 આતું દ્રવ્ય અર્થ સારા અવનીમાં સારેછે.  
 કહે નથુરામ રહે હૃદમાં હરોજ તું તો,  
 જેઠવાનો જશ તો દિગ્ગતે દોટ મારેછે. ૩૫

(વિજયા દશમી પ્રસંગે કરેલી કવિતાઓ.)

ત્રેમ પુષ્પઅંજલીથી સુખદ્વિશમીનું શાણા,  
 પૂજન પવિત્ર કરો સુધર્મને સ્થાપવા.  
 મહા સુવિચારશસ્ત્ર મોદથી ગ્રહી લ્યો મોટાં,  
 આપોને અભય નથુરામ નિલ આપવા.



સખવટ સારી કરો દ્રઢતા સરાણે તેની,  
અધમઅરિને અવનીયકી ઉચાપવા,  
રાણા ભાવસિંહ આપ અર્જુન સમાન જની,  
કૂર જન કૌરવોને માંડો કાઠે કાપવા.

૩૬

વિજયા દશમીં ફેરી સાળને સવારી દિવ્ય,  
અધિક ઉમંગ વરતાવો વાટ ઘાટપર.  
હયપર હાથીપર સાથીસંગ રંગ ભર્યા,  
શોભો ચલાવીને સેના દુષ્ટાતણા ઘાટપર.  
નિત્ય નથુરામ હરી ઉત્તમ તણા ઉચાટ,  
હેતથી હમેશ હોંચો ખાસી હેમ ખાટપર.  
દાની ભાવ ભૂપ રહો સુચિર બિરાજમાન,  
પરમ પ્રતાપી પોરખંદરના પાટપર.

૩૭

સાળ સર્વ સાજ મહારાજ ગજરાજપર,  
વાસવ સમાન શોભા પ્રતિદિન પામજો.  
વિજયા વિશેષ જની ભાવ ભૂપ ભૂતલમાં,  
સાધી સુખ નિત્ય નથુરામ વ્યાધિ વામજો.  
રાણા કુળ રત્ન જોયા જોઈવામાં જોરદાર,  
અમિત ઉદાર અવનીમાં અભિરામજો.  
નામ જોતાં વ્યાધ્યુંછે અખંડ નવખંડમાંહી,  
તોપણ જશેથી આઝા જગતમાંહી જામજો.

૩૮

જ્યાં લગી પતંગ રહે અખરે પ્રકાશમાન,  
ત્યાં લગી પ્રતાપતાપે અરિને તપાવજો.  
નીતિવાળા નરોત્ત્વ જેઠવા જમાવી જોર,  
વિષ્ણુ વધારી ખાંતે ખળને અપાવજો,  
અખત યુદ્ધ બાવ બરડા તખતપર,  
નિત્ય નથુરામ મંત્ર જશના જપાવજો.  
ઉત્તમ અનેક ટેક પાળીને વિવેકવંત,  
છાંયાપતિ છાપ છત્રધારીમાં છપાવજો.

૩૯

### છન્દ મહિદીપ.

વિવિધ વિજય વિશ્વમાં હુપાલ બાવ પામો,  
પોરના પ્રતાપો રાજ વ્યાધિ સર્વ વામો.....ટેક.  
ચાર ચન્દ્રના સમાન શાન્તિ કાન્તિ સાઓ,  
ત્રેમો પોયણા ખિલાવો ગીતમાં ગવાઓ.....વિવિધ.  
રવિ સમાન રોજ પૂર્ણ તેજ પામો પ્યારા,  
નિર્બળ નરરાજ કરો પાપો તિમિર તારા.....વિવિધ.  
કોવિદ કવિ કમળતા તમામ કષ્ટ કાપો,  
ચતુર ચક્રવાકને અનંત સુખ આપો.....વિવિધ.  
હલ ગેલ ગેલમાં પ્રતાપ છાપ છાપો,  
સુજશ શંકુઓથી ભૂપ મહિ સમગ્ર માપો...વિવિધ.

જ્યેષ્ઠ શ્રેષ્ઠ જોધને જરૂર સંગ રાખો,  
 અનહદ રસ આનંદનો ચતુર નિલ ચાખો.....વિવિધ.  
 નિત કવિ નથુરામને મળેછે મિષ્ટ મેવા,  
 હરિ હરોજ સોંપજો સનેહ ધારો સેવા.....વિવિધ. ૪૦

## રક્ષા કવચ.

દાહરા.

અજ પ્રભુ પગની અહરનિશ, ગોઠણની અણિમાન;  
 યશ ઉરે અચ્યુત કટિ, હયગ્રિવ ઉદર મહાન. ૪૧

કરુણાળુ કેશવ હૃદય, વક્ષઃસ્થલની ઈશ;  
 ઇન્દ્ર કંઠ વિષ્ણુભુજ, ઉર કમ મુખ પ્રશ શીશ. ૪૨

અકૃષ્ણ આગળ રહે, ગદાધરણુ પ્રભુ પ્રષ્ટ;  
 ધનુષધરણુ ને ખડ્ગધર, ઉભય પાર્શ્વ અર્મોવૃષ્ટ. ૪૩

શંખધરણુ ઉર ગામ પ્રભુ, રહો ચતુર્દિશ રોજ;  
 ઊપર રહો ઉપેન્દ્ર પ્રભુ, હેઠળ તાક્ષ્ય હરોજ. ૪૪

હનુધર દશ દિશમાં રહે, પ્રશ્નિગર્ભ ધી ધામ;  
 પર પ્રભુ પરમાનંદની, ગમતે ગોવિંદ સ્યામ. ૪૫

- સૂતાં માધવ ચાલતાં, વૈકુંઠાધિપ દેવ;  
રમાપતિ રમતાં અને, જમતાં યમ સદૈવ. ૪૬
- ક્ષણ પ્રતિક્ષણ એ દેવતા, મનમાં આણી મોજ;  
કુંવર સહિત નૃપ ભાવની, રક્ષા કરજો રોજ. ૪૭
- કવચ કર્યું કોડે કરી, શ્યામ ધર્મ સુખધામ;  
આશિષ દે આનંદથી, નિત નિત નથૂરામ. ૪૮

સોરઠા.

- નેક ટેકમાં એક, નૃપ અનેક કરતાં અધિક ;  
વડપણુધરણુ વિવેક, અચલ ભાવ ભૂપતિ રહો.....૪૯
- સુંદર સુમતિ અગાર, મન મહંત નદ મદ રહિત ;  
વિનયી વિવિધ વિચાર, અચલ ભાવ ભૂપતિ રહો...૫૦
- પરમ ધરમ ધરનાર, શરમ નિભાવણુ સર્વત્રી ;  
જળર કરી જયકાર, અચલ ભાવ ભૂપતિ રહો.....૫૧
- સુયશ વધારણુ વીર, વસુધાતલમાંહીં વડો ;  
આનંદી અતિ ધીર, અચલ ભાવ ભૂપતિ રહો.....૫૨
- દેવાંશી દાતાર, ભોજ સમે ભૂતલમાંહીં ;  
તેજ દાન તરવાર, અચલ ભાવ ભૂપતિ રહો.....૫૩

સસ વચન વદનાર, સસ પ્રીતિ રીતિ સુયશ ;  
 સસ મૂર્તિ સુખદાર, અચલ ભાવ ભૂપતિ રહો.....૫૪

અરિ ઠરાલનો કાલ, વિજયમાંલ સુવિશાલ ઉર ;  
 કવિ પંડિત પ્રતિપાલ, અચલ ભાવ ભૂપતિ રહો.....૫૫

માધવ પુત્ર પવિત્ર, સુભગ ચિત્ર ચતુરાધનું ;  
 મહદ પોરનમ મિત્ર, અચલ ભાવ ભૂપતિ રહો.....૫૬

પ્રિય પ્રભાતમાં નામ, સમરણ કરવાનું સરસ ;  
 નિત નિત કવિ નયુરામ, અચલ ભાવ ભૂપતિ રહો...૫૭

### દોહરા.

વિવિધ વિભવ લ્યો વિશ્વમાં, ધારી હર્ષ હમેશ;  
 ઇન્દ્ર બનો અવનીતણા, બળધારી બરડેશ.....૫૮

કામ કરો કીર્તિ ભર્યા, દેશ અને પરદેશ ;  
 વિજયી વસુધામાં બનો, બળધારી બરડેશ.....૫૯

મરત કરી ગુણો મધુપગણ, છોડો દેશ વિદેશ ;  
 કરો દંડ જગ ગુંજમય, બળધારી બરડેશ.....૬૦

જ્યાં લગો વિધિ હરિહર રહે, જ્યાં લગા રહે દિનેશ ;  
 ત્યાં લગો આપ રહો અમર, બળધારી બરડેશ.....૬૧

પ્રખળ પ્રેમના નેમમાં, નિત નથુરામ નરેશ;

ક્ષેમ રહેા ખાંતે કરી, ખળધારી ખરડેશ.....૬૨

### લાવણી.

(નાબુક પુતલી રતન છખીલી...એ...રાહ. ધુન લૈરવી.)

ગુર્ણોગણુ જેના ગુણને ગણતા, લલિત ગિરા રસ ગૌરવથી ;

ખંદી ખિરદ ઉચારે જેનાં, આનંદે ઉચા રવથી ;

કવિ કથિત કવિતાના કથનો, ભવ્ય ભુવનને ભરનારાં ;

ભાવસિંહ બૂપાલ ખિરાળે, પોરખંદરના પ્રભુ ખ્યારા.

રંગિત સંગીતમાં ખર્નો રૂઝ, લાયક ગાયક ગાઇ રહ્યા ;

મધુરાસ્વરની મનહરનારી, છટા છખીલી છાઈ રહ્યા ;

ગમકમિશ્ર કંઠસ્થ તાનના, લલિત યાયછે લલકારા;

ભાવસિંહ બૂપાલ ખિરાળે, પોરખંદરના પ્રભુ ખ્યારા.

મનરંજનો કંચનો મુદધારી, નૃત્ય કરે નવયૌવનમાં ;

અંગતણા અભિનય અભિનવ કરો, મુદ ભરતી સહુના મનમાં;

ઉત્તમ લાસ્યતણા દશ અંગે, નાયતી ભેદ કરી ન્યારા ;

ભાવસિંહ બૂપાલ ખિરાળે, પોરખંદરના પ્રભુ ખ્યારા.

રતનજડિત સિંહાસન બિયર, આપ ખિરાળે આનંદથી;

દેવસંભાસમ ન્યાં દેખાયે, સર્વ સંભાસદ વિણ મદથી ;

કોટિ વર્ષ કરો રાજ સુખે, નથુરામ ભવ્ય સુખ ભરનારા ;

ભાવસિંહ બૂપાલ ખિરાળે, પોરખંદરના પ્રભુ ખ્યારા...૬૩

રાગ માઠ.

(મમ ધ્યારી પ્રેમદા.....એ...રાહ.)

છત્રધારી ભાવ ભુપાલ.

છટાથી છાજે પોરખંદરને પાટ (૨)

તપધારી, અવતારી, સુખકારી, છત્રધારી.....—ટેક.

રવિ પેઠે રસવંતો રાણો, નિત પ્રસરાવે નૂર ;

અધમ ઉલૂકની આંખમાં ભરે, ભાવે તિમિર ભરપૂર...તપધારી.

પળમાં દૂર કરે પણુ ધારી, ખળ તારાનું તેજ ;

અન્યપ્રકાશી ઉડુગણુ અંગે, દ્વિગુણી પ્રીઝાષ્ટ દેજ...તપધારી.

કુડાં જન કુવલય કરમાવે, જળર ધરી કર જોર;

સંત સરોહને ખીલાવી, છોડાવે રસ ચોર... તપધારી.

જેઠવો ભૂપ જુગોજુગ જીવે, નૌતમ ધારી નાગ;

આશિષો આપેછે અગણિત, નેહધરી નથુરામ.... તપધારી...૬૪

માઠ

(નમી માધવશ્યો નર ક્રોધ વિલોક્યો...એ...રાહ.)

રાજો રસિક શિરોમણિરાજ, (૨) પ્રભુ નથુરામના આરાધે; (૨)

ભાવ ભૂપતિ દાની દરાજ, (૨) અમારી આંખોના તારાધે. (૨)...ટેક.

ચતુર ચિત્ત ચંચલમાથે, વસી રહો વાસ સદાયે; (૨)

ધરી તેજ ભયો શિરતાજ. (૨).....પ્રભુ  
કલિતઃખી કામલુગારી, ન આહીયે નેલુથી ન્યારી; (૨)  
રાખું આજેખી અંતરમાંજ. (૨) ..... પ્રભુ.  
મારા મન સાગર માથે, હરી તમે હેતથી હાથે; (૨)  
પ્રાદી ખાંધીછે પ્રીતિની પાજ. (૨).....પ્રભુ.  
લગતી મારી આપથી લાગી, જોતિ સાચા પ્રેમની જાગી; (૨)  
એ નિભાવજો નુકતેનિવાજ. (૨) .....પ્રભુ. ૬૫

### લાવણી.

(મુજ ઉપર ગુજરી પિતા પાતશા જાણી...એ...રાહ.)

મહારાજ ભાવ ગુણજન, આજ અવતારી ;  
કરે અવિચલ રાણો રાજ, તાજ શિર ધારી.....ટેક.

છે મહદ હિન્દુની માજ, રાજ રણુ ધીરો;  
એ દુઃખહર દાનો દરાજ, હિન્દનો હીરો.....મહારાજ.

પર ભય ભંજન કરવામાં, વિક્રમ પૂરો;  
છે સલ નિભાવા કાજ, સર્વથી શૂરો.....મહારાજ.

છે નેક ટેકમાં એકજ, પ્રતાપ એતો;  
શૂરવિર સમરમાં સમર, સમા ગુણ દેતો.....મહારાજ.



ખળ વાદળના દળ પળમાં ધરે ખસેડી;  
કરે અમલ રાજ્યનભ ફેંદો કૃતુરી ફેડી.....મહારાજ.

દિગઅન્તલગી દુનિયામાં કીરતિ કીધી;  
જગમાંહી જખરી છત જશેથી લીધી.....મહારાજ.

નિતનિત આશિષ નથુરામ દિએછે નેહું;  
આરોગ્ય અમારો શ્યામ રહે નિજ દેહું.....મહારાજ. ૬૬

### લાવણી.

(રાહ ઉપર પ્રમાણે.)

પ્રિય પોરઅંદરના પતિ, મહિપમાં મોટા;  
ખોજીને કરે ખળવૃન્દ, ખલકથી ખોટા;  
અવનીપર એ છે આજ, અમર અવતારી;  
જુગ જુગ હવે જશધરી, બાવ ભયહારી.  
રાણા કુળમાં રવિરૂપ, પ્રકાશી પૂરા ;  
અરિ અંધકાર હરનાર, સમરમાં શરા;  
જનઅધમ ઉડુની બ્યોત કરે નિત ન્યારી ;  
જુગ જુગ હવે જશધરી, બાવ ભયહારી.  
દેખત દુનિયામાં દેવ, સગા છે દાની;  
વરદાયી વિક્રમતુલ્ય, વૃષ્ટિ નિરમાની;  
કરે ઝોછો અવનીબાર, મદન્યો મારી;

જુગ જુગ હવે જશધરી, ભાવ ભયહારી.  
 આનંદી અભિનવ રૂપ અનૂપમ એછે;  
 ભૂમીપર પ્રગટયા ભોજ, કવિ સહુ કહે;  
 એ સસમૂર્તિએ સદાચારો મુવિચારી;  
 જુગ જુગ હવે જશધરી, ભાવ ભયહારી.  
 દિન દિન છે દીનજનોના, દુઃખ હરનારા;  
 ગોદિજ સાધુને સદા, સુખ કરનારા;  
 સહુ કપટોંકુટિલને, અખિધ પાર હેતારી;  
 જુગ જુગ હવે જશધરી, ભાવ ભયહારી.  
 સ્નેહોંને શશી બનોં સઘ, શાન્તિ દેનારા;  
 લાખો જનની આશીશ, લલિત લેનારા;  
 છે પ્રજા તણા પ્રતિપાલ, વિજયદંવજ ધારી;  
 જુગ જુગ હવે જશધરી, ભાવ ભયહારી.  
 એ અનાથજનને, અભયદાન આપેછે;  
 દુઃખિયાંના દુઃખને, કોડ ધરી કાપેછે;  
 જેના જાહિર જશ જાપ, જગતમાં જારી;  
 જુગ જુગ હવે જશધરી, ભાવ ભયહારી.  
 અવનીપર અવિચલ રહે, અમિત આરામે;  
 આપી નેહોં આશીશ, કવિ નથુરામે;  
 રસસાગર પુદ્ધિભગરપર, જઈ વારી;  
 જુગ જુગ હવે જશધરી, ભાવ ભયહારી.....૬૭

ગજલ.

(સજનકી બાગમેં જાતી...એ...રાહ.)

બલા નૃપ ભાવના ઉરને, કવિ દરિયા કહાવેછે;  
મહદ નિત મોજનાં મોજાં, મહારાણાને આવેછે.....ટેક.

સસ્ય શિરોમણિ શોભતા, કરી કીર્તિનાં કાળ;  
ક્ષત્રીકુળ ભૂપણુમણી, દેવી દાનોદરાજ.  
રસિક નૃપ રેલ નાણાની, વસુધામાં વહાવેછે.....બલા.

નૃપ શિર મુગટ મણી બણી, બહાદુર બરડાનાથ;  
કવિ ગુણોના દુઃખ કાપવા, ધરે દાનશર હાથ.  
ધણા કલહંસ કીર્તિના અવનિમાંહી ઉડાવેછે.....બલા.

રંકલોહ કંચન કરે, પારસમણિ બણો પૂર્ણ;  
ભૂપત્યકચૂડામણી, કરે દીન દુઃખ ચૂર્ણ.  
પ્રબળ પાજે ધરમ કેરી, ધરામાંહી ધરાવેછે.....બલા.

રાજતિલકમણિ રાજતા, પોરબંદરને પાટ;  
ચતુરશિરોમણિ ચિત્તમાં, ઘડે દયાના ઘાટ.  
ફકીરોને અમીરીની, મજા બળિયા બતાવેછે.....બલા.

સંત સરોહનાં હરે, દિનમણિ બણોને દુઃખ;  
ચતુર ચક્રાર ઉરેં બરે, શુભ નિશિમણિ બણિ સુખ.  
અમુલ્ય મણિ તુલ્ય એ આજે, સરવ નૃપમાં સુહાવેછે..બલા.

અખિલમણીના ઝોધ સમ, પોરધણી સુખ ધામ;

નેત્રમણી નથુરામના, સુખ લે છાંયાશ્યામ.

જગતમાં જોરથી જોની, ગુણી ગુણુ ગાથ ગાવેછે, બલા....૬૮

### રાગ ધન્યાશ્રી, ત્રિતાલ.

શ્યામ રહો નિત સંગ, નૃપતિને શ્યામ રહો નિત સંગ...ટેક.

રક્ષા કરજો મહારાણીની, ઉરમાં આણી ઉમંગ.....નૃપતિને.

જ્યેષ્ઠ મહીપતિનાં સહુ કંટો, ભવપતિ કરજો ભંગ...નૃપતિને.

વિજયો કરો વસુધામાં વધતા, આરોગ્ય રાખી અંગ...નૃપતિને.

અરિ એના મહાવિપથી મારો, ગયના પ્રેરી ભુજંગ...નૃપતિને.

વિવિધ વિકાસ હરખ હુલ્લાસે, છતાવો જગ જંગ...નૃપતિને.

નિત નથુરામના નાયને રાખો, રમતા આનંદ રંગ....નૃપતિને. ૬૯

### હુમરી, ત્રિતાલ:

(મારું મન તુંથી લાગ્યું, નથી બીજે લગાર, એ...રાહ.)

દાની દુનીયામાં દેખ્યો, ભારે ભાવ ભુપાલ;

સુયશની સારી જોણે, મુદથી ધરી માલ.....ટેક.

કરણી પેઠે, કંચન કરધી; (૨)

અધિક ઉડાવી રહો, વિગતે ધરી વહાલ.....દાની.

જન્ય નિરાશ, જની નહિં યાચક; (૨)

નજરે પડ્યો તે નકી, થઇ જન્ય નિહાલ.....દાની.

કવિઓના કટને, નટ કરેછે; (૨)

છાંયા તણા છત્રપતિ, હરખ ધરી હાલ.....દાની.

દાન તરંગની, છોળથી છેલો; (૨)

ભીંજવેછે ભાવે, નથુરામનો પ્રતિપાલ.....દાની. ૭૦

### રાગ માહ—તાલ લાવણીનો.

(આનંદ આપો ઇશ્વરા અમરેશને.....એ.....રાહ.)

ભયહરજો સરવે ભૂધરા નૃપ ભાવના

અરે હાંહારે નૃપ ભાવના.....ભયહરજો.

વાળાં વિજયનાં વાગજોરે,

આરે દિશામાં યોગણા નૃપ ભાવના.....ભયહરજો.

પ્રખળ મયૂજો પ્રતાપનાંરે,

ભૂમજો નભમાંલી ધણા નૃપ ભાવના...ભય હરજો.

આનંદ સંગ આરોગ્યતારે,

આપો પતિ પદ્માતણા નૃપ ભાવના...ભય હરજો.

કવિ નથુરામ કોડે દરીરે,

વહાલથી લેછે વારણા નૃપ ભાવના...ભય હરજો. ૭૧

રાગ કાલીંગડા, તાલ દાદરો.

(સકલ જગ અસત્ય સત્ય એક રામહે...એ...રાહ.)

અચલ કરો રાજ્ય ભાવાસિંહ ભૂપતિ,  
ભોગવો સુરેન્દ્રના સમાન સંપતિ.....ટેક.

આર્યની કરો ઉદાર અધિક ઉન્નતિ,  
મેળવો મહીપ અવનિમાં સુકીરતિ.....અચલ.

ધન્વિરા અખૂટ રાજ્ય મંદિરે અતિ,  
વદનમાં વિરાજમાન છે સરસ્વતી.....અચલ.

ધરણીમાંહિ જ્યેષ્ઠ શ્રેષ્ઠ ધારતા ધૃતિ,  
નિરખું નયભર્યા નરેન્દ્ર રાખીને રવી...અચલ.

ઉચિત જોષને અનેક આપની કૃતિ,  
નયન થયાં સફળ ગુણ સુણી અને શ્રુતિ.અચલ.

સુખો રહો સદૈવ કરી સુજન સંગતી,  
સદય છો સુશીલવંત પોરના પતિ... અચલ.

છો અજનબાહુ ધીનિધાન નરપતિ,  
સર્વદા શચી સમાન સંગમાં સતી... અચલ.

સૂર્યના સમાન પ્રબળ પૂર્ણ આકૃતિ,  
નિત કરે નિવાસ વચનમાં બૃહસ્પતી...અચલ.

નૌતમ નથુરામ નિલ નામના છતી,

આપનું સદૈવ કરો શ્રેય શ્રીપતિ... અચલ. . ૭૨

રાગ માહ.

(આ શુ' બોલો આ શુ' બોલોરે...એ...રાહ.)

ઝાઝું છવો ઝાઝું છવોરે, જગતમાં ઝાઝું છવોરે;

નિકા પોરબંદરના નાય, સદા સુખ શાન્તિની સાથ...જગતમાં-ટેક.

પ્રીતિની રીતમાં ગૌરવ ગીતમાં, નિત નિત રાખો નેહ ;

આનંદ સાગરની છોળોથી, દાની ભીંજવો દેહ.....ઝાઝું.

છાંયાના છત્રપતિ સુખકારી, રાણા કુળના રૂપ;

જેઠવા કુળના વીર જોરાવર, આપ છો એક અનુપ...ઝાઝું.

રસભર રાજવી રમજો રંગે, સ્નેહી સંગે સદાય;

અહોનિશ આપ અધિક ઉમંગે, પાટ પરે ધરો પાય...ઝાઝું.

કવિ નથુરામના કંથ સલુણા, ભયહર ભાવ ભુપાલ;

આ દુનિયામાં અચલ રહો તમે, ધારી ઉરે જયમાલ. ઝાઝું. ૭૩

રાગ સીહાનો કાનરો.

આનંદ આનંદ આપો મુરારી,  
ભાવ ભુપાલના કંઈ વિદારી—ટેક.

અવિચલ રાજ કરે અવનીપર,  
મહદ અરિગણુને નિત મારી.....આનંદ.

પ્રેમ તણે સર ઝીલે પ્રતાપી.  
ખીલે કીરતિ કમળો સુખકારી.....આનંદ.

યશ કલહંસ દિગન્તમાં દોડે,  
હનુમત વંશ ધ્વજ કરધારી.....આનંદ.

પોરપતી રતીવંત રસીલો,  
કવિ નથુરામનો કંથ વિહારી.....આનંદ..૭૪

ગજલ બિહાગ.

(સ્વામી પ્રસન્ન રાખવા ધર્મ છે શરીર...એ...રાહ.)

સુખે બિરાજળો સદૈવ ભાવસિંહ ભૂપ,  
કરો અપાર મોજ રોજ રાજ વીર રૂપ—ટેક.

કૃપાલ હો નૃપાલ પોરના પતિ તમે,  
સદાય જ્યેષ્ઠ શ્રેષ્ઠ હો ક્ષીત કળાકૃપ.

સુખે.



વિશેષ દેશ દેશમાં વડાઈ વાઘથી,

જમાવૌં ધામધૂમ આજ વિશ્વમાં અનૂપ... સુખે.

કથે ગુણે કવિ ઘણા મણા નથી જરા,

મુણી રહેછે ચોર ચુગલખોર ચાપચૂપ... સુખે

પ્રતાપ બાનુ તુલ્ય નચુરામ નિરખોતે,

આરિ ઉડુ તમામ વેગથી યયા વિરૂપ... સુખે. ૭૫

રાગ ખીલુ, તાલ દિપચંદી.

(કહું શું નશીબે દુઃખીયો કીધો છે...એ...રાહ.)

સુંદરવર છો સુખ કરનારા, પોરપતી અતી પ્રાણથી પ્યારા—ટેક.

ખાવ ભુપાલ હવે ધણું જગમાં, નેણથી એક ધડી ન હો ન્યારા.સુંદર.

તમ કુળદેવી વિસોત કૃપાથી, ધીરા ધરે શિર અમૃત ધારા.....સુંદર.

બોજેશ્વર ભય હરશે તમારાં, નિશદિન સંગ રહી પતિ મારા...સુંદર.

હરમુત હરપ ધરી નિત હરશે, તંતથી વિઘ્ન તમામ તમારાં.....સુંદર.

દુઃખ હરશે ધન્વંતરી દેવા, ભાવે આરોગ્યપણું ભરનારા .....સુંદર.

નિત નચુરામ ખીલો જગ આગે, હેતે ખીલે જેમ પુષ્પ હજારા...સુંદર.

રાગ માઠ—તાલ ગજલ.

(શીતીછે મુદ્દગળ મારની, આ લોકને પરલોક...એ.રાહ.)

રીતીછે રાણા આપની, રજપૂતીયા રંગેલ;

નીતી તમારી નેહથી, ખલકેં બળવે ખેલ.....ટેક.

આપ અનૂપમ એકછો, એક તમારી ટેક;

હોય ભલે ઉપજે ભલે નૃપ, આ અવનીમાં અનેક. રીતીછે.

હનુમતવંશી ધૃશ્વરઅંશી, પોરતણા પતશાહ;

પેલે પાર ગઢ સમુંદરને, વેગેં તમારી વાહ.....રીતીછે.

કવિ નથુરામના કંથ સલુણા, ભયહર ભાવ ભુપાલ;

જુગ જુગ જીવે જોડવા તમે, વૈભવ લેતા વિશ્વાલ.રીતીછે. ૭૭

રાગ કાનરો—ત્રિતાલ.

જો જો સખી મનહર મારા, (૨)

મહાદાની નિરમાની નૌતમ, હાનોં સરવ હરનારા.....જો જો. ટેક.

ધર્મનોં ઢાલ ધરીછે જોજો, સલશસ્ત્ર સજનારા;

સર્વોત્તમતાના શૃંગારો, (૨) ભાવિકને બળનારા.....જો જો.

નિજજનને નેહથી નિરખે, ધરિ દ્રગ અમૃતધારા;

મૃતક જીવાડોં લિચો નૃપ મોજ, (૨) પોરઅંદરના પ્યારા...જો જો.

ભાવ ભુપાલ માલ મુદનીછે, પ્રેમ તરના ક્યારા;

કલ્પતર નથુરામ કવિનું, (૨) સહુ દિન સુખ કરનારા...જો જો. ૭૮

## રાગ આશાવરી—ત્રિતાલ.

(રાજ માયે ચાએછો તો મોરી સુધી લીજો...એ રાહ.)

સુધી લેજો રાણા શાણા મુજને સંભારી,

મુજને સંભારી હરિ હિત ઉર ધારી.....સુધી લેજો. ૮૬.

આપ બલાહક ચાતક હુંહું, (૨)

ત્રેમની ધારા પ્રસારી.....સુધી લેજો.

ચંદ્ર તમે હું ચકોરહું ચાહક, (૨)

દરશને દુઃખડાં વિદારી.....સુધી લેજો.

સમૃધી સરવતો સાર તમેછો, (૨)

જીવન દોરી અમારી.....સુધી લેજો.

નિત નથુરામની અરજ ધરી ઉર, (૨)

બહાલા ન દેશો વિસારી.....સુધી લેજો. ૭૮

## હુમરી.

## રાગ ખમાચ—ત્રિતાલ.

(ખિગરી કોન સુધારે, પ્રભુ ખિન ખિગરી કોન સુધારે...એ...રાહ.)

માણો મળ મહારાણા અહોનિય,

માણો મળ મહારાણારે.....ટેક.

આનંદ મંગલ મોટા મચાવે, સુખ શાન્તિથી શાણુરે;  
રૂડાં કરીને કામો રસીલા, જગમાં ખૂબ જણાણુરે. માણો.

મેળવી જ્ઞાન મહાન મતીથી, ગુણીગણુ માંહી ગણાણુરે;  
આપ અટકા ટેકી અનૂપમ, ભાવે ભૂપ બણાણુરે....માણો.

જગમાં જોઈ જોર યશોનું, હૈયાં અરિનાં હણાણુરે;  
બરડાપતી તમ બળસરિતામાં, જાયે શત્રુ તણાણુરે. માણો.

ગરવ ધરી ગુણીના ગણુ સરવે, ગાયે ગુણના ગાણુરે;  
ભાવ સુપાલ જીવો જીગ જીગ તમે, નિત નથુરામના નાણુરે.

માણો. ૮૦

### રાગ કાફી—તાલ દીપચંદી.

સાંવરા મત મારો પીચકારી...એ...રાહ.

અદ્ભુત આપ રમોછો હોરી.....ટેક.

પરમ હુલાસભર્યા પ્રતિપાલક, બલધર રસને બટોરી;

કર પકડી પતિ પોરખંદરના, રસીયા નાખોછો રોરી;

ગાગર રંગતી શિર ઢેળી.....અદ્ભુત.

મારો બહુરંગ ગેદ ગુણી નૃપ, ગણી ગણીને સહુ ગોરી;

અધિક અખીલ ગુલાલ ઉગડો, બીજું અમે સહુ બોળી;

કાંઈ ન કરી બળજેરી.....અદ્ભુત.

કલિત કુસુંભથી વસ્ત્ર ભીંજવો, ધન કેસરને ઘોળી;  
આવો અમાનક અંક ભરોછો, કુસુમાભરણુનાખો તોડી;  
ચતુર સહુનાં ચિત ચોરી.....અદ્ભુત.

આ કરતાં પણ અધિકી ચિતમાં, આઠ ચતુર શી ચોડી;  
ભાવ ભુપાલ ન ભાગવા દો, નયુરામની જીવનદોરી;  
કરો કૃપા કહું કર જોડી.....અદ્ભુત. ૮૧

### રાગ ઠાકૃ—તાલ દીપચંદી.

શ્યામ અમે સહુ આપથી હારી.....ટેક.

હોરીના ખેલ હજારો જોયા, રમતા રસિકવિહારી;  
આપનો ખેલ અનોખો સહુથી, નાહિં ગણો નરનારી;  
ભીંજવોછો પકડી પછાડી.....શ્યામ અમે.

રહેવા ન આપો એક અંગ ખાલી, હર નહિં રે'મ અમારી;  
મારો તમે મનખૂત હાથથી, પ્રાણપતી પીચકારી;  
પતંગરંગની ભરી ભારી.....શ્યામ અમે.

અખલા અખલ જોર શું કરીયે, આપ બડા બળધારી;  
મહીપ કુમકુમા મારો ન મુખપર, નયન ન શકીયે નિહાળી;  
આમ નહીં યાઓ અનાડી.....શ્યામ અમે.

ભાવ ભુપાલ ભામિનીનાછો, ભોગી બ્રમર ભયહારી;  
અચલ પ્રેમના રંગથી રંગો, અભિનવ વચનો ઉચારી;  
કહે નથુરામ પુકારી.....સ્થામ અમે. ૮૨

રાગ કાફી—તાલ દીપચંદી.

(સાંવરો ખાવરો લયોહે...એ...રાહ.)

આજ રમેછે રંગે, ભયહર ભાવ ભુપાલ.....ટેક.  
અવસર ઉપર અધિક ઉમંગે, રાણીયો સાથ રસાલ. આજ.  
કેસર કુમકુમ અરગળ અંગે, કરથી ફેંકે કૃપાલ.....આજ.  
રંગ પતંગ અખીલની સંગે, ગહરો છાંટે ગુલાલ.....આજ.  
ભીંજવે ભારી ધીરાઇને ઢંગે, કુડા પૂરપનો કાલ.....આજ.  
પો'ચતા એક અનેકને અંગે, ચાલીને ચંચલ ચાલ...આજ.  
રહે નથુરામ કે અચલ ઉમંગે, હિન્દુ ધરમની દાલ....આજ. ૮૩

રાગ કાફી—તાલ દીપચંદી.

(નીકી બની નંદ લહકી...એ...રાહ.)

રમવા પધારો રાણા, ભાવસિંહ ભૂપતિ શાણા.....ટેક.  
જીવતીને જોરથી જાઓછો છતી, આજ નથી એ ટાણા. ભાવ.  
રંગ પતંગથી અંગ ભીંજવતાં, નિશ્ચય બેસશે નાણા.....ભાવ.

પકડી પછાડતા એ પળ વીતી, લાલ આવે વેચી લાણા. ભાવ.  
 અબળા તણું બળ આજ વિલોકશે, છેલા ન રે'શું છુપાણાં. ભાવ.  
 બહુ પીયકારીના સાંખ્યા પ્રહારો, શ્યામ અમે શરમાણાં. ભાવ.  
 દિવસ ધણા રમતાં તમ સંગે, કમકૌવત કહેવાણાં.....ભાવ.  
 દારશો આપ આજ નકી અમથી, ગોરીઓ ગારો ગાણાં. ભાવ.  
 કવિ નથુરામના કષ્ટહરણુ નૃપ, રહેછે નયન લોભાણાં. ભાવ. ૮૪

રાગ આશા જોગીયા, તાલ દાદરો.

[જોયા જોયા જોગીરાજ છેલ છખીલા...એ રાહ.]

રમો રમો રાણાજી રંગે રસીલા, ભાવેં ભુપાલ ભાવસિંહજી;  
 સદા શોભો શ્યામાઓ સંગે છખીલા, અંગે વસંતી વાધા સજી.-ટેક  
 બહુ ગેદો ગુલાલના મારો રસીલા, ભાવેં ભુપાલ ભાવસિંહજી;  
 રૂડા રંગે પતંગે રમાડો છખીલા, અંગે વસંતી વાધા સજી. રમો.  
 ભરો પ્રેમે કનક પીયકારી રસીલા, ભાવેં ભુપાલ ભાવસિંહજી;  
 લીઓ તારણીયોને તારી છખીલા, અંગે વસંતી વાધા સજી. રમો.  
 ઘટા ગેદરી ગુલાલની છાઓ રસીલા, ભાવેં ભુપાલ ભાવસિંહજી;  
 સહુ ભામાઓને ભીંભવો છખીલા, અંગે વસંતી વાધા સજી. રમો.  
 મુખ પામો સંગીતને સાદેં રસીલા, ભાવેં ભુપાલ ભાવસિંહજી;  
 મુદેં જામો મૃદંગને નાદેં છખીલા, અંગે વસંતી વાધા સજી. રમો.

રહો આનંદ મંગલ માતા રસીલા, ભાવે જુપાલ ભાવસિંહજી;  
નથુરામતણા અન્નદાતા છખીલા, અંગે વસંતી વાધા સજી. રમો.  
૮૫

રાગ કાશી, તાલ દીપચંદી.

[વાલમજીને કોઈ વારોરે હો.....એ...રાહ.]

વાલમ તમપર વારીરેહો, વાલમ તમપર વારી.....ટેક.  
તન મન ધન અર્પણ કહું આજે,  
ધીરા વિશ્વસમ ધારીરે હો.....વાલમ.  
આપ અમારા અન્તરજમી,  
નેહ ધઈ મુખ ન્યાણીરે હો.....વાલમ.  
જગત બધામાં જોઈવા ન જડે,  
જોતાં જોડ તમારીરે હો.....વાલમ.  
ભાવ જુપાલ નાથ નથુરામના,  
મોજી ખબર લ્યો મારીરે હો.....વાલમ. ૮૬



રાગ પહાડી, તાલ ગજલ.

(પધારો ભાવતાં ભોજન લેવા...એ...રાહ.)

તમેછો નેથુના તારા અમારા.

ભાવસિંહ ભૂપ ખ્યારા, (૨).....તમેછો ટેક.

અંતરના અધિકારો છો, મુખકારી સરદાર;

મનહર મનહરછો અતી, બલા ભોજ અવતાર...તમેછો.

અમે ઉપાસક આપના, આપ અમારા દેવ;

રાત દિવસ રાજ રહી, શાણા કરોયે સેવ.....તમેછો.

મનમંદિરમાં મોદયી, જળવિયે કરો યત્ન,

પોરપતી મળિયા તમે, અમે રાંકને રતન.....તમેછો.

કવિ નથુરામતણા તમે, કલ્પતર શુભગેહ;

મનવાંછિત ક્ષણ એ લિએ, એમાં શું સંદેહ...તમેછો. ૮૭

રાગ પહાડી. તાલ દાદરો.

(છ'દગી હાય વૃથા જાયરે પુત્ર વિનાની...એ...રાહ.)

રસીક રૂપ કલાકૃપ ભાવ ભૂપ તમેછો—ટેક.

અમે અજ્ઞાતણા આધાર તમે; (૨)

અમારે હર પ્રેમ પૂર મહારાણા રમેછો.....રસીક.

તમે છો દેવના સરખા દયાલુ; (૨)

સુખી કરી સેવકોને સંઘ દુષ્ટીયોને દમોછો...રસીક.

અનમી આપ છો અવનીમાં આજે; [૨]

છતાં નરપાલ સાધુ સંતને નેહંથી નમોછો...રસીક.

જુગો જુગાંજોઠવા જીવો તમે તો; [૨]

કવિ નયુરામને ગુણધામ સદાયે ગમોછો...રસીક. ૮૮

### હુમરી. ત્રિતાલ.

(પ્રિયા! ખિના જીયા મોરા, ભયોરી ઉદાસ...એ...રાહ).

પ્રિયા જીયામાં બિરાજો, ભલે ભાવ લુપાલ—ટેક.

તન મન ધન હેતે કરીયું હવાલેરે, (૨)

હવે ચાહે તે કરોને, હરી એના હવાલ...પ્રિયા.

ચંદ્ર ચક્રારને કમળને સુરજરે, (૨)

એવા અમને તો પ્યારા છો, સદાયે પ્રતિપાલ...પ્રિયા.

મેઘ મયૂરને ચાતક સ્વાંતીરે, (૨)

એવું અંતર અમારું રાણા, લાલચી રસાલ...પ્રિયા.

કવિ નયુરામના નાથ નિરંતર રે, (૨)

વસો આંખડલી આગે, નેહ કરવાને ન્યાલ.....પ્રિયા. ૮૯

## શિકાર વર્ણન.

લાવણી.

[મુજર ઉપર મુજરી પિતા પાતશા બાણી...એ...રાહ].

ચડોયા ચોપે ચતુરેશ ભાવ બયહારી,

હુઃખ હરવા હુનિયાંતણાં હીપડો મારી—ટેક.

બલવંત કંત બહાદુર પ્રભ પ્રતિપાળા,

ધરો ક્ષમ ધસ્યા રણધીર વિશ્વ હિત વાળા...ચડીયા.

ખરો કરો ખતાવવા કાજ ક્ષત્રિની રીતિ,

પરવરોયા પૌઠ પ્રતાપ ધરીને પ્રીતિ.....ચડીયા.

અતિ ગહન ગિરિ વિકરાળ વનસ્પતિ વાળા,

શૂરવીર શોષતા સર્વ નદી ને નાળાં.....ચડીયા.

મર્યો મર્યા શિકારી ધણા હારીને હોડે,

હનુમંત વંશ અવતંસ કદી ના છોડે.....ચડીયા.

ધરો ટેક એકલા ફરે બરેલ બંધુકે,

દિન અસ્ત થયો પશુ હસ્તથી શસ્ત્ર ન મૂકે...ચડીયા.

બનો રાત માધની માત કાળ સમ કાળા,

દાંકતી બામ્રસુત બયે પડેલો બાળા.....ચડીયા.

નૃપ શબ્દવેર્ધોતે નડે અંધારૂં શ્વાનું,  
ખખડાટે ખળ ઝોળખ્યો ભાવ ખનીં બાનુ...ચડીયા.

એકજ નિજખળ વિશ્વાસ અવરતો નાહીં,  
શા કારણુ એ શૂરવીર તણી લે સાહી.....ચડીયા.

પડકારો કરીયો પ્રખળ પાપોતે પેખી,  
સામા આદ્યા શત્રુતે શ્વાનસમ લેખી.....ચડીયા.

મુશ્યો ગાઢ ગર્જના ખળ ખેઠો ખળ ખોધ,  
પારથ સમ ભારથમહીં જઠવો જોધ.....ચડીયા.

છેલે ચડાવો છાતીયે દરાજ દુનાલી,  
હર શર કરતાં ગુણો હજાર કોપ કરાલી.....ચડીયા.

જઠાણી જવાલા તણી ફણી મુખ ફાકી,  
માતા મુદ્ગળની કાલકૂટની ફાકી.....ચડીયા.

મરવીલો ભીમની ગદા શળ હતુમતની,  
ખળ મુસળ સમી અંજલી અગસ્ત્ય મહતની. ચડીયા.

શ્રી રામદૂતના રવચ્છ પુચ્છ અગિનીશી,  
દવની દુહિતા વ્રજ અનલતણી ભગિનીશી...ચડીયા.

પૌલસ્ત્ય પુત્રની સાંગ બાણુ અર્જુનનું,  
હર નયન શિખા સમ તેજ તીવ્ર કર તનનું...ચડીયા.

મહારાણે મંગલ ભક્તિ પ્રજાની બાળી,  
 છળિયે છોડી છાતીથી કોષની કાળી...ચડીયા.  
 કરો ખંડ તુંડના અક્ષરન્ધ્રને બેદી,  
 ચાલી બનો ચપળા હૃદયચક્રને છેદી.....ચડીયા..  
 લષ્ટ પ્રાણુ પાર્ષોને પલમાં ધરણી પાડયો,  
 માધવસુત માધવ બની ભક્ત ભય ટાળ્યો...ચડીયા.  
 જંગલ કરોયું જાગતું જબર જયકારે,  
 વન ઉપવન જેવું કર્યું પોરને પ્યારે.....ચડીયા.  
 નિત નિત આશિષ નયુરામ દિગ્ગે છે નેહ;  
 આરોગ્ય અહોનિશ રહે દાનો નૃપ દેહે.....ચડીયા...૬૦

## સ્વારી વર્ણન.

લાવણી ખીજુની

[મહીયારીરે મહીનું મુદ્દય બતાવો.એ.રા.૬]

ચડી સ્વારીરે પોરપતીની પ્યારે, પારથથી વિજયી વધારે;  
 ભૂમી કંપેરે ભડ હય ગજને બારે, ધૂસર અંબર નભ ધારે.

પારથથી—ટેક.

કહે દુઃખિત બની દિગપાલોરે, રહી અડગ અવનીને ઝાલોરે;  
અડ્યો વિજય લેવાને બહાલોરે, અજમાવોરે હિમ્મતયા બગ દારે.

પારથથી.

સુંદરીઓરે શેષતણી કહે રતેહં, શીદ સ્વેદ વળ્યો પતિ દેહં ?

કાં કંપરે ? થરથર આપની ફેણો, વદતા કાં સકંઠક વેણો ?

કહે શેષ સુણો નરનારીરે, ચડી ભાવ ભુપાત્રની સ્વારીરે;

ભય લાગે ભાર શિર ભારીરે, અવતારીરે એ નૃપછે આવારે.

પારથથી.

બળહારીરે કાલ કમઠને કે'છે, વસુધાપર આ શું વહેછે ?

ભુમી ગાળેરે ભયપ્રદ ભીમ અવાળે, શું અર્જુન ચડિયો આળે ?

વદે કમઠ કડકતે વાંસેરે, ભરપૂર ભરાધ શ્વાસેરે;

હું ન કહેતો ખખર સહુ થાશેરે, અભિલાષેરે નેઠવો અડશે ન્યારે.

પારથથી.

વિષ વિધનાંરે સાજી વિંજયા વિમાનો, નિરખે અમરો નૃપ દાનો;

આડંબરરે અનુપમ ઇન્દ્ર પ્રમાણે, સુરગણ ઉર આનંદ આણે;

દિવે આશીશ એક અવાળેરે, મહારાણો જુગોજુગ રાજેરે;

નથુરામને નિલ નિવાળેરે, યશગાળેરે ગંભીર અવનીઅગારે.

પારથથી. ૫૧

## ગાયનો.

દીંડી.

વિમ્મરાજ આજ કષ્ટ સરવ કાપો,  
ભાવ ભૂપને અપાર આયુ આપો.....ટેક.

એકદંત દયાવંત દેવદેવા,  
વિમ્મ હરણુ નથી કાષ્ટ આપ જેવા;  
હરો તનતણા તમામ તુરત તાપો.....ભાવ ભૂપને.

હસ્તિવદન સ્વસ્તિસદન દિવ્યદાતા,  
સુખકરણુ સદા ગુણીગણે ગવાતા;  
મોદભરણુ આધિ વ્યાધિઓ ઉથાપો.....ભાવ ભૂપને.

કરું સેવ હું સદૈવ સ્નેહ ધારી,  
આપ મૂરતિછે મંગલ કરનારી;  
અમલ જેઠવાનો સર્વ જર્ગે સ્થાપો.....ભાવ ભૂપને.

પોરખદરનો પાતશા રૂપાળો,  
નયૂરામતણો નાય એ નિહાળો;  
વિશ્વમાં વિશેષ કીર્તિ એનો વ્યાપો.....ભાવ ભૂપને. ૯૨

(થયાછોરે પતિ તેજ ધ્યારી તનના...એ...રાહ.)

પ્રિયછોરે પતિ પોરતણા અતિ ભયહર ભાવ ભુપાલ,  
ભયહર ભાવ ભુપાલ, સુખકર, ભયહર ભાવ ભુપાલ. પ્રિયછોરે. ટેક.  
રાજો નિત અવનીમાં અધિકા, રસિક જેઠવા રાજ; (૨)  
નરપતિમાં, મહામતિમાં, શુભ ક્રતિમાં; રહો રતિમાં,  
રસવંતા રસભર ઉરમાં વર ધરો વિજયની માલ.....પ્રિયછોરે.  
કોટિ વરપલગી છવો જગતમાં, જ્યેષ્ઠ કષ્ટ કરી દૂર; (૨)  
દુઃખ ટાળો, સુખ ભાળો, અરિખાળો, હદવાળો,  
શુભ ગાયે નયુરામ નિરંતર નેહધરી નરપાલ...પ્રિયછોરે.....૯૩

(પ્રાણ ધ્યારા મારા વાલા મુની...એ...રાહ.)

અજની નારી સારી સાવિત્રી મુણા વિનતી.—ટેક.

આનંદ આપો અહાનિશ સારો, વર્ણો કીરતિમાં કરી વધારો;  
વિદ્નો સર્વ વિદારો, રાખી ઉર રતી.....અજની.

મુદ મંગલની મનહર માળા, છાંયા છત્રપતી હોગાળા;  
મુજપતિ ભાવ રૂપાળા, ને દો આયુ અતી.....અજની.

નિત આરોગ્ય રહે મહારાણા, સહુ નૃપમંડળમાં બની શાણા;  
અમ નિર્ધનનાં નાણાં, એ મહાનમતી.....અજની.

મુણિ નયુરામ અરજ અજદારા, ધારો એ શિર અમૃતધારા;  
ઉભય નયનના તારા, મારા પોરપતી... ..અજની. ૯૪



## (રાગ આશાગોડી.)

મુજ અરજી હર ધરજો, દિવાકર, મુજ અરજી હર ધરજો—ટેક.  
 ભવ્ય પતિ મુજ ભાવ ભુપતિને, ભયહરો આનંદ ભરજો. દિવાકર.  
 અરિ હુગણને અંધ બનાવી, કલિત પ્રભા એની કરજો. દિવાકર.  
 ત્વરિત ઉપાધિ તિમર સહુ એનાં, હેત ધરીને હરજો.....દિવાકર.  
 સહુ પૃથ્વીમાં એ પ્રતિપાલનાં, પૂર્ણ પ્રતાપ પ્રસરજો.....દિવાકર.  
 વિજય વાદ્ય અવનીમાં એનાં, ગાઠ સ્વરે ગડગડજો.....દિવાકર.  
 પોરપતિ નથુરામના નાથને, બહાલધરી રમા વરજો.....દિવાકર.૯૫

## (રાગજી શુ. બોલો આમજ ઓહું...એ...રાહ.)

આનંદ દાયક આપ અમોને, (૨)

મહિપતિછો મનોહારીરે..... આનંદ. ટેક.

પ્રેમ પિયૂષનો કુંડ કોડીલા, (૨)

સુંદરવર સુખધારીરે.....આનંદ.

મુદપ્રદ મંગલરૂપ મયાળુ, (૨)

શાશ્વત રાણા સુવિચારીરે.....આનંદ.

છાંયાતણા તમે છત્રપતીછો, (૨)

દીનજનના હુઃખધારીરે.....આનંદ.

ભાવ ભુખીપતિ આપની રીતિ, (૨)

નરપતિઓથી છે ન્યારીરે.....આનંદ.

હનુમતવંશના હીરા તમેછો, (૨)

પરમ ધરમ રજા ધારીરે.....આનંદ.

કવી નથુરામ કરીને કવીતા, (૨)

તારીફ કરે શું તમારીરે..... આનંદ. ૯૬

(વાલીછે દાતાર વાલી મિરાં દાતાર...એ...રાહ.)

વાઈ મહારાણા વાઈ મહારાણા,

છાંયાતણા સરદાર, તમપર વાઈ મહારાણા.

પોરતણા પ્રતીપાલ, તમપર વાઈ મહારાણા.

બરડાપતી બડહાઈ બિરાબો, (૨)

દેવસમા દાતાર, તમપર વાઈ મહારાણા.

પારસ જેવા પ્રગટ પ્રતાપી, (૨)

લોહ કંચન કરનાર, તમપર વાઈ મહારાણા.

વહાલેથી વહાણો ભરીને વિજયનાં, (૨)

હેતે હકાર્યો હજાર, તમપર વાઈ મહારાણા.

ભાવ ભુપાલ નથુરામના નાથછો, (૨)

આપ અમર અવતાર, તમપર વાઈ મહારાણા. ૯૭

(જેથું જેથું જેથુંરે, મેંતો આજે અજખ કાંધ જેથું. એ રાહ.)

ઠહાલા ઠહાલા ઠહાલારે, અને પોરપતી અતી ઠહાલા—ટેક.

જેને નિરખતાં જાયછે નાશી, (૨)

તેણુના કઠણુ કસાવારે.....મને.

જીવન પ્રાણુ છો જેઠવા અમને. (૨)

દુઃખહર દીન દયાવારે.....મને.

સ્નેહથી નામનું સમરણુ કરીયે', (૨)

મોદભરી ધરી માવારે.....મને.

ભાવ હરો નથુરામના બચને, (૨)

પ્રિય જનના પ્રતિપાવારે.....મને.

૯૮

(ઠહાલા જાણુંજી ખધી વાતરે, લટકાળા લાલા,એ રાહ.)

પોરને પાટે ધરી પ્યારરે, રાણાજી રાજે;

અમિત વરપ લગી ભાવ જુમીમાં, હૈયાહારરે, છાંયાપતિ છાજે—ટેક.

ધન્દ્રસમા અવનીપરે', વિધવિધ કરો વિલાસ;

પ્રતિદિન પ્રેમ પ્રસારતા, હરદમ હાસ હુલાસ...અમિત...પોરને.

અષ્ટ સિદ્ધિ નવ નિદ્ધિથી, ભૂપ ભરો ભંડાર;

દીનતણા દુઃખ ટાળવા. દેવ સમા દાતાર...અમિત...પોરને.

વસુધામાં વધતા કરો, અગણિત ડીર્તિ અવાજ;  
 બળિયા બાધો બેશ્વ નિત, પ્રૌઢ ધરમની પાજ...અમિત...પોરને.  
 મુદ્દમ'ગલ લ્યો મોજથી, સજો સુખનાં સાજ;  
 કરો કંથ નથુરામના, કોડ દિવાળી રાજ.....અમિત...પોરને. ૬૯

(આજ આનંદ છે દિન...એ...રાહ).

સુખે' રાજે સદાયે ભૂમીમહી ભાવ ભૂપતિ.—ટેક.

મહારાણા મહાન, દિવ્યો કંચનના દાન;  
 કરો કોડે' વસુધામાં કીરતી.....સુખે'.

પૂરા પામો પ્રતાપ, અતી અવતીમાં આપ;  
 દિવ્યો શત્રુને તાપ ઉરમાં અતી.....સુખે'.

રહો આનંદે અંગ, રમો રસીયાજી રંગ;  
 સહુ રનેહીની સંગ. રાખી રતી.....સુખે'.

શિરે છાંયાતું છત્ર, ધરો પ્રીતે' પવિત્ર;  
 નથુરામતણા નાથ, પોરના પતી.....સુખે'. ૧૦૦

(નઘી મારે વર વરવાતણી મરજી...એ...રાહ.)

મલેં માવ ભૂપતિ રસમર રાને,  
છેલા છત્રધારીને ધાને.....ટેક.

વિજયતણા વર વિશ્વ બધામાં,  
વિધ વિધ વાળં વાળે;  
દાની દિગન્તલગી દધ દાનો,  
મુખો કરો અરથી સમાળે.....મલેં.

વિક્રમના કરતાં પણુ વધતો,  
તંતેં કરો યશ્તાળે;  
હેતેં બની હરી અરિ કરિ ગણુમાં,  
ગર્વ ધરીને ગાળે.....મલેં.

જેઠવા જોર મરેલ જુગોજુગ,  
ભવ્ય છખી ધરી બ્રાળે;  
નમ્રદાસ નથુરામને રસીયા,  
નિત નિત નેહું નિવાળે.....મલેં. ૧૦૧

(સહુ પેખો નયન કરી ધ્યાસાં...એ...રાહ.)

મહારાણા (૨) છે મંગલકારી,  
આનેંદી અમર અવતારી.....મહારાણા—ટેક.

આજ નથી કોઈ એની સમોવડ, (૨)

ધીરો હીરો ધર્મધારી.....આનંદી...મહારાણા.

પ્રૌઢી બાંધી જેણે પુણ્યની પાળે, (૨)

કાઠી અનાથો ઉગારી.....આનંદી...મહારાણા.

આધાર રહેછે અનીતિથી એતો, (૨)

નીતિ નિરંતર ખ્યારી.....આનંદી...મહારાણા.

કવિ નથુરામનો કંથ કોડીયો, (૨)

ભાવ ભુપાલ બચહારી.....આનંદી...મહારાણા. ૧૦૨

### (રાહુ બનજરનો.)

સહુ નરપતિઓથી ન્યારો, છે ભાવ ભુપાલ અમારો.—ટેક.

હુનિયામાં એ સમ દાની, નથી ત્ય કોઈ નિરમાની;

હરદમ હાની હરનારો, છે ભાવ ભુપાલ અમારો.....સહુ.

પ્રતિદિન રનેહીને પાળે, બેઠમાનીજનોને બાળે;

સાંધુને સુખ કરનારો, છે ભાવ ભુપાલ અમારો.....સહુ.

કબિમાંદિ કરણુ તન ધારી, આપે કંચન અવતારી;

પાત પૌરખંદરનો ખ્યારો, છે ભાવ ભુપાલ અમારો.....સહુ.

દેવી રાણાકુળ દીવો, જશ્નધારી જુગોજુગ છવો;

નથુરામના નયનનો તારો, છે ભાવ ભુપાલ અમારો.....સહુ. ૧૦૩

## દ્વીંડી.

કરજો રક્ષ રહીને પક્ષ પ્રેમ પ્રેરી,  
મહદ ભૂપ રૂપ ભાવસિંહ કેરી;  
સુખદ શ્યામ રામ હિત દ્રગેયો હેરી.....કરજો. ટેક.

હરતાં ક્રરતાં રહોને સંગ સુખ દેજો,  
કરતાં ગાન ગમત રમત સાથ રે'જો;  
શયન અયનને રહો સદાય ઘેરી.....કરજો.

જમતાં જાદવજી દૂર નહોં જાજો,  
વારિપાન વખત વેગજા ન થાજો;  
મલા કામમાં સદાય રહો ભેરી.....કરજો.

પ્રિય પ્રભાવમાં પ્રભુ રહેજો પાસે,  
મદનમોહન મધ્યાન્હમાં નિવાસે;  
સાંજ વખત દેજો સાંભળાજી કેરી.....કરજો.

રસિક શ્યામ રજનિ રસભરી વિતાવો,  
નયૂરામ ધામ મંગળેયો છાવો;  
નાખો વેરી વાદળાંઓને વિખેરી.....કરજો. ૧૦૪

(મને સાહ્ય કરશે મુરારીરે...એ...રાહ.)

અવતારી છાંયા છત્રધારીરે,

સુખે રાજે બુપાલ ભાવ ભારી.....ટેક.

શત્રુ સંહારી, અનાથો ઉગારી;

કરી નેહીની વ્યાધિઓ ન્યારી.....અવતારી.

હેતે હજારો લીધા હુનરી,

ગર્વધારી ગરીબીથિ તારી;

પંડિતોની પીડ ટાળી,

આપી આશ્રય આનંદકારી.....અવતારી.

કીર્તિ રૂપાળી કરી કામ ભારી,

વસુધામાં વિશેષે વધારી;

પ્રસરાવી પ્રભા પ્યારી,

નયુરામ નૃપાલોચિ ન્યારી.....અવતારી. ૧૦૫

(પતો ચેટીના ક્યાંધ...એ...રાહ.)

ખુબી ન્યારી તમારી. (૨)

ન્યારી તમારી, પ્રેમીને પ્યારી.....ખુબી. ટેક.

કઠણ વચન વહી, દિલ ના દુઃ ખાવો કદી કાતું કા વારી;

કાતું કા વારી, પ્રેમીને પ્યારી.....ખુબી.



સાગરસમ ઉર, આપનું ઝોપે અતી ગંભીર ભારી;  
ગંભીર ભારી, પ્રેમીને પ્યારી.....ખુખી.

દિલના દયાળુ, મનના મયાળુ વડા નીતી વિહારી;  
નીતી વિહારી, પ્રેમીને પ્યારી.....ખુખી.

કીરતિ અનુપમ, કોડથી આપેં ભૂમાં ભારે વધારી;  
ભારે વધારી, પ્રેમીને પ્યારી.....ખુખી.

ભાવ તમારી ભક્તી, ભાવ ભરેલી ક્રિયા કામણુગારી;  
કામણુગારી, પ્રેમીને પ્યારી.....ખુખી.

કવી નયુરામ કહે, પોરના પ્યારા જીવો વ્યાધિ વિસારી;  
વ્યાધિ વિસારી, પ્રેમીને પ્યારી.....ખુખી. ૧૦૬

(સદાય સુખ પામેા અમર મહારાજ...ઐ...રાહ.)

સુભગ સલધારી, છો ભાવ ભુપાલ;

મહીપ મનોહારી, છો વિનયી વિશાલ. ટેક.

સલ પ્રીતિયા કરો સ્નેહથી, સલ વાત વદનારા;

સલ પ્રીતની રીત સમજતા, પોરણંદરના પ્યારા....સુભગ.

સલ ટેક ધારણુકરનારા; શાણા સદા સધીરા;

રાણા કુળના રસિક રાજવી, હિતમ કાજ અધીરા. સુભગ.

સત્ય કૃતિ કરવામાં શૂરા, સત્ય મતિ ઉર રાખો;  
સત્ય ભાવના બરી અન્તરે, સહુ દુનિયાને દાખો. સુભગ.  
સરવ સત્યમય વર્તન આપનું, નહિ અસત્ય છે નામે;  
એથી સત્ય સ્વરૂપ વરણુબું, તેહ ધરી નથુરામે....સુભગ. ૧૦૭

(માન માતાને મળવા...એ...રાહ.)

ત્રેમધારી, પૂર્ણ આશીશ આપું.  
રીઢી સીઢી પામે ભાવ ભાવે સારી,  
પામે સરવમુખ, વામે દેહીનાં દુઃખ,  
પ્રિયજન સંગે, અધિક ઉમંગે, રમજે રંગે,  
કલેશ વિસારી.....પૂર્ણ આશીશ આપું.  
ખાંતે કુંવરને ખેલાવો ખોળે,  
જીવો વરષ ઝાઝા, મોટી ક્ષત્રીની માળ,  
વાળે વિજય વાળાં, કીરતિ જગમાં જામે, કહું નથુરામે,  
શ્રીહરી સદાય રહેા, સાલકારી. પૂર્ણ આશીશ આપું. ૧૦૮

(આ મારી મારી માને મને મારો તમે...એ...રાહ.)

યશો જામે જગે જગે નૃપ ભાવ તમે,  
સુત સાથે યે શતાયુ રિદ્ધિ સિદ્ધિથી રમે.  
આપ મેઘ જોષ્ટને જવાસા શત્રુ જલો,

અહનિશ દીનજનોની આશીશ ફળો.

ધર્મધામ.....ભાવભૂપ.

પ્રીતિધામ.....ભાવભૂપ.

કવિ પંડિતોને ઘો આરામ.....ભાવસિંહ ભૂપ.

નિકું નામ .....ભાવભૂપ.

દામ દામ. ....ભાવભૂપ.

આશીશ દે નેહું નથુરામ.....ભાવસિંહ ભૂપ. ૧૦૯

(પતિવૃત્તનો પૂર્ણ પ્રલાવ, જગમાં જાહીરછે  
જાહીરછે...ઐ...રાહ.)

છો બચહર ભાવ ભુપાલ, ખારા પોરતણા; (૨)

નેહીને કરતા ન્યાલ, દૈ ધન દાન ધણા. (૨)

ગુણ ગ્રાહક ગ્રાહક અતુરતણા, સાલક સંત સુજનને;

મુયશ ધન ધૂમંડથી દાહક, વેરી જવાસા વનને.....ખારા.

રામ રાજ્ય સમ ઉત્તમ નીતિ, ધ્યાન ધર્મના કામે;

કલ્પતર તમપાસે પૂરણ, કવિ પંડિત સુખ પામે.....ખારા.

દૌન દુઃખ હરવામાં છો હરદમ, દાની બળિથી દોઢા;

સર્વ રાજથી રાણા રાણા, કરો પરાક્રમ ગ્રોઢા.....ખારા.

ઐય યદને જ્યેષ્ઠકુળે, જશ કામો જગમાં કરજો;

નૌતમ આશીશ છે નથુરામની, ઉરમાં અહનિશ ધરજો.ખારા. ૧૧૦

(આરસે બદલી ક્યું નજર તોરી...એ...રાહ.)

આપમાં મોટીરે, નજર મારી—ટેક.

માને ન શિક્ષા, પ્રેમની દિક્ષા; (૨)

મોઢે ધરી મોટીરે.....નજર મારી...આપમાં.

રાણા રસીલા, શુણીના વસીલા; (૨)

કવીઓનાં સુખ કોટીરે....નજર મારી...આપમાં.

ભાવપતીછો, મ્હાનમતીછો; (૨)

રાંકતણી રોટીરે.....નજર મારી...આપમાં.

કહ્યું નથુરામે, પોર મુકામે; (૨)

વાત નથી ખોટીરે.....નજર મારી...આપમાં. ૧૧૧

(કરશે કયારે મળી દિલ શાન્ત હવે પ્રિયા મારી. એ રાહ.)

આવો આનંદરૂપ અનૂપ શાણા સુખકારી,

પોરખંદરના પ્રતીપાલ ધીરા યશધારી;

જોઈ રાણા રસીલા હું રાહ, (૨) સદાય તમારી. આવો.

ક્ષણ પ્રતિક્ષણ અંતર ધ્યાન તમારું ધારું,

પુહમીપટમાં નથી આપયકી કોઈ પ્યારું;

તેજો ખાવીદ ખખરો ખાસ, (૨) આનંદે અમારી. આવો.

પરમારયનીછો પાજ દરાજ દયાલુ,  
 મારા મનહર મોજ મેરાણુ મહંત મયાલુ;  
 મયટાલણુ ભાવ ભુપાલ, (૨) ભુમીમાં છો ભારી. આવો.  
 મુદ મંગલ માલ મહીપ છાંયાપતી છેલા,  
 નથુરામ કવીના નાથ પ્રતાપમાં પે'લા;  
 મુજ તન મન ધન તમ માયે, (૨) બહાલા દઈ વારી. આવો. ૧૧૨

(અખતો મનવા મેરા છોડી દેને માન...એ...રાહ.)

રાણાજી રે'લો ખાર ધરી મુજ પાસ, પાસરે.....રાણાજી.  
 અળગા આપ ચતાં અધધડીયે, અંતર થાઈ ઉદાસ; (૨)  
 દૂર રહો દાની દિન એકજ, મુજ મન જાણે માસ, માસરે. રાણાજી.  
 મુજ આંખોનું તેજ તમેછો, પેખી પામું પ્રકાશ; (૨)  
 પ્રભુ તમ પગલાંથી પામેછે, ઉજવળતાઈ અવાસ, વાસરે. રાણાજી.  
 હાજર હોતો હરધડી મુજને, હરપ હાસ હુદાસ; (૨)  
 આપ વિદેશ જવાનું સુણતાં, આવે મુજને ઉસાસ, સાસરે. રાણાજી.  
 સુણુલે ભાવ ભુપાલ અમારા, ખાર્વીદ અરજી ખાસ; (૨)  
 કવિનથુરામના કંચ કોડીલા, અહનિશ પૂરો આશ, આશરે.

રાણાજી. ૧૧૩

(ધીમા ધીમા ચાલોને મારા પ્રાણરે...એ...રાહ.)

મારા ખારા પધારે ધરી ખારરે,  
રસવંતા તમેછો રૂપાળા રાણા, સહુ વાતે શાણા;  
હેયાહારે.....મારા ખારા.

મુજ અખળાના આધડી, આપજો આધાર;  
છવાદોરી જોઠવા, વિનવું વારંવાર.  
કંઈ કામા હું આપની કલાવાલા, (૨)  
નિત બેઠીછું નામની ધારી માલા, (૨)  
ઠગો બહાલા શું વાયદા આપી ઠાલા, (૨)  
ઓ ઉદારરે.....મારા ખારા.

હુંહું હરજી આપનું, અખળા અરધું અંગ;  
દાની દૂર ન રાખીયે, શાણા શોભે સંગ.  
પતી પોરના ભાવસિંહ પ્રેમી પૂરા, (૨)  
દેવઅંજી દમાલ સંગરામે શૂરા, (૨)  
નયુરામના નાથ નેણના છો તારા, (૨)  
પ્રાણાધારરે.....મારા ખારા. ૧૧૪

(માર ચાર તલવાર ઉલો બુવેછે શું...એ...રાહ.)

ગુણાગાર હૈયાહાર રડા રાણાછો,

રાણાછ રાણાછ રાણાછો.....ગુણાગાર. ટેક.

આંખોના તારાછો ખારા પ્રીતમછ,

સુંદરીના ચિત્તમાં સમાણાછો.....ગુણાગાર.

મનહર સુરતી સુંદર સુરતી,

શુદ્ધ કમરૂપ ભૂષ ધ્યાણાછો.....ગુણાગાર.

હવાદોરીછો અમારી હવનછ,

ગોરીને શીખવાનાં ગાણાંછો.....ગુણાગાર.

ભાવ બુપાલ પતી હાંચના છેલા,

નિભ નથુરામતણા નાણાછો.....ગુણાગાર. ૧૧૫

(લાગી ઝરમરડી ષભાર...એ...રાહ.)

આવો મારા હૈયાના હાર-હાર મહારાણા...ટેક.

આપ વિના ધડી એક અમોને, (૨)

આંધ્ર પડે ના કરાર-કરાર મહારાણા.....આવો.

દુખળા ચાઉછું ડીલે દિનાદિન, (૨)

બહાલા કરોને વિચાર-વિચાર મહારાણા...આવો.

ગાવું બળવવું ગોઠે ન કાંઈ, (૨)

લેખું ના સુખ હું લગાર-લગાર મહારાણા. આવો.

સાંબળતી નથી કોઈવું દાને, (૨)

તમેથી બંધાણોછે તાર-તાર મહારાણા...આવો.

ખોટું બોલી નથી કરતી ખુશામદ, (૨)

હુંડો મારા અંતરમાં માર-માર મહારાણા. આવો.

ભાવ ભૂપાલ નથુરામના નાણા, (૨)

ખારા પધારો ધરી ખાર-ખાર મહારાણા...આવો. ૧૧૬

### સાખી મરાઠી.

સદા સર્વદા શ્રીહરી સ્નેહે, રક્ષણ કરવા રહેશે;

રાણા કુળના રસિક દેવતા, અમી ઝરાથી વહેશે;

દેશે સુખ સારાં, કરીને કદ સરવ ન્યારાં. ૧૧૭

પરમ પ્રતાપ ભર્યા “પણ” ધારી, ભાવ ભૂપ રસરીતે;

કુંવર સહિત કોટીગુગ રાજે, પોરપાટપર પ્રીતે;

ગુણ ગણશે ગીતે, કવિ નથુરામ નવલ નિત્યે. ૧૧૮

તાજે જશ ફેલાવો તંતે, રસિક રંગમાં રાજે;

ભાવભૂપ ભરપૂર ભલાયે, ભૂપતિઓમાં બ્રાજે;

ગાજે ઐશ્વર્યા, વચનો નથુરામે ઉચર્યા. ૧૧૯



## ગરબીઓ.

( ચાલ વેલી અલબેલી પ્યારી રાધે...એ...રાહ. )

મહારાણા લુપાલ ભાવ ભારી,  
ધરણિમાંહિ પરમ ધરમ રહ્યા ધારી ધારી. મહારાણા.—ટેક.  
નેક ટેકધારી એક છો અટકા,  
તમે દીધાછે દેશમાંહિં ડંકા,  
બેશ દીપતાછો બહાદુરીથી બંકા,  
રાજનીત, માં ખચીત, દીયો પ્રીત,  
ગણી પ્યારી પ્યારી.....મહારાણા.

જખર જેઠવાણ જગતમાંહિ જામ્યા,  
રાજરીતથી પ્રતાપ પૂર્ણ પામ્યા,  
આધિ વ્યાધિ ને ઉપાધિ સર્વ વામ્યા,  
પુરણ પ્રેમ, રસિક રે'મ, રાખી ક્ષેમ,  
દીન તારી તારી.....મહારાણા.

દેગ તેગથી દયાલ દાન દેતા,  
અભિમાનો વેણ કોષ્ટદી ન કે'તા,  
જીવો જગતમાં અનંત લાવ લેતા,  
નયૂરામ, તણા શ્યામ, રનેહધામ,  
હાનો હારી હારી.....મહારાણા. ૧૨૦

(જાણ્યું જાણ્યું હેત તમારું જાણવા રે લોલ...એ...રાહ.)

પ્યારા મારા પ્યારખંદરના પાતશારે લોલ,  
ભય હરનારા શાણા ભાવ લુપાલજે;  
સુંદરવર સુખકર છો સ્નેહીને સદારે લોલ,  
દાની દીનજનોના છો પ્રતિપાલજે.....પ્યારા.

જગમાં નહિં જોઈ હું તમ સમ જોઠવારે લોલ,  
રણવિજયી રાણાછો રસરૂપજે;  
પ્રેમ નિભાવણુ મનભાવન મોટા તમેરે લોલ,  
કુડાં જનોને નાખો દાળે દૂપજે.....પ્યારા.

મોછ નૃપ માધવસુત મોજું આપતારે લોલ,  
કવિ કોવિદનાં કાપી નાખ્યાં કષ્ટજે;  
જશ જખરો જગમંદિર અંદર જળહળેરે લોલ,  
ભય પામીને ભાગ્યા સરવે બ્રહ્મજે.....પ્યારા.

આપેં કામ કર્યા જે આ અવનીમહીરે લોલ,  
કોડીધન નહીં કરશે એવાં કામજે;  
હનમતવંશે હીરા સાચા હાલછોરે લોલ,  
નેદ્રધરી શુષ્ક ગાયે નિત નયુરામજે.....પ્યારા. ૧૨૧

(લેલી બધને ગાઠલમાં ફરતી...એ...રાહ.)

આનંદેથી રાજો તમે રાણા,  
 ચરા ભાવ બૂપતિ છો શાણા.      ટેક.  
 પતી પોરખંદરના પ્યારા,  
 અવર નરનાહ ચક્રી ન્યારા;  
 છાંયાતણા છેલછો છોગાળા.....આનંદેથી.  
 મહીપતિઓની તમે માગ્ન,  
 વાજો વમુધામાં વિજય વાળાં;  
 તંતે શુણી ગાયે શુણો તાગ્ન.....આનંદેથી.  
 સુજશતણી વાડી પૂતી બહાલી,  
 સુગંધી દશે દિશમાં ચાલી;  
 સુદે મહારાણા બન્યા માલી.....આનંદેથી.  
 સુખે નથુરામતણા રવામી,  
 છવે વર્ષ કાટી વિપતિ વામી;  
 ગુગોગુગ કીર્તિ રહો જામી.....આનંદેથી.      ૧૨૨

(અમે માગીયેં ઈશ્વર એટલું...એ...રાહ.)

ધન્ય ધન્ય અતી દિન આજનો.  
 મહારાણા દિઓછો મહાન, સુધર્મમાં ધ્યાન;  
 છવે ધણું નેઠવા.

રૂઝા રૈયત કેરા રામછો, ઠરી આવાં કોડે'થી કામ,  
 સદા અભિરામ-છવો ધણું જેઠવા.  
 દાની વીર વિઘ્નુધ વિરોધછો, અતિ ઉત્તમ અસ્તિક આપ,  
 આનંદી અમાપ-છવો ધણું જેઠવા.  
 બલા બૂમીમાં ભાવ બૂમીપતી, ખારા પોરતણા પ્રતીપાલ,  
 વિવેકી વિશાલ-છવો ધણું જેઠવા.  
 રાજે નામ નીકું નવખંડમાં, ફેલો આ અવનીમાં અખંડ,  
 પ્રતાપ પ્રચંડ-છવો ધણું જેઠવા.  
 મોછ રાજ મહીપતી માજછો, સજને સુખનાં શુભ સાજ,  
 મુદે' મહારાજ-છવો ધણું જેઠવા.  
 ચિર આયુ ઉમાપતિ આપશે, ઉરમાંહિ વધારી ઉમંગ,  
 શાણા સુતસંગ-છવો ધણું જેઠવા.  
 બરડાના પતી બડહાય છો, નયુરામ કવીતણા નાય,  
 શોભો જયસાધ-છવો ધણું જેઠવા

૧૨૩

(જેઠો સખી ડાલરીયો...એ...રાહ.)

રાણો રૂઝો રસેં બરીયો, લુપાલ ભાવ રાણો રૂઝો રસેં બરીયો.  
 પોરખંદરના પાતશા કેરો, ધરમ મુગટ શિરે' ધરીયો...લુપાલ.  
 જેઠવાકુળના જળર પ્રતાપી, યાનક ઉપર ઠરીયો...લુપાલ.  
 મન્દ્રસમાન અલૌકિકઉત્તમ, વિવિધ વિહારને વરીયો...લુપાલ.  
 સલ નયુરામનો સ્વામી સલુણો, દાનીછે દિલનો દરીયો...લુપાલ. ૧૨૪

(તમે દ્વારકાં શીઠ જાઓછો...એ...રાહ.)

તમે ભાવ અનુપમ, બૂપતી, મહારાણ્યારે ;

તમે ધારણ છો સદા સુમતી, નૃપ શાણ્યારે.—ટેક.

તમે મંગળ મૂરતિ એકછો, મહારાણ્યારે ;

તમે તંત્રીલા ધારણ ટેકછો, નૃપ શાણ્યારે.....તમે ભાવ.

તમે ચતુરતણા ચિત ચોરછો, મહારાણ્યારે ;

તમે મહીપતિના શિરમોરછો, નૃપ શાણ્યારે...તમે ભાવ.

તમે આનંદી અધિક ઉદારછો, મહારાણ્યારે ;

તમે મોહલા મોજ આવતાર છો, નૃપ શાણ્યારે. તમે ભાવ.

તમે જશધારી છો જોઠવા, મહારાણ્યારે ;

તમે પોરખંદરના પતી નવા, નૃપ શાણ્યારે....તમે ભાવ.

તમે સહુ જનના સુખધામછો, મહારાણ્યારે ;

તમે કવિ નથુરામના શ્યામછો, નૃપ શાણ્યારે. તમે ભાવ. ૧૨૫

(હારે દાણુ માગેરે દાણુ માગે...એ...રાહ.)

હારે ભાવ બૂપેરે, ભાવ બૂપે,

હારે કાધી કારતિ વિજય અનૂપેરે...ભાવ બૂપે.

હારે સ્નેહીઓને સદા સુખ આપે,

હારે જોષ દીનજન હુઃખ સહુ કાપેરે..ભાવ બૂપે.

હારે પૂરા પાખંડીને પરમજે,

હારે ખેંધમાનીજનોને બાજેરે.....ભાવ ભૂપે.

હારે નથુરામનો નાથ રસીલો,

હારે લીધો બહાલેથી એનો વસીયોરે...ભાવ ભૂપે. ૧૨૬

(આજ પ્રીતમ ઘેર આવશે—એ રાહ.)

નૌતમ ભાવ નરેશ છે, એનો બહાદુર બરડો દેશછે જીરે. ટેક.  
 એ છે જોતના બહિર જોડવા, એના ઉત્તમ કામ અભિનવાજીરે. નૌતમ,  
 એતો આનંદી દૈવી અંશ છે, એનો હિમ્મતી હતુમત વંશછે જીરે. નૌતમ.  
 એતો દુઃખહર દાની દરાજ છે, એનું પોરબંદરમાં રાજછે જીરે. નૌતમ.  
 એનું શુણીયમ ધૂમલી બેસણું, એતો મૌથી વિજયી સોહામણું જીરે. નૌતમ.  
 એના પૂરવળે પરમ પ્રતાપથી, સહુ શત્રુને તપાવો ગયા તાપથી જીરે.  
 નૌતમ.

એતો કવિ નથુરામનો સ્યામછે, એનું દેશ વિદેશે નામછે જીરે.

નૌતમ. ૧૨૭

(પાણી ભરવાને ગેતીરે...એ...રાહ.)

મનહર સુખકરછેરે, રાણો શાણો રસવંતા;

ભાવ ભયહર નરછેરે, હૃદયમાં હરખંતા.—ટેક.

પોરબંદર કેરારે, પ્રતાપી છે ગ્રેમી પતી;

જેના ગુણુછે ગહેસારે, અધિક અંતરમાં રતી. મનહર.

ગુણી કવિઓના ગ્રાહકરે, છે ઉર આનંદી અતી;  
ચિત્તે અતુરના ગ્રાહકરે, ધરે મહા વિમળ મતી. મનહર.

પૂરા પંડિત પેખીરે, દીયેછે દાન ધણા ;  
દાની દીનજનને દેખીરે, દેવામાં ન રાખે મણા. મનહર.

જેઠવે ગુણુ ગીતરે, કીરતી અધિક કરી;  
નયુરામને નિત્યેરે, નીભાવે નેહ ધરી.....મનહર ૧૨૮

(ચુંદરખાઈ સાસરીયે ગાલ્યાં.. એ...રાહ.)

સાહેલી બહેલી ગામે આજ, રસવંતો રાણો જોવા;  
જમ માવ ભુપાલ નિહાળો આજ, અંતરની ખામી ખોત્રા-ટેક.  
એ અતુરશિરોમણિ છે મોટો, જગમાં નથી એહતણો જોટો ;  
એ અધમ સિરેં ચણે એટો આજ, રસવંતો રાણો જોવા. સાહેલી.

એને પૂરણુ નીતિ છે ખારી, આનંદી નૃપ છે અવતારી;  
વસુધામાં કીર્તિ વધારી આજ, રસવંતો રાણો જોવા. સાહેલી.  
મનહર મહીપ છે નિરમાની, વળી દેવ સમાન છે બહુદાની;  
તેજેમય તનકું તાની આજ, રસવંતો રાણો જોવા-સાહેલી.  
દરજન કરીને દુઃખડાં વામો, સહુ આનંદ સિન્ધુમાં જામો ;  
નયુરામ નવિન સુખ ખામો આજ, રસવંતો રાણો જોવા. સાહેલી.

(આવોને નંદલાલ રમવા આવોનેરે...એ...રાહ.)

રહેજો આનંદમાં રોજ, ભાવભુપાલ રસીકો ;

મનગમતી લ્યો મોજ, વિપ્ર નથુનો વસીકો—૨૬.

સુખના સમુદ્રમાં સ્નેહથી ઝીલો, કીર્તિ તણા કમળો બહુ ખીલો ;

નેહભાગ રહો લીલો, ભાવ ભુપાલ રસીકો.....મનગમતી.

ધન્દ્ર સમાન લ્યો સુખ અભીનવ, બહાલથી ભોગવો વિધવિધ વૈભવ ;

અહનિશ આનંદ ઉત્સવ, ભાવભુપાલ રસીકો....મનગમતી.

પુત્ર યજી ધરસુત્ર શોભાવો, લાખો હીનનાં મનડાં લોભાવો ;

મંગળે મંડપ છાવો, ભાવ ભુપાલ રસીકો.....મનગમતી.

પામળે પૂર્ણ પવિત્ર પ્રતાપો, વામળે સરવે ત્રિવિધના તાપો ;

છાપ સુજશની છાપો, ભાવ ભુપાલ રસીકો....મનગમતી.

ભાવથી ભોજ્યશ્વર દુઃખ કાપે, સુંદરજી મુત આશીશ આપે ;

શત્રુ ભલે તપે તાપે, ભાવ ભુપાલ રસીકો....મનગમતી. ૧૩૦

(કાનુડો કામણગારો, માવો મીઠી મોરલીવાળો-એ રાહ.)

ભાવાસિંહ ભૂપ મેં બાળ્યો, વડો પોરબંદરવાળોરે—૨૬.

ચતુરશિરોમણિ ત્રેમી પૂરો, શરો શુભ શુભવાન ;

ઉત્તમ લક્ષણમાં ન અધૂરો, નૌતમ નીતિ નિધાન.

નયન બરી નેહ નિહાળ્યો, વડો પોરબંદરવાળોરે. ભાવસિંહ.



જશનામી કુળ જોઠવા કેરે, જગ્ગર થયો જશ જાજ;  
 દીન તણાં દુઃખ હરવા હેતે, દેતો દાન દરાજ  
 વળે નહીં કોમળી વાળ્યો, વડો પોરબંદરવાળોરે. ભાવસિંહ.  
 કાજ મહંત કરે અતિ ખંતથી, તંતે કરીને તોલ;  
 એકજ “પણુ” નિજ અંતર ધારે, એકજ ખોલ અમોલ.  
 ટળે નહીં ટેકથી ટાળ્યો, વડો પોરબંદરવાળોરે....ભાવસિંહ.  
 ગામ સદા ગુણુ ગર્વ ધરીને, નેહ થકી નથુરામ;  
 એને નિહાળ્યો ન એણે આ જુગમાં, કાંઈ કર્યું નથી કામ;  
 વૃથા જન્મારો ગાળ્યો, વડો પોરબંદરવાળોરે. ભાવસિંહ. ૧૩૧

(મને ભૂલી ગયોછે મારો છલડો રે...એ...રાહ.)

રૂડા રાણા રસીલા ભાવ ભૂપતીરે, (૨)  
 ધણું હવે હારે (૨) તમે હુમલીના શ્યામ, અભિરામ—ટેક.  
 પૂરા પ્રેમની પ્રતિભા પ્રભુ આપછોરે, (૨)  
 જશધારી હારે (૨) તમે જોઠવાની માજ, છો દરાજ.....રાણા.  
 રાજકાજમાં મહંત યુદ્ધિવંતછોરે, (૨)  
 ખરા ખંતી હારે (૨) તમે પ્રજ્ઞતણા પાળ, છો નૃપાળ.....રાણા.  
 અભિમાન ને અહંતા નથી આપમાંરે, (૨)  
 દેવ અંશે હારે (૨) તમે આલ્યા ક્ષત્રીવંશ, અવતંસ.....રાણા.  
 દયા દ્રષ્ટિથી વિજોડો વિશ્વ સર્વનેરે, (૨)  
 પ્રીતે પાળો હારે (૨) નથુરામ તણા નાથ, જન અનાથ.રાણા. ૧૩૨

(ઘેલી મને ઝીઘી શ્રી નંદજીને નંદે...એ...રાહ.)

આનંદરૂપ ભાવસિંહ બલે રાજે,  
સદાય જોડ્યા તણું શિરે સુછત્ર છાજે—ટેક.

કરે મહન કીર્તિ કોડથી સદા સુકાજે,  
પવિત્ર પ્રૌઢ ધર્મને ધરે સુપુન્ય પાજે;  
દિગન્ત લગી વિજ્ય વાઘ વિશ્વમાંહી વાજે. આનંદ.

રસિક રિદ્ધિ સિદ્ધિ સુખસંપત્તીને સાજે,  
અરિકરિની માંહિ સિંહ તુલ્ય રોજ ગાજે;  
રહે અનંત સૂર્યનું સુતેજ નિલ તાજે.....આનંદ.

કરે પરોપકાર અતિ સ્નેહને સમાજે,  
બચાવી વિપ્ર ગાય કરે પાપીનો પરાજે;  
હરોજ નેહધારી નથુરામને નિવાજે.....આનંદ. ૧૪૩

(કાનુડો ન જાણે મારી પ્રોત...એ...રાગ.)

રાણા તમારૂં રહું રાગ, રાગ રામ સરીખુંરે.—ટેક.

ધરમના રથંબ ધીંગા ધરપરેં ધાર્યા તમે,  
પુણ્યની બાંધી પ્રૌઢ પાજ.....રાગ રામ.

કીર્તિનાં કામો કરી હેતેં હકાર્યા તમે,  
જગજાં સુજશતણાં જાજ.....રાગ રામ.

દીનજનો ત.યૌં તમે સંતને ઉગાર્યા દુઃખથી,  
નીચેને કરીયા નારાજ.....રાજે રામ.

કવિ નથુરામ કહે ભાવસિંહ ભૂપ ભાવે,  
જીવે જાઝું જોડવાની માજ.....રાજ રામ. ૧૩૪

(શ્યામ રંગ સમીપેં ત જાવું...એ...રાહ.)

રોહનું સ્વરૂપ ભાવ ભૂપતિ સુહાગ ભર્યું—ટેક.

આંખમાં અમૃત સુખમાં વસે મધુ,  
રસભર અંતરમાં રતિ.....સુહાગ.

કરમાં નિવાસ કરી રહી કમળા,  
મનહર મોજભરી મતિ.....સુહાગ.

હૃદય ઉદાર જળે ભર્યું અવધિ,  
દાનના તરંગ દીએ અતિ.....સુહાગ.

કવિ નથુરામ કહે જીવજો જુગજુગ,  
પોરબંદરનો પ્રેમી પતિ.....સુહાગ. ૧૩૫

(છેડા છેડાને કાંના કહુંછું ક્યારની રે...એ...રાહ.)

ચાલો ચોંપથી ચતુરાં આનંદે આતીરે,  
નેહં નિરખવાને ભાવસિંહ ભૂપતીરે—ટક.

સુરજ આજનો ઉગ્યોછે હેતે હેમનોરે,  
છોળ્યું મારતો છલ્યો સમુદ્ર પ્રેમનો રે.....ચાલો.

મહદ આજ મોદ મંગળનો વાસછે રે,  
ઠામ ઠામ હર્ષ હાસ ને હુલાસછે રે.....ચાલો.

રૂઝા ઇન્દ્ર તુલ્ય આસને પિરાજતા રે,  
એવા છત્રપતી છટાભર્યાં છાજતા રે.....ચાલો.

જખર કેશરી સમાન ગુણે ગાજતારે,  
ગરવી હસ્તિતણી ગુમ થૈજતી સત્તા રે.....ચાલો.

પ્રેમરૂપને હરે પ્રીતિ પવિત્રછે રે,  
સલ સોના જેવું મિત્રતાનું મિત્રછે રે.....ચાલો.

એક રંગી ને ઉમંગી એનો ઠાઠછે રે,  
પૂરા યતની પવિત્ર પ્રેમ ગાંઠછે રે.....ચાલો.

કષ્ટ કાપવા કવિનાં એને કાઢછે રે,  
હેતે પાળવા ગરીબ હૈયે હોડછે રે.....ચાલો.

એનો નેમ રાખે ક્ષેમ પ્રભુ પ્રીતથી રે,  
આશિષ આપે નયુત્તમ ગાઢ ગીતથી રે.....ચાલો. ૧૩૬

(છેટાના છેયેં અમે છેટાના છેયેં—એ રાહ.)

શ્યામ સુન્દર આપો અભિરામ સુન્દર આપો,  
ભાવસિંહ ભૂપતિને શ્યામ સુન્દર આપો—ટેક.  
પ્રસરજે પ્રતાપ એના અવનિમાં અમાપો,  
હિતુ હસાવી હાલ ધરો શત્રુને શિર શ્રાપો...ભાવસિંહ.  
કરી શતાયુ સ્નેહ ધારી સરવ કષ્ટ કાપો,  
અતિ ભરો આનંદ કરી દૂર ત્રિવિધ તાપો...ભાવસિંહ.  
દંભી યુગલ ચોરને શિર ચરણુ ધારી આપો,  
વિવિધ વિનયના વખાણુ વિશ્વમાંહિ વ્યાપો...ભાવસિંહ.  
અહનિશ નૃપ હર ધરો શુદ્ધ પ્રેમ-છાપો,  
નિત કવિ નથુરામ જપે જખર સુન્દર જાપો. ભાવસિંહ. ૧૩૭

(મને મુઠીને ગયોછે મારો છેલડો રે...એ...રાહ.)

રંગે રાજતા રસીલે લેલી ળંગલે રે. (૨)...ટેક.

•ભાવધારી હાં હાં રે (૨)

મારા ભાવસિંહ ભૂપ, આનંદ રૂપ .....રાજતા.

ખિલી રજની રૂપાળી વદનશાખની રે, (૨)

અજો આંદો હાં હાં રે (૨)

અજો આંદલો આકાશે અમકદાર, ભરણુ પ્યાર. રાજતા.

છોળું મારતો સમુદ્ર સ્નેહ ધારીને રે, (૨)

આનંદ આપે હાં હાં રે (૨)

સારા સંગીતના સાદ, કરી વાદ.....રાજતા.

નાચે કુંચની કલિત કળાએ બરી રે, (૨)

કરે ખાંતે હાં હાં રે (૨)

ખાસાં જાડુતણા જેલ, મહમદ છેલ.....રાજતા.

કરે કાડથી કવિતા કીરતીતણી રે, (૨)

નેહધારી હાં હાં રે (૨)

નિત્યે કવિ નથુરામ, આનંદ ધામ.....રાજતા. ૧૩૮

(સસના નહિં થાય લગાર કામણ મંત્ર કશે...એ...રાહ.)

આબો આનંદ અવસર આજ, સાધન સુખકારી ;

રાજે ભાવસિંહ મહારાજ, ઉત્તમ અવતારી...ટેક.

સુંદર સુરતી મનહર સુરતી, રતિપતિજેવું રૂપ રે ;

પોરબંદરનો પાતશા બડ, ભય હરનારો ભૂપ.....સાધન.

અંબળ અપળ ચતુર ચિત્તવાળો, ચાહ ભયો ચિતચોર રે ;

રનેહે અશીસમ લાગે સામાં, નિત નિત નયન ચકોર. સાધન.

જગતમહીં રહ્યું જામી જેના, જળર સુજશનું જોર રે ;

વિક્રમ ભોજ સમો વરદાથી, મહિપતિનો શિરમોર...સાધન.

જ્ઞાંસગિ રવિ અશી ધ્રુવ ધર મેર, હરિ હર ભવિ દહ ધામરે ;

સાં ભગિ અમલ રહો આનંદે, કવિ નથુરામનો ક્યામ. સાધન. ૧૩૯

(સાહેબોજી રે ઘેયોછે ગુમાનમાં...એ...રાહ.)

પ્રીત રીત પાળેછે ભાવસિંહ જુપતી,  
રસિક રૂદે રાજતણી રીત રે.....પ્રીત...ટેક.

નેક ટેકવાળા પૂરા છો પ્રતાપમાં, (૨)  
નેહમર્યુ ચતુરતણું ચિત્ત રે.....પ્રીત.

સાચતણા સંગી ઉમંગી અનુપ છે, (૨)  
આપ દીસે ઉગતા આદીત રે.....પ્રીત.

જોસદાર જાણીતા જગત તમામથી, (૨)  
અખિલ રાજનીમહી અછત રે.....પ્રીત.

નેહમરી એવી આશીશ નયુરામતી, (૨)  
વિભવ લિયો નૃપતિ નિલ નિલ રે.....પ્રીત. ૧૪૦.

(મારું મન મોયું રે, નંદકુંવરને લટકે...એ...રાહ.)

અવિચલ રે'જો રે, ભાવ જુપાલ ઉમંગે ;  
રસમર રમતા રંગે.....અવિચલ...ટેક  
જહાન બધી જોરાવર છતો, જશ કિરતીને જંગે.....અવિચલ.  
મહદ અરીનાં મૂળ ઉખેડો, અડગ રહીને અંગે.....અવિચલ.  
ધન્દાસન કરતાં પણ અધિકાં, લ્યો સુખ રનેહી સંગે...અવિચલ.  
નિત નયુરામ ખચિત ખળ આરો, નાખી બાણ નિપંગે...  
અવિચલ. ૧૪૧

(આશા ભર્યા અમે આવિયાં...એ...રાહ.)

મનહર સુખકર રસભર રાણા, શુભધર ભાવ ભુપાલ રે;  
જુગ જુગ છવો તમે.....ટેક.

અચલ બિરાજજો પોરને પાટો, મહદ ધરી જયમાલ રે...

જુગ...મનહર.

જેઠવા જોધ જમાવો જગતમાં, વિધવિધ કીર્તિ વિશાલ રે...

જુગ...મનહર.

નેહ નિભાવણુ નૌતમ નરપતિ, પ્રેમીતણા પ્રતિપ્રાલ રે...

જુગ...મનહર.

પારસ પેઠે પ્રતાપી કરો તમે, નિત નથુરામને ન્યાલ રે...

જુગ...મનહર...૧૪૨

(આજો આનંદ અંગ અંગછે, પામે અમર અધિકાર.એરાહ.)

આવોને સહિયર સ્નેહથી, ગાઓને ગરબે ગીત;

ભાવ ભૂપાળને ભાવથી, દીઓ આશીષ રૂડી રીત...આવોને.

મેજતણા મેરાણુ છે, પ્રજામાથે રાખેછે પ્રીત;

દેવસમા દયાવાનછે, હૃદે હરદમ ધારેછે હીત.....આવોને.

અંખા ભવાની આણાપુરી, રાખે આનંદે કુંવર સહિત;

નિત આશીશ નથુરામ દે, ચોખું રાખીને ચિત્ત...આવોને. ૧૪૩



(મારું મન મોયું રે, શ્રીનંદકુંવરને લેટકે...એ...રાહ.)

શ્રીહરિ રનેહું રે, રાણાને સુખી કરો,  
 દેવ દયા દ્રગે દાખો .....શ્રીહરિ...ટેક.  
 પોરખંદરના પ્રતાપી પ્રભુને,  
 બાળી અરી ભય ભાંખો .....શ્રીહરિ.  
 ટાટ સુરજસગી કાન્તિ અરપી કરો,  
 અંધ અધમની આંખો .....શ્રીહરિ.  
 રસિક શિરોમણિ ભાવ લુપતી અતી,  
 નિત નવલાં સુખ આખો.....શ્રીહરિ.  
 પૂર્ણ કરો નથુરામના નાથના,  
 અંતરના અભિલાખો .....શ્રીહરિ...૧૪૪

(લલના નહિં થાય લગાર કામણ મંત્ર કરો...એ...રાહ.)

પ્રતિદિન પામે જય પૂર્ણ, રસવંતો રાણો ;  
 કરે અપળ અરી હર ચૂર્ણ, સહુ નૃપથી શાણો—ટેક.  
 કલિત લલિત કેકાણ કીરતના, ખૂબ ધરીને ખંત રે ;  
 ઉત્તર દક્ષિણ પૂરવ પશ્ચિમ, પહોંચે દોડી દિગન્ત.....રસવંતો.  
 મુયશ સરોરહ મગસરસીમાં, વિકસે વિધવિધ રંગ રે ;  
 ગુણી પદ્મ સૌરભ ગ્રહી ગાગ્રો, ગુણગુણ શુભ સુરસંગ...રસવંતો.

વાસવસમ વિભવો વસુધામાં, ભોગવે ભાવ ભુપાલ રે ;  
સ્નેહીતણા ઉરે શાંત કરી, ધરી શત્રુતણે ઉર સાલ.....રસવંતો.  
પારથતુલ્ય પ્રતાપ પરાક્રમ, પ્રસરો પુહુમીમાંય રે ;  
આશીશ કવિ નયુરામ દિગ્ધે, રહો હાથ હુમાયુ હાંચ.....રસવંતો.  
૧૪૫

(આરા આવોતો કહું વાતડી, બીહારીલાલ...એ...રાહ.)

ખારા અમારા પ્રાણુ છો,	ભુપાલ ભાવ.
જેઠવા ચતુરસુગળુ છો,	ભુપાલ ભાવ.
પોરબંદરના છો પતી,	ભુપાલ ભાવ.
રાણા રાખોછો સદા રતી,	ભુપાલ ભાવ.
ચંચલ ચિત્તના ચોર છો,	ભુપાલ ભાવ.
માનીતા અમ શિરમોર છો,	ભુપાલ ભાવ.
કોડીલા કલ્પતરૂ તમે,	ભુપાલ ભાવ.
હાંચામાં મુખીયાં સહુ અમે.	ભુપાલ ભાવ.
અવની ઉપર તમે ઇન્દ્ર છો,	ભુપાલ ભાવ.
શાન્તિદાયક ચારૂ ચંદ્ર છો,	ભુપાલ ભાવ.
આપને નેણે બર્થુ અમી,	ભુપાલ ભાવ.
રૂદ્ધકમળમાં રહ્યા રમી,	ભુપાલ ભાવ.
અંતરયામી અનુપ છો,	ભુપાલ ભાવ.
અમને તો મધુર રૂપ છો,	ભુપાલ ભાવ.
કવિ નયુરામના સ્વામ છો,	ભુપાલ ભાવ.
આનંદરૂપ અભિરામ છો,	ભુપાલ ભાવ.

(જમો તો જમાડું રે, જીવન વાલા...એ...રાહ.)

આપ આહીં આવો રે, રાણાજી રૂડા ;

હૈલા હર્ષ ભાવો રે.....રાણાજી રૂડા...ટેક.

બહાલા મારા મોટા મંગલ વરતાવો,

ભુપાલ ભાવ ભાવો રે.....રાણાજી રૂડા.

ચિત્ત માફ રે'છે તમોમાં ચોટી,

નથી વાત જોટી રે.....રાણાજી રૂડા.

જેઠનાજી જેઠને જરાક ધર્મધારી,

હું આપની છું નારી રે.....રાણાજી રૂડા.

શ્યામ નથુરામતણા સ્નેહસિન્ધુ,

હો આપ દીનબંધુ રે ... રાણાજી રૂડા. ૧૪૭

(જાઓ જાઓ જાઓ રે...એ...રાહ.)

પ્રાણુછો પ્રાણુછો પ્રાણુછો રે, પતી પ્યારા અમારા પ્રાણુછો ;

ભાવ તમે જગ બાણુછો રે, પતી પ્યારા અમારા પ્રાણુછો—ટેક.

ચિત્ત ચોરી કરનારા અંચલ, (૨) રસિક શિરોમણિ રાણુછો રે. પતી.

મીઠાં વચન રચના કરવામાં, (૨) શાણા ચતુરસુખણુછો રે...પતી.

પોરબંદરપતી પ્રેમીજનોને, (૨) આપ અમૃતની ખાણુછો રે...પતી.

કવિ નથુરામને તારવા તંતે, (૨) બહાલા તમે વર બહાણુછો રે...પતી.

(રવી ઉદે આ ઘડીયે થાશે, ઉલટા કૃષ્ણ રિસાશે.એ.રાહ.)

પોરપતી છો પ્રાણુથી ખ્યારા, નેણુતણા છો તારા;  
રયામ અમારા રે ભાવ, હુપાલ તમે.....ટેક.

હીરતિ સુરતશ્વરના ક્યારા, સુંદર સુખ કરનારા ;  
અમૃતધારા રે, ભાવ હુપાલ તમે .....પોરપતી છો.

ખાવીદના બોલું કદિ ખોટાં, ચંચલ ચિત્તમાં ચોટયા ;  
મહીપતિ મોટા રે, ભાવ હુપાલ તમે.....પોરપતી છો.

નિરખી તમેને નિત દુઃખ નાશે, પંકજ હૃદય પ્રકાશે ;  
વિવિધ વિકાસે રે, ભાવ હુપાલ તમે.....પોરપતી છો.

કવિ નથુરામ ગણે ગુણુગાણાં, રોજ તમારા રાણા;  
શૂરવીર શાણા રે, ભાવ હુપાલ તમે.....પોરપતી છો. ૧૪૬

( વાલમજી ઉઝગરો દિસે આજ...એ...રાહ. )

શીખ્યા ક્યાં જન્મ નૃપ શાણા આજ, કરવા ચિતડાંની ચોરી,  
કહો સસ મને મહારાણા આજ, જોઠવા છો જીવાદોરી.....ટેક.

ગુર કોણુ મળ્યો કહો ગુણુધારી, શિખવી જોણે વિધા સારી ;  
વાતોમાં વાલમ રસ રાખ્યો, મોહન મંતર નેણે નાખ્યો ;  
નહિ જોણે ભામિનીઓ બોળી, શિર નાખોછો ભુરખી દોળી;  
જાડુગર જખર જણાણા આજ, કરવા ચિતડાંની ચોરી...શીખ્યા.

મનહરજી હો સહુથી મોટા, નથી જગમાં આપતણા જોટા ;  
ખાંધો પ્રીતી બંધન નાખી, રહિ સ્યામનીઓ સરવે સાંખી ;  
ભય હરનારા નૃપ ભાવ તમે, વશ આપતણે છઈં સર્વ અમે ;  
નયુરામ કવીના નાણાં આજ, કરવા ચિતડાંની ચોરી. શીખ્યા. ૧૫૦

(પડવાની પણ પ્રીત, ગતી મતી ભૂલી રે...એ...રાહ.)

પ્રીતે પરગટીયું પરમાત, જીવન જાગો રે,  
ખોલે કુરકટ ચક્રવાં કાક, નિંદરા લાગો રે;  
થયો અરુણ ઉદય અધિરાજ, આજ અકાશે રે,  
ધરી પંકજ પરમ હુલાસ, પ્રાણ પ્રકાશે રે.  
ભજો વેદ વિપ્રોના બાળ, ઉચે અવાજે રે,  
ઠરી ઝાલરીયો ઝણકાર, વિધવિધ વાજે રે;  
બલાં ભેરી તુરીને શંખ, ગહરાં ગાજે રે,  
રૂડાં દેવમંદિર દરસાય, દરશન કાજે રે.  
ઉમા બંદીજનો બહુ દાર, મળીને ટોળે રે,  
જેઠી કુળનાં જાહીર, બિરદો ખોલે રે;  
વળી બહાલે રાગ વિભાસ, ગુણીગણ ગાયે રે,  
દાસો કરવા દેદાર, દિલ લલચાયે રે.  
તમ કારણ છે તૈયાર, દાતણ હુલ્લા રે,  
છે દંતમંજનના ખૂન, ડબ્બા ખુલ્લા રે;  
તનમંજન ગાટે તેલ, પુશ્પબોવાળાં રે,

છે સાંધુ સુગંધીદાર, રંગ રૂપાળા રે.  
હાજર જળ ગરમ હજૂર, સુવરણ કળશ રે.  
નવરાવું મારા નાથ, હાથથી હરખે રે;  
અંગાછે લૂધું અંગ, હું હિતધારી રે,  
કરું સ્નેહ ધરીને સેવ, દાસી તમારી રે.  
તજ આજસ ઉઠો આપ, પ્રીતમ ખારા રે,  
ભયહારી ભાવ ભુપાલ, દ્રગના તારા રે;  
કરો કોડ દિવાળી રાજ, પોરને પાટે રે,  
નથુરામ ગણે ગુણ નિલ, વાટે વાટે રે.

૧૫૧

(હરી વેણુ વાચછે રે હો વનમાં...એ...રાહ.)

પ્રેમથી પોઢો રે હો ખારા, સુખકર સુંદર શ્યામ અંધારા.  
હેમ હિંડોળે રે હો હરજી, જીવન જળવું આપની મરજી.  
હું હોંચોળું રે હો હેતે, શ્યામ સલુણા નેહ નિકેતે.  
ધરી કર પંખો રે હો ધીરા, ઢોળું વાય હૃદયના હીરા.  
રસીક અવાજે રે હો રાણા, ગાઉ મધુર તમ ગુણ ગાણા.  
ચાઓ સુંખાળવા રે હો સ્વાગી, ભાવ ભુમીપતી અંતર જામી.  
જીગજીગ જીવો રે હો જગમાં, મનહર મોજ કરો સુખ મગમાં.  
પોરખંદરના રે હો ખારા, કવી નથુરામના અમૃત ક્યારા. ૧૫૨

(કાન તારી મારલીએ હ રે...એ.. રાહ.)

પ્રાણ આવો ઉતાવળા હ રે, મળવા મુદ્ધારી.

હવન પ્રાણછો હ રે, આનંદ ખાણછો હ રે;

ભૂપાલ ભાવ બચહારી.....ટેક.

મારૂં તન મન તલકે હ રે, એન ચિત્ત બચ હારી.

ધર ગમે નહોં હ રે, દુઃખ શમે નહોં હ રે;

ભૂપાલ ભાવ બચહારી.....પ્રાણ આવો.

જેવા હવડો જાંખે હ રે, હર આનંદકારી.

મધુરી મૂરતી હ રે, સુંદર સૂરતી હરે;

ભૂપાલ ભાવ બચહારી.....પ્રાણ આવો.

કર્યા કામણુ કાંતો હ રે, આજ તમે આવતારી.

મન મુંઝાયછે હ રે, કંઠક ચાયછે હ રે;

ભૂપાલ ભાવ બચહારી.....પ્રાણ આવો.

નથુરામના નાથ નીત હ રે, પ્રીત પાજો પ્યારી.

દર જશો નહોં હ રે, અહીં વસો સહી હ રે;

ભૂપાલ ભાવ બચહારી.....પ્રાણ આવો.

(રંગમાં રંગમાં રંગમાં રે, મારી ઘોઘર ખેલે રંગમાં. ઝેરાહ)

જેયા જેયા જેયા રે, મહારાણાને જગમાં જેયા.—૨૬.

પેખતાંવેતજ કવી ગુણી પંડિત, મગન થઇ મન મોયારે...મહારાણાને.

દેવ સમા ગુણુ દેખીને દિલમાં, રાક્ષસ અરિઓ રોયારે...મહારાણાને.

બહુજ અદાનીનાં અંતર બળાયાં, ખોટા નરોએ ગર્વ જોયારે. મહારાણાને.

નિત નથુરામે ભાવને ભાળી, ખીજ સુખોનાં ખોયારે...મહારાણાને.

૧૫૪

(હો રંગરસીયા ક્યાં રમી આવ્યા રાત જો...એ...રાહ.)

પ્રીતમ પ્યારા પ્રાણુતણા આધાર જો,

આંખડલીથી આધા નાથ નહીં થશો;

હાજરહું હું હરખડી હૈયાહાર જો,

આકરી આકરી સોંપી કામિનીને કસો. આંખડલી...પ્રીતમ.

ઠહાલા નથી ગને કાંધ વધારે આપથી,

અરપણુ કરીયાં તમને તન મન પ્રાણુ જો;

અરધ સરીર પણ અરખું દુનિયાં દેખતાં,

શું રહ્યું બાકી સમજો વાત સુભણુ જો. આંખડલી. પ્રીતમ.

જગત બધામાં તમ સમ હું જોતી નથી,

શાહ વજર કે છોતે હોય અમીર જો;



આપ વિના એ સહુને હું એવા ગણું.

જેવા ફરતા એળી રાખ ફકીર જો. આંખડલી. પ્રીતમ.

માની વચન મુજ મનગમતે નહિં માણું જો,

વિનતિ કરું વાલમ જોડી હાથ જો;

મામનીના ભય હરજો ભાવ ભૂમીપતિ,

નિલ આગળ રહી કવી નથુરામના નાથ જો. આંખડલી. પ્રીતમ. ૧૫૫

(પુનમ ચાંદની ખીલી પૂરી અહીં રે...એ...રાહ.)

છાંયા છત્રપતી મહારાણા મનની મોજથીરે,

ભવ્ય લઈ ભાલો કરમાંડી ભાવ ભુપાલ;

એસે ખંતેં શુરવૌર ખૂબ શિકાર વરાહનોરે—ટેક.

હતમ અશ્વપરેં અસવાર થમ આનંદથીરે,

સાજી સાજ વિવિધ આખેટતણાં ધરી બહાલ...એલે.

ગિરિગૃહ ખોદી ગાજતો, દેતો દોટ દિગન્ત;

ભયપ્રદ ભૂરા વર્ણનો, મદભર મોટે દન્ત.

એવો એકલમલ કરી આગળ પાછળ પ્રેમથીરે,

દોહ્યા દેવ દયાલુ કરવા એનો કાલ.....એલે.

ધોજો ધરા ધ્રુજવતો, ખુરિ ખડતાલ અતૂલ;

મૂરખ પડતો માદજો, ભલી આપવા ભૂલ.

પથર કેરા ખંડ કરે દોડતો તુડથીરે,

તંતે નાસે તોડી જળર તરની જલ.....એલે.

છેડો છેલ ન છોડતા, વધારતા હયવેગ;  
 ભરાય મેળા તોય પશુ, હણે ન તાણી તેગ.  
 માલા વિષુ નહિં પાવ કરે ખીળ હથીમારનોરે,  
 ખટકે તોપશુ પટકે પોરતણા પ્રતિપાલ.....ખેસે.  
 અપટં ભઘને જોઠવે, ભાલો હણ્યો વિશ્વાલ;  
 અરિર સૂરતું મેદિને, મેલો જુમી ચાલ.  
 જીવો જાણું જગમાં નાય કવી નથુરામનોરે,  
 રાપી રસભર કંઠે વિજયતણી વર માલ.....ખેસે. ૧૫૬

### રાસડાઓ.

(પોરખંદરના રાજા જ્યાં ઉતરે ત્યાં ડંકો જો...ઓ...રાહ.)

આવ્યો અમારે આ નંદનો દિન આજ જો, (૨)  
 પોરપતીની પાસે રહી સુખ પામશું રે.—ટેક.  
 શાણો રાણો છે પૂરણ પારસરૂપ જો, (૨)  
 હેમ બનીને હૃતે વિપત્તિઓ વામશું રે.....આવ્યો.  
 દરશન જેતું દુઃખહર દેવ સમાન જો, (૨)  
 સેવા કરીને સાચી જગતમાં જામશું રે.....આવ્યો.  
 વિક્રમ ભોજ ને કરણતણું નથી કામ જો, (૨)  
 ભાવ ભુપાલને ભજી કરોડ ધન કામશું રે....આવ્યો.  
 હર નથુરામનું માની ખેહુંજે આમ જો, (૨)  
 છાંયાપતીની છાંયે વિશેષ વિરામશું રે.....આવ્યો. ૧૫૭

(ભોર બોલે મોહન મહારાજ રે...એ...રાહ.)

ગુણ ગાઓ સદ્ ગુણી લોક રે, ભાવ ભૂપ કુશ રે;  
શીદ ખીજે ફરોછો ફેક રે, મારતા ફેરા રે. ટેક

નથી દાની આવો ધરી દેહ રે, જગતમાં જયો રે;  
આપી સુવરણ દાન અછેહ રે, કરણ કે'વાયો રે....ગુણ.

નિત તારેછે ધારી તંત રે, દીન જનો દેખી રે;  
અધા મહીપતિમાં છે મહંત રે, એક નેક ટેકી રે...ગુણ.

જશધારી છે જોઠવો રાજ રે, બય હંરનારો રે;  
કરે કાડે રૂપાણાં દાજ રે, પોરનો પ્યારો રે.....ગુણ.

હુમા હાંયા સરીખો હાથ રે, કામમાં ન કાચો રે;  
નથુરામ કવીનો નાથ રે, સુરપતી સાચો રે.....ગુણ. ૧૫૮

(ભમરા મોતી મયરના રાજમાં...એ...રાહ.)

સહુ જન ઉઠી સવારે રોહે, રાણાને સંભારજો રે લોલ.—ટેક.  
ધારી ધ્યાન પ્રભૂનું પ્રીતે, ધીરાનું ધારજો રે લોલ.....સહુ.  
એ છે આજ અમર અવતાર, જોષ દ્રગ ઠારજો રે લોલ. સહુ.  
હળામળી હેતે હરોજ એ માયેયિ, તન ધન વારજો રે લોલ. સહુ.  
બયહર ભાવ અમર છે એવું, અંતરમાં ઉતારજો રે લોલ. સહુ.  
નાથ નથુરામનો નેહી નિભાવેછે, વાત વિચાર જો રે લોલ. સહુ. ૧૫૯

(આ કાંઠે ઘડો ચડાવ રે...એ...રાહ.)

પોરતણા પ્રતીપાલ રે,

ભાવ ભૂપ ભારે છો પ્યારા.....પોરતણા.

હીરા માણિક્યી હોયશું, (૨)

આપ પતિ પ્રાણ અમારા.....પોરતણા.

કેવનથી કેહો કામશું, (૨)

નાથ તમે નેણાના તારા..... પોરતણા.

પ્યારો તમારો પ્રેમછે, (૨)

નેણુ થકી થાઓ ન ન્યારા.....પોરતણા.

કવી નયુરામ કહે ખરૂં, (૨)

ક્ષેમ રહો ખાંતીલા મારા.. ....પોરતણા. ૧૬૦

(એક આક ઝડી, લીલાં લીંબ ઝડી...એ...રાહ.)

મારા પ્યારા પતી, છો મહાન મતી,

દીસો દાની અતી, રતીવંતા રે;

ભૂમીપતિ ભાવ તમે,

રાણાજી રસવંતા રે,

મહાં નિત ભાવ અમે.....મારા.

હિતુ પાલક છો, દુઃખ ટાલક છો,  
 ખમ્મ જાલક છો, મોટા માલક છો,  
 કવી નયુરામ તથા.  
 પોરના પ્રતિપાલક રે,  
 જીવો જગ વર્ષે ધણા.....મારા.

૧૬૧

(ઓરા આવો તો કહું વાતડી, બીહારીલાલ...એ...રાહ.)

રાણાજી છો રસવંતા,	ભુપાલ ભાવ.
હેતે મળો હરખંતા,	ભુપાલ ભાવ.
છત્રધારી છો છેલા,	ભુપાલ ભાવ.
પ્રથવીપતિમાં પેલા,	ભુપાલ ભાવ.
મકરધ્વજ કુળે મોટા,	ભુપાલ ભાવ.
ખળને કરતા ખોટા,	ભુપાલ ભાવ.
પોતાનાં જન પાળો,	ભુપાલ ભાવ.
ખેડમાનીને બાળો,	ભુપાલ ભાવ.
જુગજુગ જેઠવા જીવો,	ભુપાલ ભાવ.
દેવઅંશી કુળ દીવો,	ભુપાલ ભાવ.
શુભ નયુરામના સ્વામી,	ભુપાલ ભાવ.
કીર્તિ જગતમાં જામી,	ભુપાલ ભાવ.

૧૬૨

(પાણીણાં ભરવા ગ્યાતાં...એ...રાહ.)

આનંદ મંગળેથી રાત્રે—ભુપાલ ભાવ. (૨) ટેક.

અંગે આરોગ્ય રહો એતો અહોનિશ,  
છાંયાતું છત્ર ધરી છાત્રે—ભુપાલ ભાવ.....આનંદ.

જેઠવા કુળનું જોર જણાવી,  
ગાઢા અરીમહીં ગાત્રે—ભુપાલ ભાવ.....આનંદ.

વિવિધ વિલાસ-લષ્ટ વસુધાપર,  
શકસમાં સુખ સાત્રે—ભુપાલ ભાવ.....આનંદ.

કવિ નયુરામની કામના પૂરી,  
નિત નિત નેહે નિવાત્રે—ભુપાલ ભાવ.....આનંદ. ૧૬૩

(સોના ઇંદોણી કૃપા મેડણું રે જીવો રાજ...એ...રાહ.)

આનંદ મૂરતી આપણે રે ભાવ ભૂપ,  
પ્રીતીના પારાવાર રે કૃપાનિધાન;  
અવનીમાં આપ અમાપણે રે ભાવ ભૂપ.....આનંદ.

મેજી મેરામણુ એકણે રે ભાવ ભૂપ,  
આપોણે હાયથી અપાર રે મહાન દાન;  
ટેકીલા ધારણુ ટેકણે રે ભાવ ભૂપ.....આનંદ.

જેઠવા રહો જશો જમાવતા રે ભાવ બૂપ,  
 જણુછે આપને સદાય રે સહુ જહાન;  
 નિલ નયુરામને નિમાવતા રે ભાવ બૂપ.....આનંદ, ૧૬૪

(સખી મેં આંદલીયો ચોડયો...એ...રાહ.)

પ્રીત ધરી પોરખંદરમાં આજ,  
 રાજ કરે રસવંતા રાણા રે;  
 ભાવ છુપ જોરે બર્ધા જેઠવાની માજ,  
 રાજ કરે રસવંતા રાણા રે.....ટેક.

જેણે હઠાયો જહીર જશનાં જાજ, (૨)

દીસ દીસ પો'આ ગુણી દોડીરે,

કીરતન કીરતિનાં જોડીરે;

ધર ધર ગાયે સરવ ગોરીરે,

ગુણુ જેઠવાનાં મરવ છોડીરે.....પ્રીતધરી.

દેહ ધરી કોષ. આબ્યાછે દેવ દરાજ, (૨)

દીન દીન દાનો દીએ મોટારે,

નહીં રહે લક્ષ્મીના તોટારે;

જગમાં નથી એના જોટારે,

નથી નયુરામે ક્યાં જોટારે.....પ્રીતધરી. ૧૬૫

(હું રે મૈયારણ રે, ગોકુલ ગામની...એ...રાહ.)

ધારા અમારા રે, ભાવ ભુપાલ છો;

છાંયાતણા છત્રધારી, અમારા રે.—ટેક.

મોટી અમારી રે, આનંદમાલ છો;

આપ અમર અવતારી.....અમારા રે.

બેડુ બણેલછો રે, પ્રેમની પોથીઓ;

શાણા રાણા સુવિચારી.....અમારા રે.

બણેલછો બળવી રે, જોડવા જુગતી;

ધીરા અચલ ધર્મધારી.....અમારા રે.

કવી નથુરામના રે, શ્યામ સોહામણા;

નિરખું સરવ ગતી ન્યારી.....અમારા રે. ૧૬૬

(ઝીણા ઝરમર વરસે મેહુ...એ...રાહ.)

રૂડા નરવર રસમર રૂપ,

મનહર મહારાણા;

બલા બચહર ભાવસિંહ ભૂપ,

મનહર મહારાણા.—ટેક.

અધધડી આંખધડી અલબેલા,

રાણા ફરે નહિ રેંશો રે;



કામ ખુશી ચર્ષ ખાવીંદ મારા,  
કોડેં કરવા કે'શે રે.....મનહર.

સાણા ગમે મને આપની સેવા,  
મેવા કરતાં મીઠી રે;  
હીજત એ સમ ચીજ અવરની,  
હુનિયામાં નથી દીઠી રે.....મનહર.

આપ પ્રભુ અમ અંતરજામી;  
અમે તમારાં દાસ રે;  
નિત નથુરામની નમ્ર અરજથી,  
ધારા રહેજો પાસ રે.....મનહર.

૧૬૭

(આઠ કુવા નવ પાવઠાં, જળા હરવા દો...એ...રાહ.)

પોરબંદરના પાતશ્ચા, રસભર રાણા. (૨)  
તમે ભાવ જોરાવર ભૂપ રે, આનંદ રૂપ;  
દેવ સમ દરશાણા.....પોરબંદરના.  
જહાલેં પ્રેમીને રૂદે વશ્યા, રસભર રાણા. (૨)  
મુખ આપો સરવને સ્યામ રે, મંગલ ધામ;  
સહુ નૃપમાં સાણા.....પોરબંદરના.  
કરી દુષ્ટજનોની યુરી દશ્યા, રસભર રાણા. (૨)  
કરી અંતર આનંદ ધામ રે, નિત નથુરામ;  
ગાય ગુણનાં ગાણાં.....પોરબંદરના.

૧૬૮

(ઝગડો લાગ્યો...એ...રાહ.)

વાલમજી વાલાછો હો અમારા પ્રાણપતી,  
મહાનમતી, રતીપતી, છાંયાના છત્રપતી. (૨)  
અમારે ઊર અતી, વસ્ત્રાછો પોરપતી. (૨)

વાલમજી.

વડા દિલવાળાછો હો કરો ક્ષીત કતી,  
ભાવપતી, રાખીરતી, નીકા નૃપ ધારિ નતી. (૨)  
ધરી નયુરામ ધૃતી, કરે કીરતીને છતી. (૨)

વાલમજી: ૧૬૯

(ધરે વાઠું જુએ માં મારી...એ...રાહ.)

તમે રાજો રસીક મહારાણા,  
છાંયાના છત્રપતી ભાવ અતી—ટેક.

તમે આનંદી ને અવિકારી,  
તમે ધીરા અચલ ધર્મધારી.....છાંયાના.

તમે દીનના છો દુઃખહારી,  
તમે જાણા રાણા સદાચારી.....છાંયાના.

તમે પ્રીતીની પ્રતિમા પ્યારી,  
સહુ રીતી તમારી ન્યારી.....છાંયાના.

નયુરામે સખળ સ્નેહ ધારી,  
અતી આનંદિ વાણી હિચારી.....છાંયાના. ૧૭૦

(આવ્યા રૂડા ચોમાસાના દાડલા રે...એ...રાહ.)

જેઠવાળ જોજો ચોમાસું આવિયું રે,  
 નિલ નભમાહો ચડે ધમધાર;  
 ભુપાલ ભાવ રાજો રસીક બની રંગમાં રે,  
 વિજળી ચારે દિશા ચમકતી રે,  
 ગરજો વાદળ જમાવી જોર;  
 ભુપાલ ભાવ રાજો રસીક બની રંગમાં રે.  
 વરસે મૂશળધારા મારતો રે,  
 ચલવે વારીને ચારેકાર;  
 ભુપાલ ભાવ રાજો રસીક બની રંગમાં રે.  
 કર્વી નથુરામતણા રૂડા કંથળ રે,  
 વરપા વિતાવો કલીત કરોડ;  
 ભુપાલ ભાવ રાજો રસીક બની રંગમાં રે.

૧૭૧

(મેઘવાળ જુના તે ગઢની રાણી...એ...રાહ.)

સખી મને પોરપતી અતી પ્યારા,  
 રાણાજી નેણતણા તારા રે.....સખી—ટેક.  
 પ્રેમરૂપ પૂરું અનૂપ ભૂપ એ છે,  
 સ્નેહીને સુખ ભરનારા રે.....સખી.  
 ધર્મ કરી ભાવ ભૂમીપતી બારે,  
 ભૂમીનો ભાર હરનારા રે.....સખી.

જેઠવાના ઝાઝા જશો જગમાહે,

રોકે સાગરના કિનારા રે.....સખી.

નાથ નથુરામતણા નિલ નિલ્યે,

નેહૈથી ન્યાસ કરનારા રે.....સખી. ૧૭૨

(ગુલાબનાં રાતાં ફૂલ...એ...રાહ.)

આનંદના ઉદ્ધી આપ, રાજે રસીલા રાણા—ટેક.

તમે શોભો સરવમાં સુખદાતા, પરી પૂરણ છાપ પ્રતાપ.....રાજે.

જશ જામ્યો તમારો જેઠવાણ, અવનીમાંહિ આજ અમાપ...રાજે.

તૃપ મંડલમાં મહતા લીધી, દષ તને અરીને તાપ.....રાજે.

તમે ભાવ ભુમીપતી છો ભારે, નથુરામ જપે જશ જાપ.....રાજે.

૧૭૩

(ખેડલે ભાર ધણે હો રાજ...એ...રાહ.)

ભાવ મહારાણા રસીલા રાજ, મારે ઉર વસીયા શિરતાજ—ટેક.

છવો જુગોજુગ જેઠવા, આ અવનીમાં આપ;

પાપી પૂરપના પ્રાણુ લપ્પ કરો, પૂરો એને પરિતાપ...ભાવ.

કોડ દિવાળી રાજ કરો તમે, તાજ રહીને તન;

મોટી મહીપતી માજ સદા, કહેવાવો ધરામાં ધન્ય...ભાવ.

અગણિત ગુણીને તારો ઉમંગે, દુઃખ જળથી અદિ દાય;

બોજ વિક્રમશા ભાવે બનો, નથુરામ કવીના નાથ....ભાવ. ૧૭૪

(ધન ધન ગોકુલની મૈયારણુ...ઐ...રાહ.)

ધન ધન પોરણંદર પ્રિય ગામ, જ્યાં ભાવ લુપાલછે રે લોલ.  
 મનહર સુખકર નૌતામ નામ, વિવેકી વિશ્વાલછે રે લોલ.  
 રસભર રાણાકુળે છે રૂપ, અનુપ આનંદનું રે લોલ.  
 સહુ પ્રિયજનને અમૃત કૂપ, દરશ સુખ ચંદનું રે લોલ.  
 સાગર સરખા શુભ ગંભીર, અતી ગુણુજલછે રે લોલ.  
 ધરતા મેરૂ સરખી ધીર, પ્રભનાં પ્રાણુછે રે લોલ.  
 ચલવિયાં જોણે જશનાં જાજ, જગતમાં જોરથી રે લોલ.  
 ખળદળ ખોટા દંભો દરાજ, ક્રુધ્યા જયશોરથી રે લોલ...ધન ધન.  
 ઐ અવનીમાં છે ઐકારે, દેછે નભને ટેકા રે.  
 ભારથમાં ભડછે ભારી રે, જઈએ ઐપર વારી રે.  
 વિદ્યેમથી દાનો વધારે રે, શું કહું વારે વારે રે.  
 નરદેહે દેવ દયાળુ રે, મહિપતિ છે માયાળુ રે.  
 છે પારસ તુલ્ય પ્રતાપી રે, છાપ જગતમાં છાપી રે.  
 નિત સુવરણુ દાનો આપે રે, કષ્ટ કવીનાં કાપે રે.  
 રાણા જીએ નહીં લોભીનું સુખ, દેછે કૃપણને કાઠેથી દુઃખ.  
 ભાવે જનોની ટાળેછે ભૂખ, સારાં જનોને આપેછે સુખ.  
 જોઠે જયમય કીધું જહાન, છતાં ન રાખે મનમાં માન.  
 આશીશ આપી આઠે જામ, કરે કવીતા કવિ નયુરામ...ધન ધન.

(સામે ઓરડીયે નાગજી પોઠવા...એ...રાહ.)

જહીર ઊરમાં જઠવા ધારે,  
મોહની મોટી માળ.....મહારાણા.

રાણાજી જશ્ન જગમાંહી જમાવે,  
સજ્જનની ક્યો સ'માળ.....મહારાણા.

મારા અંતરીયામાં આપ બિરાજે,  
બહાલા વિવેકી વિજ્ઞાળ.....મહારાણા.

સ્નેહીતો સ્નેહ સદાયે નિભાવે,  
પ્રેમના છો પ્રતીપાળ.....મહારાણા.

અંતર માફે ઠરેછે અતીશી,  
રસિકતાણા રખવાળ.....મહારાણા.

હો નયુરામના નામજી નીકા,  
મમદર ભાવ ભૂપાળ.....મહારાણા.

૧૭૬

(સવળી ગંગા અવળાં નીર...એ...રાહ.)

જળરા જોડી કુળમાં આપ,  
પ્રસયો રાણા પૂર્ણ પ્રતાપ.  
હનમત વંશમહી અવતંત્ર,  
શની દેવતાણા હો અંશ.

અગણિત શુભ પરમારથ કામ,

ભૂપ કરો બહુ ખરચી દામ.

પુણ્યતણી ખાંધાછો પાજ,

રાજ રહી મહીપતિની માજ.

ગુણીજન જશ જોરેથી ગાય,

ચિતમાં સાઈં સરવે ચ્હાય.

નરપતીમંડળમાં અતી રે, કીરતી ગતી કરતી ;

આનંદધારીને અતી રે, વસ્ત્રધામાં વીચરતી.

શ્વેત ક્યું જગ સ્નેહથી રે, સહુ સ્યામતા ટાળી ;

તરણીતનુજ બાગીરથી રે, એકરંગની બાળી.

સ્વામ ને રામનું પારખું રે, કરતાં શક આવે ;

પોરપતી તમ કીરતી રે, જાડુ ખૂબ જમાવે.

ભાવ ભૂમીપતી ભાવથી રે, નથુરામના સ્વામી ;

હવે જુગોજુગ જોઠવા રે, સહુ વાધીઓ વામી ... ૧૭૭

(હિતારા ઓરડા મેડીનાં મોલ છે...એ...રાહ.)

ભાવ સુપાલ બયહારી પ્રજના, (૨)

પોરતણા પ્રતીપાલ; રાણા રસીલા.

રાજે રસીકવર રૂડા રવીસમ, (૨)

વિવિધ પ્રતાપે વિશાલ; રાણા રસીલા.

છાંયાતું છત્ર ધરી છાંને છપીલા, (૨)

કરીને અરીતણા કાલ; રાણા રસીલા.

ભમે જગતમાં જોરેથી જોઠવા, (૨)

ભડી ધરી જશ ભલ; રાણા રસીલા.

આનંદ હ્યો અવનીમાં અહોનિશ, (૨)

નેહીને કરતા ન્યાલ; રાણા રસીલા.

નિત નથુરામ ગુણુગાયક આપનો, (૨)

સ્નેહેથી રાખો સંભાલ; રાણા રસીલા.

૧૭૮

( જળ સહુ તો ભરવા ના દીધે...એ...રાહ. )

સુખે રાજે છાંયાના છત્રપતી,

તમે આનંદરૂપ અનૂપ રે; રસવંતા રાણા.

તમે રાજે રતીપતીરૂપ રે, સહુ નૃપમાં રાણા.

ધરાપીઠે ધરમની ઢાલ તમે,

કીધા ચોર ચુગલને ચૂપ રે; રસવંતા રાણા.

રવીરૂપે રઘાહો રાજ સદા,

ધરો ધીંગા અરીશિરે ધૂપ રે; રસવંતા રાણા.

ગુણુ ગાયે ગુણીગણુ ગર્વ ધરી,

કોડિલા તમે કળાકૂપ રે; રસવંતા રાણા.

તમે નાય કવી નથુરામતણા,

તમે ભાવ અટંકા ભૂપ રે; રસવંતા રાણા.

૧૭૯



(સાહેલી મારી રે, ગોકુલ તે ગામને ગોદરે રે...એ...રાહ.)

સાહેલી મારી રે, ચાલો સરવ રનેહં બરી રે ;  
 રૂડા જોવાને ભાવ જુપાલ...મહારાણા બિરાજે મોજથી રે.  
 સુખદાઇ સારી રે, પ્યારી મનોહર મૂરતી રે ;  
 હરી જોવું હૃદય છે વિશાલ...મહારાણા બિરાજે મોજથી રે.  
 ચાર ચિત્તહારી રે, શોભે જુજો ગજસુંદશા રે ;  
 કંઠ મોટી વિજયની માલ...મહારાણા બિરાજે મોજથી રે.  
 જાંઘ વારી વારી રે, મીઠાં વચન સુણી સર્વદા રે ;  
 બાળી ભવ્ય અનૂપમ માલ...મહારાણા બિરાજે મોજથી રે.  
 ખુખી એની ન્યારી રે, નાય કવી નથુરામના રે ;  
 પોરબંદરના પ્રતિપાલ...મહારાણા બિરાજે મોજથી રે.....૧૮૦

(વાંસળી વગાડી વાલે વનવાસ લીધાં...એ...રાહ.)

પ્રેમનો પીયાલો પાછ પરવશ કીધાં,  
 ભાવ જુપાલ પ્રાણપ્યારા, જખર જાદુગાર,  
 છાંયાતણા છત્રપતી છે.  
 હેત બતાવી વહાલે મન હરી લીધાં,  
 રાખ્યા સેવામાં સાથે, અલીને હાથે,  
 છાંયાતણા છત્રપતી છે.  
 આપ્યો આનંદ અવનીમાં અનોખો,  
 વાસવ કરતાં વધારે, શ્રીપોરને પ્યારે,  
 છાંયાતણા છત્રપતી છે.

નાથ કવી નથુરામનો એ છે,  
જાણું જગતમાં જીવો, રાણાકુળ દીવો,  
છાંખાતણા છત્રપતી છે.....૧૮૧

( સુખડાતું માણેલ માતી...એ...રાહ.)

પોરબંદરના ખ્યારા, ભુપાલ ભાવ પોરબંદરના ખ્યારા...ટેક.  
રસિકશિરોમણિ રાજવી રૂડા, કીરતિનાં કાળ કરનારા...ભુપાલ.  
સમરથ આપ સુહાગી સલુણા, હાની સરવ હરનારા.....ભુપાલ.  
પ્રીતિ નિભાવણુ પૂરણુ પ્રેમી, હરદમ હિત ભરનારા.....ભુપાલ.  
સ્નેહથી પાલન સલતું કરતા, ધીરા ધરમ ધરનારા.....ભુપાલ.  
એકવચ્ચની ખંતી ટેકીલા તંતી, સ્થાનક જોષ ઠરનારા...ભુપાલ.  
જેઠવા કુળના નૃપ જગન્નહીર, દુષ્ટથી નહીં ડરનારા.....ભુપાલ.  
કવિ નથુરામનાં કષ્ટોની સાથે, લાખો વખત લડનારા. ભુપાલ. ૧૮૨

( ઇસ ગરમીએ મીલે બંકે પ્યારે...એ...રાહ. )

દીન દુઃખહારી, ભુપાલ ભાવ બારી—ટેક.  
ખોલ નિભાવણુ ખ્હાદુર પૂરા, શરા સુભાગી સદા સુખકારી.  
વડા છે વિહારી .....દીન.  
પ્રીતીની સુરતી સુંદર સુરતી, આનંદદાતા અનેક બચહાન્ની,  
વિવેક ટેક પ્યારી .....દીન.

દાની અને નિરમાની દેવાંશી, રાણા રસીલા શાણા સુવિચારી,  
ધીરા ધર્મધારી.....દીન.  
નિત નથુરામનો નેહ નિભાવો, કીરતી કરેછે કાડીલા તમારી,  
લેજો પુર્ત તારી .....દીત. ૧૮૩

(રેલ્યો રેલ્યો રે રૂડા અવનીમાં આજ...એ...રાહ.)

ગાઓ ગાઓરે રૂડાં મનહર ગીત, આનંદ દિત આજછે રે ;  
ચાઓ ચાઓરે ભાવ ભૂપને ચીત, રાણાકેરે રાજછે રે—ટેક.  
જશધારી છે જઠવા, જહીર જગમાં એક ;  
સલવાદી શિરોમણિ, જે છે તીખી રે ઉર ધારણુ ટેક...

રાણાકેરે...ગાઓ.

નિત ગ્રેમીતણા પ્રતિપાલ, વિવિધ વિહારી રે ;  
કરી સર્વ અનીતી દૂર, નીતી ધારી રે.  
હિત હરદમ ધરીને હોશ, સહુતું કરતા રે ;  
અટ બ્રહ્મતણા ઉરમાંહિ, ભય બહુ બરતા રે.....ગાઓ.  
હરપ ધારી સરસ રાજધર્મને ધરે,  
નિલ કરે ન્યાયતણાં ડાજ રે ;  
રાજે રસીક ભાવસિંહ બૂપતી .....ગાઓ.

નિજ પ્રભતલો અપાર પ્રેમ છે કરે,  
 મુદસ્વરૂપ કોઠવાની માજ રે;  
 રાને રસિક ભાવસિંહ ભૂપતી.....ગાઓ.  
 નહીર જગતમહી જશનામી, પ્રિયકર પોરબંદરના સ્વામી;  
 આનંદી અંતરભમી...છત્ર ધરીને છાને.  
 શોભને સર્વમાં પૂરે પ્રતાપે, આશિષ નિત નયુરામ એ આપે ;  
 શ્રીહરિ કંથો કાપે...છત્ર ધરીને છાને.....ગાઓ...૧૮૪

(મારો અમર પ્રભને આજ, પૂરણ પ્યારો છે...એ...રાહ.)

સદા ભયહર ભાવ ભુપાળ, સહુથી શાણો છે ;  
 રહું રાજધીકુળનું રૂપ, રસભર રાણો છે...ટેક.  
 વીર પુરૂષ વડો ધીરછે, દીયે શત્રુ સરવને સાલ ;  
 પ્રેમીને પ્યારો છે...સદા ભયહર ભાવ ભુપાળ.  
 દેવઅંશી મહાદાની છે, નિરમાની વિવેકી વિશાળ ;  
 ધીરજ ધરનારો છે...સદા ભયહર ભાવ ભુપાળ.  
 કવી ગુણી પંડિત પેખીને, કરે દૂર દારિદ્રો દયાળ ;  
 સુજશમાં સારો છે...સદા ભયહર ભાવ ભુપાળ.  
 પોરબંદરનો પાતશા, નયુરામને કરશે ન્યાલ ;  
 સુખ ભરનારો છે...સદા ભયહર ભાવ ભુપાળ.....૧૮૫

( સૈયાં માઝં ઘેડું ઉતારો...એ...રાહ. )

પોરબંદરના પાતશ્ચા રૂડા, રતીપતિસમ અતી રાગી ;  
ભુપાલ ભાવ ભારે રસીલા—ટેક.

સદ્ગુણી સુંદર શોભતા સદા, પરમ સલુણા સુહાગી ;  
ભુપાલ ભાવ ભારે રસીલા.....રતીપતી.

દેશ વિદેશમાં દીપતી અતી, જહીર કીરતી જાગી ;  
ભુપાલ ભાવ ભારે રસીલા.....રતીપતી.

મોજતણા મેરાણુ છો નિત્યે, બહુ નૃપમાં બડમાગી ;  
ભુપાલ ભાવ ભારે રસીલા.....રતીપતી.

ગુણુ ગાવા નિત આપના, નથુરામતણી લે લાગી ;  
ભુપાલ ભાવ ભારે રસીલા.....રતીપતી. ૧૮૬

(લાંગના છોડવા રે, તેં મને માયા લગાડી...એ...રાહ.)

જુગજુગ જીવજો રે, પોરતણા પારા પ્રતાપી—ટેક.

જહીર જગતખધામાં જશેથી, (૨)

યાઓ અધીકા અનંત દાન આપી.....જુગજુગ.

માનુ સમાન બલી રીતે ભુમીમાં, (૨)

બહાલા વડાઇ વિશેષ રહો વ્યાપી.....જુગજુગ.

પૂરો પ્રકાશ કરો રાણા રસીલા, (૨)

ફૂંડાં જતોની કળાઓને કાપી.....જુગજુગ.

ભાવ ભુપાલ નયુરામના નાયજી, (૨)

છાપો ભૂમીમાં પ્રભુતાનો છાપી.....જુમજુમ. ૧૮૭

(ચટકતી ચાલેં ચાલી આઠ્યા ચત્રભૂજ રે...એ...રાહ.)

મધુર મુરતી સુંદર મુરતી સ્યામ રે,

નિહાળો નયુરામતણો નાય ભાવ ભૂપતી—ટેક.

દાનતણો દરિયો દુનિયાંપર દેખીયો રે લોલ,

દેહધારી કાષ્ઠ દેવતા છે અભિરામ રે.....નિહાળો.

શક્તિ કેઈ સાચું રે, એ રઢિયાળું રાજવી રૂપછે;

કાન્તિમાં નથી કાચું રે, વીરતાવાળું રાજવી રૂપછે.

અવનિ ઉપર ઠરીયું અમૃત ઠામ રે.....નિહાળો.

સલ કહું મુરતર, પોરમાં પ્રતાપ ભર્યું,

દીન દુઃખ ટાળવાને ઠીક ઠર્યું.

ભય હારે, જય ધારે, બહુ વારે, અતિ પ્યારે,

આશ્લિષ આપું એજ હું આઠે જામ રે.....નિહાળો. ૧૮૮

(શુ! નટવર વસંત થૈ થૈ નાચી રહો...એ...રાહ.)

છે રસવંત ને મહંત ખાતિ ભાવ બૂપતી,  
ભાવ બૂપતી રાખે રૂઢ્યમાં રતી.....છે. ટેક.

અલુર ચકોરોને ચિતે, આપેછે આનંદ;  
દયાદ્રષ્ટિ દેખાડતા, આપ બનીને ધન્ડુ.

ત્રેમે ખિલાવતા પ્રીતીના પોયણા,  
વિધ વિધ હરખ વધારી અતી.....છે.

બની શાણો રાણો સૂર્ય, ખળ તમ બાળે રે,  
કવિ પંડિત કોકના શોક, તંતથી ટાળે રે,

પારસ બની પરાક્રમી, રાખે સહુપર રે'મ;  
લાખો જન લોઢા સમા, હેતે કરીયા હેમ.

કવી નયુરામ કહે કલીમાં કરણુ છે,  
પોરબંદરનો ખારો પતી.....છે. ૧૮૯

(ભાણેજડા સરોવર બાઉં તીયાં...એ...રાહ.)

ભુપાલ ભાવ બરડા તખતપર બળિયા બિરાજે, છત્રધરી સુખે બાજે.-ટેક  
અધમ અરિ કરિ જીવ્યમાં જોરે, ગુણી બની કશરી ગાજે. ભુપાલ.  
બાણ સમી ભુમી મંડલ ઉપર, ભવ્ય પ્રભા ધરી બ્રાજે...ભુપાલ.  
જગત બધામાં જહીર જશનાં, વિધવિધ વાજાં વાજે.....ભુપાલ.  
કવિ નયુરામના નાથ કોડીલા, નિત નિત નેહ નિવાજે.....ભુપાલ.

(ગાઓ ગાઓ મનહર ગુણહર ગીત રે...એ...રાહ.)

આપો સહુ આનંદથી આશીશ અમાપ રે,

રાણા રસવંતને રે લોલ.

છાપો હરે છાંયાપતિની છત્રી કાપરે,

ખરી ધરી ખંતને રે લોલ.

વ્યાપો એના પ્રતિદિન પ્રગલ પ્રતાપ રે,

સુખદ ને છે સંતને રે લોલ.

કાપો કીરતાર એના તનડાંના તાપ રે,

મંગલ દ્યો મહંતને રે લોલ.

ખાળેછે પોરપતી પોતાનાં પ્રીતથી,

ટાળેછે ખોટા ખજોને ખચીતથી;

ખાળેછે વેરીઓને ચૂકે ના ચીતથી,

ભાળેછે ભૂપ ભરી આંખ અમી હીતથી.

દાનીછે દામનો, ધણી કીર્તિ ધામનો,

નેહભર્યા નામનો, નાથ નયુરામનો.....આપો.

સહુ ભૂપોમાં શાણો, રસીક ભાવ રાણો,

જરૂર જોજ જાણો, રસીક ભાવ રાણો,

ગુણીગણે ગવાણો, રસીક ભાવ રાણો,

પ્રીતે પ્રભુ પ્રમાણો, રસીક ભાવ રાણો....આપો. ૧૯૧



(ઉંચા ઉંચા તે બંગલા હજુર સાહેબના રે...એ...રાહ.)

ઉંચા ઉંચા તે બંગલા બનાવિયા રે,  
નીચા નીચા બાગ બગીચા અપાર રે;  
રાણા પધારો રાજ્યમહેલમાં રે,  
બાવ શાણા પધારો રાજ્યમહેલમાં રે—ટેક.

ધન્ધ્ર લુવનથી અનૂપ લુવન આપનાં રે,  
હેતે હેમકળશ ધારિયા હજાર રે.....રાણા.

પ્રીતે પવનથી પતાકા પ્રૌઢ ફરકતા રે,  
ડરે દુશ્મનો કરી દ્રગે દિદાર રે.....રાણા.

એક એકથી અધીક જ્યાં અવાસછે રે,  
કેમ વર્ણવી શકું કરી વિચાર રે.....રાણા.

કલિત સમૃદ્ધી કુએર કરતાં ઘણી રે,  
નથુરામ નિરખી પરમ ધરે ખાર રે.....રાણા. ૧૯૨

(વનમાં જોલે ઝીણા મોર...એ...રાહ.)

આજ મહારાણા પૂર્ન નિ મેઘ, અસાડો આવીયા રે લોલ;  
રંગદાર શાસો દુશાલાના દ દાની, વાઘન સંગ લાવીયા રે લોલ. આજ.  
જરકસી પાઘોની ચપળ ॥ આર, ચહ્યા ચમકાવતા રે લોલ;  
ગરજના દુઃખ હરવાની સહી, છટાથી છાવતા રે લોલ.....આજ.

કવિ ગુણી પંડિતોનાં ઘર પેખી, પૂરણુ હર ખારથી રે લોલ;  
વરસવા લાગ્યા બાવ ભૂપાલ, સુવર્ણની ધારથી રે લોલ.....આજ.

કરી રસવંતે રેલમછેલ, તારી ગુણી ગામને રે લોલ;  
નરપતિ નેહં નિવાળેછે નિલ, કપી નથુરામને રે લોલ.....આજ.

૧૯૩

(પાળો પતિવૃત પૂર્ણુ ખ્યાર ધરી...એ...રાહ.)

પૂરણુ પ્રેમનો સાગર છલતો, પોરખ'દરનો ખારોછે;  
દુઃખ હરનારો દીનજનોનાં, બાવ ભુપાલ અમારોછે...પૂરણુ.

સુંદર ગજની સુંદ સરખા, બયહર ભુજ રૂપાળોછે;  
સિંહ સરીખી છાતીમાં ગળકે, મનહર માતીમાળોછે...પૂરણુ.

અમૃતવાળી આંખો નિહાળી, બહાલાં તન મન વારેછે;  
કુડાં કુટિલજનો કંપતાં દેખી, હામ હરામીઓ હારેછે...પૂરણુ.

ક્રાખ સાઠર અને શેરડી સરખાં, મુખ વચનો અતિ મીઠાંછે;  
દ્રાવિદ કવિને દાન દેવામાં, દેવસમા ગુણુ દીઠાછે.....પૂરણુ.

દૂર રહેછે દંબીજનોથી, સાચો ગૂર સધીરોછે ;  
કવિ નથુરામનો શ્યામ સુભાગી, હનમત વંશનો હીરોછે. પૂરણુ. ૧૯૪

(પડ ગઇ અનાડી કે હાથ...એ...રાહ.)

ભાવેથી ભાવ બૂપાળ, જીવો ગહુ જહાનમાં રે—ટેક.

ધરનારા છો ધર્મ ધજના, મોટાછો સહુથી માનમાં રે.....ભાવેથી.

જેઠવાકુળના જ્ઞેધ તમેને, દેખ્યા બળી સમ દાનમાં રે.....ભાવેથી.

જગત બધામાં આપના ઉત્તમ, ગાય ગુણી ગુણુ ગાનમાં રે...ભાવેથી.

છત્રધારી છો પ્રતાપી છોગાળા, ગુણી રહોછો શુભતાનમાં રે. ભાવેથી.

વિક્ષાતોમાં વખણાઓછો, નૈતમ નેહ નિધાનમાં રે.....ભાવેથી.

કવિ નથુરામ કરેછે કિરતી, ધીરા ઉતારજો ધ્યાનમાં રે.....ભાવેથી.

૧૯૫

( મરવો જોલાં ખાય, મરવો મેં વાવ્યો રે નણુદખાઇ જ રે  
એ...રાહ. )

મોદ ધરી મહારાજ, મળવા આવોને રે વિલાસીજ રે...ટેક.

આપ વિના થડીએ અમને રે, વિલાસીજ રે ;

કાંઈ સૂજે નહિં કાજ, મળવા આવોને રે વિલાસીજ રે.

નેણામાં છાયા છખીલા તમે રે, વિલાસીજ રે;

સ્તેહીતણા શિસ્તાજ, મળવા આવોને રે વિલાસીજ રે.

પોરતણા પ્રતિપાલક છો રે, વિલાસીજ રે;

ભાવ રસીલા રાજ, મળવા આવોને રે વિલાસીજ રે.

કવિ નથુરામના કંથ તમે રે, વિલાસીજ રે ;

અરજ સાંમળી આજ, મળવા આવોને રે વિલાસીજ રે. ૧૯૬

( નહીં છવું કેસરીયા લાલ...એ...રાહ. )

બલા દીસોછો ભાવ ભુપાલ, કામણુગારા રે ;  
તમે પોરતણા પ્રતિપાલ, પ્રીતમ ખારા રે.....બલા.  
તમે અંતર વસીયા આપ, કામણુગારા રે ;  
દીયો આનંદ અમને અમાપ, પ્રીતમ ખારા રે...બલા.  
તમે અતુર બન્યાછો અંદ, કામણુગારા રે ;  
છક્યાં નેણુ જોવાને છંદ, પ્રીતમ ખારા રે.....બલા.  
મળો હૈતેં ગ્રહીને હાથ, કામણુગારા રે ;  
નથુરામ કવીના નાથ, પ્રીતમ ખારા રે.....બલા. ૧૬૭

( લે લે ભોરીંગડા લે લે ઝીંઝવો...એ...રાહ. )

આવો અલખેલા, આવો છેલા—ટક.  
ભાવ ભુપાલ રંગભીના રાણા,  
મનહર રંગથી મચેલા...અલખેલા...આવો.  
દાની દયા કરી દરશન ઘોને,  
વાણમછ વેલા વેલા...અલખેલા...આવો.  
અવરતણું નધી કામ અમારે,  
શાણુ મળો સહુ પે'લા...અલખેલા...આવો.  
નિત નથુરામનાં નયનો બનેછે,  
જોયા વિના ધણાં ઘેલાં...અલખેલા...આવો. ૧૬૮

( અમારા હૃદયરસાખ શીકારે પધાર્યા...એ...રાહ.)

બહાલા વિચારમાં શું બેઠા વળુંધી,

ધાર્યું શું કરવા ધીરા...મારા સમ માનોને રે—ટેક.

દાન દષ્ટ દુઃખ હરવાં છે કોનાં,

હેતેથી હિન્દના હીરા...મારા સમ માનોને રે...ધાર્યું.

વશ કરવાં છે કોણુ વિવેકી,

પાછને મોહની મદીરા...મારાસમ માનોને રે...ધાર્યું.

ગુણીગણને કીયાં ગામ દેવાં છે,

આજ બનીને અધીરા...મારા સમ માનોને રે...ધાર્યું.

બાવ ભુપાલ નથુરામના કાંતો,

ચોંપે દારિદ્ર થશે ચીરા...મારા સમ માનોને રે...ધાર્યું. ૧૯૯

## બાર માસ.

( રાતી રાતી ગલમેંદી ગલ થોડા જો...એ...રાહ, )

આવ્યો આવ્યો ઉત્તમ માસ અશાઢ જો,

ઘાટાં વાદળ દોડે દશેદિશમાં ધણાં રે લોલ ;

રંગબેરંગી સાજે ગાળે ગાઢ જો,

ચિત્ત ચમકાવે ચમકી ચપળા ચોગણાં રે લોલ ;

ઝીલ્સી ઝમકે, દાદુર દમકે, મધુરા બોલે મોર જો,

આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૧

સુંદર આબ્યો શોભિત આવણુ માસ ને,  
વસુધાએ વરંગી અંગે સાડી ધરી રે લોલ ;  
તૃણ લીલાં ચરે પશુઓ ચારેપાસ ને,  
વાંસળી વાયે ગાયે ગોવાળો ભાવ ભરી રે લોલ ;  
ખેડૂ ખાંતે, મનડે માતે, કરતા દોડદોડ ને,  
આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૨

ભાદરવો ભલો જૂઠ્યો છે ભાવ ભુપાલ ને,  
સર સરિતા ભરી જોરે' જહ્ન જળ જાયછે રે લોલ ;  
વરસે મૂસળધારે મહાં ધનમાલ ને,  
જળમય ધરણી પવન ઝપાટા ખાયછે રે લોલ ;  
પદ્મવ ખારે', તરવર ધારે, પૂલે' વધારે ફોર ને,  
આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૩

આબ્યો આસો માસ આનંદી આજ ને,  
ઘર ઘર આનંદ મોદે' સહજન મહાલતાં રે લોલ ;  
દેવમંદિરમાં દીપે દિવાળી દરાજ ને,  
વિધવિધ વાળં વાગે અતી સુખ આલતાં રે લોલ ;  
આતસખાણ, તાણ અવાણ, છૂટી જણાવે જોર ને,  
આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૪

કારતક મહિનો આબ્યો દોડીલા કંચ ને,  
પાકે અનાજે સારી સીમડીયું ચોમતી રે લોલ ;  
પરદેશી જન પ્રીતે' પકડતા પંચ ને,

દેવદિવાળી દેખી મતી અતી લોભતી રે લોલ ;  
પતંગ ભાવે, કૈક ઉઠાવે, દધને ઝાઝી દોર જો,  
આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૫

માગશર મહિનો આવ્યો રસીલા રાજ જો,  
પશમીનાપર પ્રીતી ઉરે અધિકી યમ રે લોલ ;  
સાલ દુશાલા સારાં દિવે સુખસાજ જો,  
મલમલની મળેદારી ગરવ છોડી ગમ રે લોલ ;  
આવ્યો શિયાળો, સુખભરનારો, વિલાસીનો ચિતચોર જો;  
આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૬

પ્રીતમ પેખો માસ મળનો પોષ જો,  
હૃદ મેલીને આજે હીમાળો હલકીયો રે લોલ ;  
દેખે નહીં અગનીમાં જરા જન દોષ જો,  
ભાવ અંગીઠીકરો ક્ષિતીમાં છલકીયો રે લોલ ;  
પાક રૂપાળા, ગરમીવાળા, ભાવે ઉઠીને ભોર જો,  
આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૭

ખાંધી કુસુમની પાધડી માધ અમોલ જો,  
આવ્યો ઉમંગે સંગે મધુને લાવીયો રે લોલ ;  
કોયલના પડે કાને કલીત કલોલ જો,  
કામ કુલાષ કામીપરે બહુ ફાવીયો રે લોલ ;  
આંખે અતીશં, દેખતાં દીસે, મનહર ઝાઝા ભોર જો,  
આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૮

ફેલાયો કાગણુ માસ લલિત જોષ લાગ જો,  
હોળી હુલાસે ગાયે તમામ જન તાલથી રે લોલ ;  
પૂલી રમે સદ્ ભેળા ચમતે કાગ જો,  
કેસર ને કુમકુમા અખીર ગુલાલથી રે લોલ,  
પ્રીતમ ખારી, કર પીચકારી, પેખો આઠે પ્હોર જો,  
આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૯

ચૈતર માસે પૂલ્યાં ચમેલી પૂલ જો,  
માલતી ઝાઝી મનહર પૂલ્યા મોગરા રે લોલ;  
આળ્યો ઉનાળો ડીલે ગમે ન હુકૂલજો,  
સૂધું ગમે ના સેલે સજોડેથી જરા રે લોલ ;  
પંખા રૂપાળા, સુગન્ધીવાળા, ચાલે ચારેકોર જો,  
આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૧૦

ઝડાલા જીજ્ઞા વૈશાળે વળ્યાં વન સર્વ જો,  
શાખી દીસે નવપલ્લવથી સોહામણાં રે લોલ ;  
ક્રોયલ દૂકે ગાંડી બની ધરી ગર્વ જો,  
ધાયલ કરતી ધૂમી રસીકજનને ધણાં રે લોલ ;  
વારીથી દીસે, પ્રીતી અતીથિ, તંતે પીચે ધરી તોર જો,  
આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૧૧

જેઠવા આળ્યો જોજો જોરાવર જેઠ જો,  
પોરખંદરપતિ માતુ તપાવે તાપથી રે લોલ ;  
આખ ગુલાબના છોડો હુવાગ ઝેડ જો,



ખાંતે રૂડી ખસ ટાટી મગાવો માપથી રે લોલ ;  
 હૈયાની હામે, નિત નથુરામે, કીધી આશીશ કરોડ બે,  
 આ વખતે રસવંતા રાણા રમે રંગમાં રે લોલ. ૧૨

૨૦૦

( સોનામોર લઈને અમે પોરબંદર ગયાતાં...એ...રાહ. )

જેવા લુપાલ ભાવ પોરબંદર ગયાતાં,  
 રાણાને જોઈ મન માઈ અતી ;  
 રાજી થઈ બરી બેઠું રતી—ટેક  
 સુંદર સૂરતી મનહર મૂરતી,  
 જોઈ મગન બની મારી મતી...રાણાને...રાજી.  
 ચંચલ ચિત્તમાં ચોટયા ચતુર વૃષ,  
 ઠામણગારે કીધી કંતી.....રાણાને...રાજી.  
 આપી સરવ અમે ચૈયાં ઉપાસી,  
 પ્રગટી અંતરમાં પ્રેમબતી.....રાણાને...રાજી.  
 નેહ થઈ નથુરામને નાથે,  
 હલે કરી હાંધ પ્રીતી છતી.....રાણાને...રાજી....૨૦૧

(તમે એકવાર મારવાડ જોજો રે હો મારવાડી...એ...રાહ.)

તમે રાજજી છો બહુ રસીયા રે, મહારાણા.

તમે રૂટે કમળમાં વસીયા રે, મહારાણા—ટેક.

તમે પ્રેમ બતાવી, રસે દસાવી,

હરમાં લાવી, બામને બાવી,

તમે વાલમ હળવે હસીયા રે. મહારાણા....તમે.

તમે બાવ ભૂમીપતી બારે રે, મહારાણા.

હુતો વીનહું વારમવારે રે, મહારાણા.

તમે શ્યામ અમારા, પુરણુ પ્યારા,

અમૃત ધારા, દ્રગનાં તારા,

નયુરામ આશીશ ઉચારે રે. મહારાણા....તમે.

૨૦૨

(જીવન ને રે જાવા દઉં આજ...એ...રાહ.)

વાલમ આપનું વદન વિશાલ,

પ્રેમરસ પ્રેમીએને પાતું રે;

ચેખી પોરતણા પ્રતિપાલ,

મનહું ખૂળ રહે માતું રે—ટેક.

પ્રીતમ આવી અમારી પાસ,

વહાલ તણી આપ કરો વાતું રે.....વાલમ.

શાણા છાંયાપતી અમ શ્વાસ,  
આપ વિના શ્યામ નથી સાતું રે.....વાલમ.

જેઠવા આનંદી આઠે જામ,  
અંતર રાખો રંગ રાતું રે.....વાલમ.

આનન કવિ નથુરામનું આમ,  
આપ ગુણ નિલ રહે ગાતું રે.....વાલમ. ૨૦૩

(પાટણ જાળે માણારાજ...એ...રાહ.)

ભય હરનારા ભૂપતી ભાવ, મળવા આવોને રે;

ચિત્તમાં ધારી ચંચલ આવ, સુખ સરસાવોને રે.

નેહીતારણ નૌતમ નાવ, મળવા આવોને રે;

લેનારા નૃપ લાખો લહાવ, સુખ સરસાવોને રે.

હેતે પ્રગટો હરદમ હાવ, મળવા આવોને રે;

મન હરનારા મીઠા માવ, સુખ સરસાવોને રે.

દાતી કેમ રચોછો દાવ, મળવા આવોને રે;

ત્રેમે ધરો ધરમાં પાવ, સુખ સરસાવોને રે.

ટાળો આપ વિરહનો તાવ, મળવા આવોને રે;

રાણા રસભર કરીયે રાવ, સુખ સરસાવોને રે.

કવિ નથુરામ કરેછે કાવ્ય, મળવા આવોને રે;

શાણા નિલ દિયો શિરપાવ, સુખ સરસાવોને રે. ૨૦૪

(છારા નંદના હો લાલ રે, ખેલણ કાંકરી કોણે મારી.  
એ...રાહ.

ઓરા આવો તો આજ રે, પ્રીતીથી વાત કહું પોરના પતી-ટેક.

મારા રૂદયામાં રાજેછો રાજવી સદા,

નહીં છોડું ધડી મહીપની માજ, મહારાજ રે....પ્રીતીથી.

મારી આંખોમાં છાછ રહી આપની છબી,

નથી દૂર તમે દાનિમાં દરાજ, મહારાજ રે.....પ્રીતીથી.

મારું મનડું મોજાલા મહારાણા તમે,

નક્કી હાથ ક્યું તુકતે નિવાજ, મહારાજ રે.....પ્રીતીથી.

નથુરામંતણા નાથ ભાવસિંહ ભૂપતી,

સાચા આપછો અમારા શિરતાજ, મહારાજ રે...પ્રીતીથી. ૨૦૫

(રાત અંધારીને વાદળ કાળાં...એ...રાહ.)

વાલમ વરપા વખત વિનોદી,

દાની નહીં દૂર જાશે કહીં;

બસા ભાવ ભુપાલ રહે આપ અહીં—ટેક.

કોયલ મોર પપીહા ખોસે,

એલે ચડે ચિત્ત ધાણા સહી.....બસા.

ઝીથુરને ઝણુકારેયિ જીવન,

ઝખકી ઉઠું કહું કાંઈ નહીં.....ભલા.

પોરપતી અંતી થાય ઉપાધી,

મહિપ મુંઝાઉં છું મનડામહીં.....ભલા.

ગાળે વિળે ધન ધોર ધટામાં,

રાણા શકું નહીં રાત રહી.....ભલા.

કવિ નથુરામના કંથ વિચારો,

જેઠવા જાયછે વખત વહી.....ભલા. ૨૦૬

(રસીયા મને જાવા દોને...એ...રાહ.)

રસીયાજી આહીં આવોને રે,

નૃપ ભાવ મને ભાવોને—ટેક.

રાણાજી રસ વરસાવોને રે,

છેલાજી મુખે સરસાવોને.....રસીયાજી.

દાનીજી મુખ દરસાવોને રે,

હૈયું માફ હરખાવોને.....રસીયાજી.

નિત નથુરામ મુદ છાવોને રે,

ખારાજી પ્રેમરસ પાવોને.....રસીયાજી. ૨૦૭

## સાત વાર.

(આ ધન ગરજે ધમધાર...એ...રાહ.)

આદિતવારે આનંદ, હરમાં ધારો રે,  
મહારાણા કરિને મહેર, મહોલે પધારો રે;  
સોમવારે સલુણા શ્યામ, શ્યામા સંગે રે,  
રાજી રહી રસીયા રાજ, રમજો રંજે રે,  
મંગળવારે મુદ્દરૂપ, દરશન દેજો રે,  
પતિ પોરતણા ધરી ખાર, સાથે રેંજો રે;  
બુધવારે બળિયા ભૂપ, રૂપ રૂપાળા રે,  
છો મુજ રૂદયાની આપ, મનહર માળા રે.  
શુક્રવારે શુણના ગીત, ગાઘશ ગરવે રે,  
સુખ શ્યામ તમારે સંગ, માનીશ સરવે રે;  
શુક્રવારે શૂરવીર, આપની સેવા રે,  
હું કરીશ ધરી હુલાસ, આનંદ લેવા રે.  
શનિવારે શૂપ શિરતાજ, રસમાં રમતા રે,  
ગોરીને શુણના ધામ, રૂદ્યે ગમતા રે;  
છો ભાવ ભુપાલ અનૂપ, કુળનો દીવો રે,  
નથુરામ કવીના નાથ, જુગજુગ જીવો રે.

## પંદર તિથિ.

( સોના વાટકડી રે, કેસર ઘોળ્યાં...એ...રાહ. )

એકમે આવળે રે, અબળા આગે રાણાળ,  
 ખીજે ખીરાળે રે, અંતર બાગે રાણાળ;  
 ત્રીજે ત્રીયાનાં રે, કદ સહ કાપો રાણાળ,  
 ચોથે ચતુરનર રે, રૂઢ્યે ચાંપો રાણાળ.  
 પાંચમે પ્યારા રે, પ્રેમરસ પાઓ રાણાળ,  
 છઠ્ઠે છખીલા રે, મંગળેંથિ છાઓ રાણાળ;  
 સાતમે સુણળે રે, સંગીત સારાં રાણાળ,  
 આઠમે અમથી રે, નહીં રહે ન્યારા રાણાળ.  
 નોમે નિભાવળે રે, નેહથી નાતા રાણાળ,  
 દશમે પ્રેમનાં રે, દાન દિયો દાતા રાણાળ;  
 અગ્યારસે અતી રે, આનંદ આપો રાણાળ,  
 બારસે બમણાં રે, સુખમાં સ્થાપો રાણાળ.  
 તેરસે તંતથી રે, ખંત ધરી ખેલો રાણાળ,  
 ચૌદશે ચલવો રે, રંગની રેલો રાણાળ;  
 પૂનમે પ્યારથી રે, પ્રેમીને પાળો રાણાળ,  
 નિત નયુરામને રે, નેહથી ન્યાળો રાણાળ.

(૧૨ સાવિત્રી વૃત્ત આજ, પૂરણ કરીયેં રે...એ...રાહ.)

પરી પૂરણ ધારી ખાર, શ્રી મહારાણા રે,  
જમો ભાવ ધરી ભરથાર, વિવિધ વસણા રે;  
હઢી રાખ્યું મહિષી દૂધ, કેસર નાખી રે,  
સાકર પાયેલી શુદ્ધ, બુદ્ધી આખી રે  
ખારથી અપાર પકવાન પીરસ્યા,  
મિસરીથી કરેલ મજેદાર રે;  
ભાવે આરોગો ભાવસિંહ ભૂપતી.  
રાખ્યાં બનાવિ સંગ રાયતાં રૂડાં,  
અનુપ જાતજાતનાં અચાર રે ;  
ભાવે આરોગો ભાવસિંહ ભૂપતી.  
શાક સદૃ રસ ભરીયાં કરીયાં,  
તેલ વિના ઘૂત નાખીને તળીયાં ;  
ભાવે મસાલેથી ભરીયાં,  
સ્નેહ ધરી નૃપ શાણા.  
બુગતી જમાવીછે જેઠવા સારી;  
બેઠીછું પાસ પંખો કર ધારી ;  
બહાલે જમોને વિહારી,  
નિત નથુરામનાં નાણાં .....૨૧૦



( ના ના નૈં જાઉં સાસરીએ રે...એ...રાહુ. )

લાવ મહારાણા રસીકને તેડી રે,

જા જા જા જા જા જા જા દાસી દોડી રે—ટેક.

કેજે જરાક જઈ કપડીના દાનમાં, (૨)

છેલ કેમ બેઠા શ્યામાને છોડી રે .....જા જા.

બાંધીને થાકી હું પ્રીતીને બંધને, (૨)

તોયે એતો તુર્ત નાશે છે તોડી રે .....જા જા.

એક ધડી અહીં અમને ન જોઠે, (૨)

છખી એની રાખુંછું ચિત્તમાં ચોડી રે.....જા જા.

જેઠવાનું મુખ એયા વિનાનાં, (૨)

નેણુ મારા વૈભવ નાખે વખોડી રે .....જા જા.

કેજે રીસાણા ને હોય તો કંતને, (૨)

નહોં લડું રહીશ જુગલ કર જોડી રે .....જા જા.

ભાવ ભુપાલની ભગતી છે મારે, (૨)

નિલ નંથુરાગ કહું છગ છોડી રે.....જા જા. ૨૧૧

( ગલ વાવ્યો તેવો ઉગ્યો રે...ઐ...રાહ. )

પતી આપતું મુખતું પાડે રે,  
નરપાલ નેહ ધરી આવો ;  
દુઃખી સુંદરી દરશન સાડે રે,  
બલા ભૂપ ભાવ મને ભાવો—ટેક.

નથી દૂરે નિકટ ધર માડે રે,  
નરપાલ નેહ ધરી આવો ;  
તન મન ધન તમપર વાડે રે,  
બલા ભૂપ ભાવ મને ભાવો ...પતી...દુઃખી.

સ્વામી તનમહી તાન તમાડે રે,  
નરપાલ નેહ ધરી આવો ;  
નિત ધ્યાન છત્રીનું ધાડે રે,  
બલા ભૂપ ભાવ મને ભાવો ...પતી...દુઃખી.

સુખે પૂલની સેજ સમાડે રે,  
નરપાલ નેહ ધરી આવો ;  
નયુરામ નિરખી દ્રગ ઠાડે રે,  
બલા ભૂપ ભાવ મને ભાવો...પતી...દુઃખી. ૨૧૨

( રંગ રસીયા ઢાલા...એ...રાણા. )

આવો અમારે ઓરડે, રંગરસીયા રાણા.

ઢાલા જોઈછું વાટ, વારીજાઈ રાણા—ટેક.

ચોપે આરસના ચોકમાં રે, રંગરસીયા રાણા.

હોચો હોડોળા ખાટ, વારીજાઈ રાણા.....આવો.

શરદપુનમની રાતડી રે, રંગરસીયા રાણા.

ચંદ્ર ચંચો આકાશ, વારીજાઈ રાણા .....આવો.

ખાન્ના રૂડા મધુપાનના રે, રંગરસીયા રાણા.

પ્રેમભરી ધરૂં પાસ, વારીજાઈ રાણા.....આવો.

સંગીત ગીત સોહામણાં રે, રંગરસીયા રાણા.

છાંયાપતી રૂડા છંદ, વારીજાઈ રાણા .....આવો.

ગાધ અને ગવનવીને રે, રંગરસીયા રાણા.

આપીશ હું આનંદ, વારીજાઈ રાણા .....આવો.

હાજર હેત ધરી રહું રે, રંગરસીયા રાણા.

હરમ જોડી હાથ, વારીજાઈ રાણા .....આવો.

ભાવ પધારો ભાવથી રે, રંગરસીયા રાણા.

કવી નથુરામના નાથ, વારીજાઈ રાણા.....આવો. ૨૧૩

( જેમ સુકાય તેમ જાવનાં કુલ...એ...રાહ. )

જેમ સુકાય છે જાવનાં કુલ, મહારાણાજી રે,  
તેમ નિત સ્થામા તમારી સુકાય, બહેલા આવો તૃપ શાણાજી રે. જેમ.  
ગીત સંગીત ગમે ના જરી, મહારાણાજી રે,  
ધડી ધડી ધટમાં જીવ ધોળાય, બહેલા આવો તૃપ શાણાજી રે...જેમ.  
ભુવન બલાં નથી ભાવતાં, મહારાણાજી રે.  
ગમે નહીં ખાગ બગીચાની માંય, બહેલા આવો તૃપ શાણાજી રે. જેમ.  
ચોંકી ઉઠું ચિતેં ચોગણી, મહારાણાજી રે.  
સુર કાળી કાયલીનો સંભળાય, બહેલા આવો તૃપ શાણાજી રે...જેમ.  
ભાવ બુલી ગયા બામને, મહારાણાજી રે.  
કહે નથુરામ પકડ્યું પાય, બહેલા આવો તૃપ શાણાજી રે. જેમ. ૨૧૪

( ઉંચા ઓરડા ચણાવો (૨)...એ...રાહ. )

સખી છાંયાના છેલ, સખી છાંયાના છેલ,  
મારી આંખોના તારડા રે લોલ.  
મારી મમતાના મ્હેલ, મારી મમતાના મ્હેલ,  
પ્રેમવેલીના ક્યારડા રે લોલ—ટક.  
શશી શાન્તીના રહેજ, શશી શાન્તીના રહેજ,  
માગ હૈયાના હાર છે રે લોલ.

મારા તનડાનું તેજ, મારા તનડાનું તેજ,  
એજ આનંદાગાર છે રે લોલ.....સખી.

મારા સુખડાંના સિન્ધુ, મારા સુખડાંના સિન્ધુ.  
મોદ મંગળની માળ છે રે લોલ.  
દીન દુઃખિયાંના બંધુ, દીન દુઃખિયાંના બંધુ,  
કુડા કામીના કાળ છે રે લોલ.....સખી.

સ્નેહ સોદો કરનાર, સ્નેહ સોદો કરનાર,  
મારા મનડાંનાં મોતિનો રે લોલ.  
ઉરકેરૂં અંધાર, ઉરકેરૂં અંધાર,  
હરે ભાનુ થઈ જોતિનો રે લોલ. ....સખી.

મારા હૃદયનું જોર, મારા હૃદયનું જોર,  
મારા રૂદીયાના રામ છે રે લોલ.  
ભાવ ચિત્તડાંના ચોર, ભાવ ચિત્તડાંના ચોર,  
નયુરામના શ્યામ છે રે લોલ .....સખી. ૨૧૫

( કોણ લેવા જાયરે છખીલો ગાંજો...એ...રાહુ. )

મોદ ધરી મહેલે, ભુપાલ ભાવ આવો...(૨)—ટેક.

વાટ જોઈ વાલમા ઘડુંછું ઘાટ હું ઘણા, (૨)  
કાં ન ખખર કાવો, ભુપાલ ભાવ આવો.....મોદ.

બળિયા ન ગોઠે ધડી ધરમાં કે આરણે, (૨)

શ્યામ ના સતાવો, ભુપાલ ભાવ આવો.....મોદ.

મહીપ પધારી મારા મંદીરનો માંડવો, (૨)

મંગળોથિ છાવો, ભુપાલ ભાવ આવો.....મોદ.

રંગ ને ઉમંગથડી રાજવી રમાડીને, (૨)

લેવરાવો લહાવો, ભુપાલ ભાવ આવો.....મોદ.

વિવિધ વિનોદથી રસીક મહારાણા, (૨)

ભામનીને ભાવો, ભુપાલ ભાવ આવો .....મોદ.

એક ટેક ધારી નયુરામતણા નાથ છો, (૨)

નેહને નિભાવો, ભુપાલ ભાવ આવો.....મોદ. ૨૧૬

### સારંગ.

( વાલમણ સાડી ગુલાબી મગાવો...એ...રાહ. )

રાણાણ પ્યારેથી વેણા પધારો,

હેતથી હજારો, વિલાસો વધારો,

અંગથી ઉપાધીનો રંગ કરી ન્યારો, પધારો ...રાણાણ.

મંગલ મુદની મોજમાં, પાસ રહો પ્રતિપાલ ;

આનંદ આપો અતિ ધણો, ખૂબ બતાવો ખ્યાલ.

જેઠવા જરૂર ઉર પ્રેમમાં પ્રસારો .....રાણાણ.

સમરણ કરિયે સર્વદા, ધરી નામની માલ ;

એંપે આવો આલતા, ચપલ ચટકતી આલ.

પ્રેમના પ્રકાશમાં હુલાસ હાસ ધારો .....રાણાજી.

પોરબંદરના પાતશા, નથુરામના નાથ ;

અવરેખો આનંદથી, હેતેં અલી હાથ.

ભાવભૂપ સાંભળી અવાજ આ અમારો.....રાણાજી. ૨૧૭

( લાવ મહારાણા રસીકને તેડી રે...એ...રાહુ. )

દીપડાને વારેછે દીપડી બિચારી રે,

જમાં જમાં જમાં જમાં જોર ભર્યો રે—ટેક.

જગત બધા થકી જૂદો છે જોકવો, (૨)

પાપી પૂજા અલીને મારશે પછાડી રે.....જમાં.

ખીજે બધે ફરી શાપી પૂલામાં, (૨)

ખરડામાં થાશે ધુરી દશ તારી રે .....જમાં.

ભાવ ભુપાલ ભાર ભૂમીનો ટાળશે, (૨)

મૂર્ખ તને મોટી બંધુકથી મારી રે .....જમાં.

જેણે ધુમવ્યાંછે જોરાવર જંગલો, (૨)

એજ આજ આવ્યાછે આહીં અવતારી રે ...જમાં.

ખરડાપતી સમો પીજો બાણાવળી, (૨)

જગતમાં જન્મ્યો નથી જશધારી રે .....જમાં.

કવિ નથુરામતણો કંથ જો કોપશે, (૨)

નહોં મળે ખરડામાં ગયવાની ખારી રે .....જમાં. ૨૧૮

( લાલ હલવો વેંચાય મુંબઈના ચોકમાં...એ...રાહ. )

હાં રે મારે મોજે મહીપાલ, દુઃખદાષ દીપડો...ટેક.

દોષ્યા દીન પ્રતીપાલ, ચોંપે ચરમરી ચાલ...મારે.

લેવા શત્રુની સંભાલ, ધરી ખડાદુરીની હાલ...મારે.

કોણ જીતે માધલાલ, જેને કંઠ વિજયમાલ...મારે.

મારી હાથતણા તાલ, દાની તાકેછે દુનાલ ...મારે.

જેવો કેસરીનો બાલ, કરે મદજરનો ઢાલ ...મારે.

હયું સહુ પ્રજાતું સાલ, ફેડી બંધુકથી બાલ...મારે.

ભાવ ભયહરણ ભુપાલ, નથુરામ કરે ન્યાલ...મારે. ૨૧૯

( વાલમ નૈયાં બનાદે ચુડીયાં...એ...રાહ. )

ખારો પોરબંદરનો પાતશા—ટેક.

ભાવ ભુપાલ ચક્ષા ચોંપેથી કરવા,

દુષ્ટ દીપડાતણી પુરી દશા રે.....ખારો.

ચૂરા શિકારીઓ સંગે લઈને,

ધીર ભાવસિદ્ધ શૂપતી ધર્યા રે.....ખારો.



એકજ અડગ બંધુકને અવાળે,  
 રાક્ષસ વિનાની કરી રસા રે .....પ્યારો.  
 આપે આશીશ નથુરામ નવીન નિત,  
 હેતુ તમામના હૈયાં હસ્યાં રે.....પ્યારો. ૨૨૦

## ધીંગ.

( હાલો હાલો, હાથણલી શણુગારો રે...એ...રાહ. )

પ્યારા મારા, પોતણા પ્રતીપાલ રે,  
 ધારો ગળે, ધીરા વિજયની માલ રે .....પ્યારા—ટેક.  
 ગુણીગણ, ગાયે છે ગુણનાં ગાન રે,  
 દાડી દાડી, આપોછો કંચન દાન રે.....પ્યારા.  
 ઠરણ છો, કસ્તિબુગમાંહિ કૃપાલ રે,  
 વસુધામાં, ફેલાવી કીરતી વિશાલ રે.....પ્યારા.  
 મોછ રાણા, છોછ મહીપની માજ રે,  
 બળ ધારી, બાંધોછો ધરમની પાજ રે.....પ્યારા.  
 જાહીર છે, જોઠવાવંશ વિશેષ રે,  
 તેમાં તમે, બહાદુર છો બહુ બેશ રે .....પ્યારા.  
 ધ્યાન ધરું, બાણી તમેને દેવ રે;  
 શ.ણા કરું, રનેહો તમારી સેવ રે .....પ્યારા.  
 નેહ ધરી, ગાયે ગુણો નથુરામ રે,  
 આનંદમાં, ભાવ રહો આઠે જામ રે .....પ્યારા. ૨૨૧

( સીમડીએ કેમ જાણો વરરાજા...એ...રાહ. )

આજ આનંદથી આવો, મહારાણા ;  
 સાચા દેવોની સેવા કારણે.  
 ભણતા ભામણ સંગ લાવો, મહારાણા ;  
 બવળાં તોરણ બંધાવો બારણે.  
 ચોપેથી ચંદન ચાર, મહારાણા ;  
 ચાહેથી દેવોને ચડાવજો.  
 પૂજન કરતાં ખ્યારૂં, મહારાણા ;  
 અખીલ ગુલાલ ઉડાવજો.  
 કુમકુમ કેસર કોડે, મહારાણા ;  
 ત્રેમંથી પૂજા ધરાવજો.  
 અત્તર અરગળાં જોડે, મહારાણા ;  
 ભોજન થાળ ભરાવજો.  
 હૃતે શ્રીકૃષ્ણ લક્ષ હાથે, મહારાણા ;  
 દંડ પ્રમાણે નમો દેહથી.  
 સરવ દેવો મળી સાથે, મહારાણા ;  
 આપે આશીષો નીકા નેહથી.  
 સોના રૂપાનાં કુતો, મહારાણા ;  
 બહાલાંઓ કરશે સરવે વારણે.  
 આનંદજૂને હુતો, મહારાણા ;  
 નિત નયુરામ બાવે બણે ..... ૨૨૨

( મારી નથનું કાચું સોનું...એ...રાહ. )

રાણા છો રૂપાળા, મનના મોતીડાંની માળા,  
અમને બહાલા છો વધારે મારા રાજ.

જોવા મુખડું મીઠું, દ્રગને કાંઠે ન ગમે દીઠું,  
વક્ષખાં મારે વારે વારે મારા રાજ.

શાણા કહું છું સાચું, મનડું તમમાયે રાચું,  
પ્રતિદિન પૂરણ ખારે' મારા રાજ.

નેહધારી નિત્યે, ચોટયા ચંચલ આ ચિત્તે,  
બનીને ભયહારી મારે મારા રાજ.

દાની દેવઅંશી, ભાવભૂપ હનમતવંશી,

નથુકવી આશીશ ઉચારે મારા રાજ .....૨૨૩

(કાંઠા વાઢીને કરો વાડ રે, ઝરમરીયા ઝાલા...એ...રાહ.)

રાજો આનંદેથી રોજ રે.	રસમરીયા રાણા ;
મનમાં આણીને ઝાઝી મોજ રે,	રસમરીયા રાણા—ટેક.
મારે સુભાગી છો ભૂપ રે,	રસમરીયા રાણા ;
અવનીમાં આપ અનૂપ રે,	રસમરીયા રાણા.
જોઈવા કુળના છો જોધ રે,	રસમરીયા રાણા ;
શાણા કરોછો ગુણ શોધ રે,	રસમરીયા રાણા.
અંતરના છો આધાર રે,	રસમરીયા રાણા ;
હૈતે હૈયાના છો હાર રે,	રસમરીયા રાણા.

ંહાલા જાણોછો અંતર વાત રે, રસભરીયા રાણા ;  
 રટણ કરીછી દિનરાત રે, રસભરીયા રાણા.  
 ભાવેથી ભાવ ભૂપાલ રે, રસભરીયા રાણા ;  
 જીવો ધરીને જયભાલ રે, રસભરીયા રાણા.  
 આપ અમારા અંતર રામ રે, રસભરીયા રાણા ;  
 કવિ નથુરામના શ્યામ રે, રસભરીયા રાણા.....૨૨૪.

## આ શી વાંદ .

દોહરા.

ઇન્દ્રસમા અવનીપરે, વિજયી આપ વિશાલ ;  
 વિધવિધ વૈભવ ભોગવો, ભાવસિંહ ભૂપાલ.....૨૨૫  
 પ્રતિદિન કવિ પંડીતને, નેહે કરતા ન્યાલ ;  
 અચલ રહે! આનંદમાં, ભાવસિંહ ભૂપાલ.....૨૨૬  
 હતેજન આપ્યા કરો, વિશુધીને ધરો ંહાલ ;  
 દીપો દીર્ઘાયુ બની, ભાવસિંહ ભૂપાલ.....૨૨૭  
 નિલ વધારો નામના, કરી દુષ્ટનો કાલ ;  
 જનપતી છાંયાતણા, ભાવસિંહ ભૂપાલ.....૨૨૮

સદા રહો સોહામણું, ભાનુ સરખું બાલ ;  
 અન્ધ કરો અરિ ઉલુકને, ભાવસિંહ બૂપાલ.....૨૨૯  
 રહો સુખી સ્તેહી કરી, ધરી ધર્મની ઢાલ ;  
 બંડારો જશના ભરી, ભાવસિંહ બૂપાલ.....૨૩૦  
 ઉત્તમ આત્ર ઉછેરજો, માલીસમ મહિપાલ ;  
 પામો ફાલ ફતેહના, ભાવસિંહ બૂપાલ.....૨૩૧  
 આશિષ આ નથુરામની, નિલ ફળે નરપાલ ;  
 શિદ્ધિ સિદ્ધિ રાજ્યે રહો, ભાવસિંહ બૂપાલ.....૨૩૨  
 શુભં ભવતુ.

મારા શિષ્ય જમનગર નિવાસી કેશવલાલ  
 શ્યામજી કવિની કરેલી કવિતાઓ.  
 લાવણી.

માર્મિક છો મહિપાલ મહીપર, ધાર્મિક સુકૃત ધરનારા,  
 બીમતુલ્ય છો બુજ્જળવાળા, ભાવસિંહ ભય હરનારા ;  
 નરદારા સહુ વટે નિરંતર, રાણા અવિચળ રાજ્ય કરો,  
 કરો રે'મની નિગાહ કવિપર, સુજશતણા બંડાર બરો.  
 ઉન્નતિ કરવા આર્યજનોની, દૃઢ વિચાર દિલમાંહિ ધરી,  
 સદા રહોછો આનંદિત વૃષ, ન્યાયમાર્ગમાંહે વિચરી ;  
 કહે કેશવ શતવર્ષલગી નિત, વિશ્વમહીં સુખથી વિચરો,  
 કરો રે'મની નિગાહ કવિપર, સુજશતણા બંડાર બરો.

ગાયન.

(આવ્યો મનનો માન્યો હીરો તારા હાથમાં...એ...રાહ.)

શાણા ભાવસિંહણ રાણા ચિરંજીવ રો,

દાના દાન રમાનાં રોજ ઉમંગેથી કરો—ટેક.

ભોજ આપતો ભોજ કવીને, કરી પરિક્ષા લક્ષ ;

તોજ અતુલ એ ઝોજ ભર્યાને, ગાય ગુઝો જન દક્ષ...શાણા.

છે ઉદારતા આપતણી પણ, એના સરખી આજ ;

એથી સજ્જન સર્વ કહેછે, ધન્ય પોર મહારાજ.....શાણા.

ધર્મતણું રક્ષણ કરવામાં, રામ સમા અભિરામ ;

દમન કરોછો દુષ્ટ જનોને, ધરી હૃદયમાં હામ.....શાણા.

કેશવ આપતણા ગુણ ગાવા, છે ઉત્સુક અપાર ;

રહો અવીચળ આપ [સરીખા, ભૂમિતણા ભરથાર .....શાણા. ૨

રાસ.

( ચતુર ચૈત્રનો...એ...રાહ. )

રાણા ભાવસિંહણ અતી ઉદારછે નો,

જેનો પંડિતોપર અપાર ખારછે નો—ટેક.

કવિવૃન્દને અમંદ દષ આશ્રયો નો,

યશચન્દ્ર જેનો જગવિષે હિંદે થયો નો ;

કેછે ધન્ય ને મહીપને મહાશયો નો ..... ..રાણા.

રવીતુલ્ય જે મહીપનો પ્રતાપ છે જો,  
 પતી તેમ પોરબંદરના આપ છે જો ;  
 વિનય જેમનો વિચારતાં અમાપ છે જો .....રાણા.  
 શાણા શૂરવીર ભાગ્યશાળી ભૂપ છે જો,  
 જેનું કામના સમાન રૂડું રૂપ છે જો ;  
 રસિક રાજમૌલિ અવનિમાં અનૂપ છે જો ...રાણા.  
 જેના ઊપરેં પ્રસન્ન સદા શર્વ છે જો,  
 અહોભાગ્ય આપ અંતરેં અગર્વ છે જો ;  
 જેમાં સદ્ગુણો સુશોભમાન સર્વ છે જો .....રાણા.  
 કવી કેશવેં ઉરેં ધરણ આશને જો,  
 કરી પૂર્ણ ભૂપ પામશે હુલાસને જો ;  
 અધિક વર્ણવીશ એમના વિલાસને જો ? .....રાણા. ૩

### છન્દ હરિગીત.

છે સોમ સરખી સૌમ્ય જે નૃપતી મનોહર આકૃતી,  
 તેમજ પ્રજામંગળકરી છે પોરનૃપતીની કૃતી ;  
 જે વિષ્ણુધવારિજ મિત્ર અણુધ ઉલ્લકના જે છે ચરી,  
 એ ભાવસિંહ મહીપતીને અમર રાખો શ્રીહરી. ૪

જેનાં વચન ગુરુતુલ્ય વસુમતિમાં સદા વખણાય છે,  
 જેનાં સુકૃત જોતાં ખરેખર ઈન્દ્રતુલ્ય જણાય છે ;  
 છે ઈશિની પણ મુદમરી જેનાપરે' કશ્ણા ખરી,  
 એ ભાવસિંહ મહીપતીને અમર રાજો શ્રીહરી. ૫  
 જો ગુપ્ત યાર ! વિચારિ આ કવિતાવિષે ને છે અતી,  
 તે સાત વારો નૃપતિને અરપો અધિક સુખ સંપતી ;  
 ને છે હરીસમ પ્રગળ જોણે પોરપુરો શ્રીધૃત કરી,  
 એ ભાવસિંહ મહીપતીને અમર રાજો શ્રીહરી. ૬

### ગાયન.

( ખીલે શરાખ મજેદાર, મેરે યાર...એ...રાહ. )

શોભેછે શર શિરતાજ, મહારાજ...શોભેછે—ટેક.  
 ભાવ ભૂમીપતી સાચે સરૂપે, (૨)  
 લાગે રસીક રતિરાજ, મહારાજ .....શોભેછે.  
 પાળે પ્રજાને પ્રેમ ધરીને, (૨)  
 રાખીને રૂડો રિવાજ, મહારાજ .....શોભેછે.  
 દાની કરેછે આ દુનિયામાં, (૨)  
 કોડે' સુધર્મતણાં દાજ, મહારાજ .....શોભેછે.  
 કેશવ, કવીના કલ્પતરુ છે, (૧૮)  
 જાહીર જોવાની માજ, મહારાજ .....શોભેછે. ૭



( મારા તનમાં મનમાં ભર્યોછે ઈર્યોછે...એ...રાહુ. )

શાણા રાણા રસીકશિરોમણિ ભૂપર ભારે આનંદ ભરોછો—ટેક.

નેરભર્યા નયલક્ષ્મીની નેડે, (૨)

ઠ્ઠાલ ધરીને વરોછો.....શાણા રાણા.

વાલમ આપ વિવેકી વિશાલ, રાણા દિસો છો રસાલ; (૨)

દેશવિદેશમાં દાન દઈ વર, (૨)

કોડીલા નામ કરોછો.....શાણા રાણા.

શ્યામનીના સુખધામ છો સુંદર, (૨)

હૈયું અમારૂં હરોછો .....શાણા રાણા.

કેશવ દાની દીનદયાલ, ભવ્યછો ભાવ ભુપાલ ; (૨)

સ્નેહ સમુંદર પોરપુરંદર, (૨)

ધર્મની ઢાલ ધરોછો .....શાણા રાણા. ૮

### ગજલ.

( મને દિલ્લી ખોલાવીને, દગો દીધો...એ...રાહુ. )

ધણું છવે મુખે શાણા, મહારાણા મહારાણા—ટેક.

દયાળું આપ દાની છો, (૨) વિવેકી ને વિધાની છો, (૨)

સદા દેશભિમાની છો, (૨) મહારાણા મહારાણા...ધણું.

ધરોહો ધર્મને ધીરા, (૨) હરી હો હિન્દના હીરા, (૨)

હરો પંડીતની પીડા, (૨) મહારાણા મહારાણા ...ધણું.

ગુણીના હો ગુણુગાતા, (૨) નિભાવોહો સદા નાતા, (૨)

રહો રંગેચિ રંગાતા, (૨) મહારાણા મહારાણા.....ધણું.

નરોમાં ફેલવો નીતી, (૨) રૂડી એ જોઠવા રીતી, -(૨)

પરે' છે આપની પ્રીતી, (૨) મહારાણા મહારાણા. ધણું.

બલા હો ભાવ ભૂમીપતી, (૨) કરોહો ભવ્ય ભાવે કૃતી, (૨)

વધારોહો રતી કીરતી, (૨) મહારાણા મહારાણા...ધણું.

પ્રભ પાળો પુરી પ્રીતે, (૨) વિભૂ કરશે બહુ નિત્યે, (૨)

કહ્યું નયુરામને શિષ્યે, (૨) મહારાણા મહારાણા...ધણું. ૯

### શાદૃલવિકીરિત ઇન્દ.

જોવા લાયક જાનહવી જવમરી, સોભે જટાન્નલમાં,

ઝોપે અટમોતો મૃગાંક મધુરો, ભૂતાતના બાલમાં ;

જેતાં દર્શનમાત્રથી અવનિમાં, આધી રહે આપદા,

એવા શંકર ભાવભૂપ તમને, રહાયે યજ્ઞે સર્વદા. ૧૦

રાણા હો પતિ પોરઅંદરતણા, શાણા તમે સર્વમાં,

જામ્યોહો જશ જોઠવા જગમહી, ખાવોદ ઝાઝી ખમા ;

દેવાંશી દુનિયાંવિષે તમ સમો, દતાર દેખું નહીં,

આપું આશિરવાદ કેશવ ચિતે સારૂં તમારૂં ચડી. ૧૧

## છન્દ હરિગીત.

આ રીતથી ઉદ્યોગમાં ઉત્તેજનો આપી કરી,  
 મેલ્યા જગતમાં જેમણે ભંડાર ભલપણના ભરી ;  
 જેણે જાપર જશ ફેલવી ધીંગી ધરા ધવલી કરી,  
 એ ભાવસિંહ મહીપતીને અમર રાખો શ્રીહરી. ૧૨

જે પૂર્ણે પરમારથી હરદમ રહે હુલાસમાં,  
 વળો ધરણિધરસમ ધીર ને ગંભીર છે સાગર સમા ;  
 હિન્દુ ધરમની ઢાલ જેણે કરમહીં હેતે ધરી,  
 એ ભાવસિંહ મહીપતીને અમર રાખો શ્રીહરી. ૧૩

જે જેઠવાના રાજમાં પામી રહીએ સુખ પ્રભ,  
 સંભાળ સજ્જનની લઈ શકેને કરેછે જે સખ ;  
 આનંદ વિણુ વીતે નહીં જેનો વખત જોતાં જરી,  
 એ ભાવસિંહ મહીપતીને અમર રાખો શ્રીહરી. ૧૪

જે રાંકજનનો માળવે બરડાપતી બડહાથ છે,  
 રાણા રસિકવર જે પ્રતાપી પોરના નરનાથ છે ;  
 કિરતાર ! આપનો પાસ કેશવલાલ યાચે કરગરી,  
 એ ભાવસિંહ મહીપતીને અમર રાખો શ્રીહરી. ૧૫

## રાગ સૌરઠ—ગરબી.

( વેલા આવળે હો રાજ...ઐ...રાહ. )

અમથી અધધડિ પણ નહિં દાતી આપ દુરેં જશે હો રાજ,  
છાંયા છત્રપતી શિરતાજ...ટેક.  
વાલમ વહાલ ધરીને મુજ આંખો આગેં વસો હો રાજ...છાંયા.  
અંતરજમી આપ અમારા આનંદરૂપ છો હો રાજ .....છાંયા.  
મંગલ મુરતી સુંદર સુરતી ભયહર ભૂપ છો હો રાજ.....છાંયા.  
સ્નેહીજનકેરાં સંકટ હરદમ હરનાર છો હો રાજ.....છાંયા.  
કાઠેં અહનિશ ઉત્તમ કીરતિના કરનાર છો હો રાજ ...છાંયા.  
અમૃતભર દૃષ્ટી છે અતિ અલખેલા આપની હો રાજ ...છાંયા.  
રાણા રે'મ વસીછે રૂઢ્યેં મોટા માપની હો રાજ .....છાંયા.  
પારસમણિ છો પ્રબલ પ્રતાપી ખેલ કરે ખરો હો રાજ...છાંયા.  
કેશવ કવિને લોહ મટાડી કંચન કરેં કરે હો રાજ .....છાંયા.૧૬

## વિજયાદશમી પ્રસંગે આશીર્વાદ.

સાખી મરાહી.

કેશવ કેશવ હેતેં હરજો, વ્યાધી હરની વસન્તી,  
ભાવ ભૂપને સુખપ્રદ ધાળો, વિજયા વિજયાદશમી ;  
દાણા પાર્થસમી, સ્નેહે પૂજો આજ રામી.

એકવાર જે પડી આપપર, દીનદૃષ્ટિ યાચકની ;

તેજ અવસ્થાએ પ્રિ સારું, જુએ ન ખીજ જનની ;

ધીરા ભાવ ધણી, બાજો કેશવલાલ બણી ૧૮

અવનીપર આવેલા જોઈ, રાજચંદ્ર રાણાને ;

રતનિશોં નક્ષત્ર મળી સહુ, સેવેછે શાણાને ;

છાંયા છત્રપતી, જીવો ભાવસિંહ નૃપતી. ૧૯

### રાગ કલ્યાણ.

(સાવધ રહી ગુણ ગાઉં સતીના, જે આ જગમાં ગવાધરે  
એ...રાહ.)

ભાવ ભુપતી ગુણ ગાઉં તમારા, જે સૌ નૃપમાં સોહે રે—ટેક.

ઠહાલા વિધવિધ વાહ તમારી, દોડી જાય દિગન્તે રે ;

રનેહીને શ્રવણે પડિ નિત્યે, ખેદ મટાડતી ખંતે રે .....ભાવ.

વસુધામાં જાયેછે વધતો, દાડી જશ દાનૈથી રે ;

શેષ હિમાલય ક્ષીર ઉદધિ તો, ધવલ થયા ધ્યાનૈથી રે. ભાવ.

શંકરના તનપર નાખ્યા કર, કેદ રજતને કીધું રે ;

અમલ જમાવ્યો કપૂર ઊપર, લાખેણું સુખ લીધું રે...ભાવ.

કેશવપર પણ એ જશ જોરે, ધીર તજીને ઘોડે રે ;

જો મળશે તો શ્વેત ખનાવી, કરશે આધીન કોડે રે ...ભાવ ૨૦

સાખી મરાઠી.

છેલછખીલા છો છાંયાના, છત્રપતી છોગાળા ;  
ભાવ ભૂપ છો આપ અનૂપમ, સુંદર સદ્ગુણવાળા,  
હેતે ભય હરજો, કેશવપર કરુણા કરજો. ૨૧

કેશવ આપતણા ગુણ ગાવા, ચિત્તમાં અહનિશ આહે ;  
તમામ નરપતિઓમાં તમને, સહુથી સરસ મરાહે ;  
ભાજો એહ ભણી, રાણા એને રંક ગણી. ૨૨

પોરપતી દુઃખસાગરમાંથી, આજે આપ ઉગારો ;  
કર પકડી તારો કેશવને, બહાલા કીર્તિ વધારો ;  
એ ગુણ ગાનારો, નહિં ખીન્નનો થાનારો. ૨૩

ભાવસિંહ ભૂપાલ ભાવથી, સર્વ સ્નેહિઓ સંગે ;  
દીર્ઘાયુ બનિ આપ ત્રિતાવો, કાઠી વરસ ઉમંગે ;  
અંગે સુખ આપો, કેશવ કૃષ્ણ સદા કાપો. ૨૪

ગીતિ.

વાસવ સગ વૈભવને, ભાવ ભૂપતી સદૈવ ભોગવજો ;  
કેશવ કીર્તિ તમારી, ક્ષિત્તોયાના વિધુસન્માન નિત વધજો. ૨૫  
કુબેર સરખા કોશો, માન ભરેલા મહીપ મેળવજો ;  
રાજનીતિઓ રાણા, કેશવ રૈયત કળેથી કળવજો. ૨૬

છત્રપતી છાંયાના, પામો અરિ આપના પરાજયને ;  
 આપ સદા અવનીમાં, કેશવ જામો જશે કરી જયને, ૨૭  
 રત્નાકરસભ રાણા, ઉઠેછે ઉર તરંગ દેવાના ;  
 કેશવ કવિ કીધેલા, અક્ષર અવિચલ રસસ ! રે'વાના. ૨૮

## મનહર.

મર્યાદા મહાન જેમાં સુંદર સુવર્ણતણી,  
 સાચી રખવાળતા છે નિલ નિજ શુરની.  
 વિજયની વેલિઓ વહાલાંને વિનોદ દેતી,  
 આનંદ ઉપાવે કરી દૂર આધિ ઉરની.  
 કેશવ કલીત ક્યારા ન્યાયના વિરાજે નીકા,  
 ઉત્તમતા આત્રકેરી શોભા બમણી બની.  
 પામો દાનજળનાં સદૈવ શુભ સિંચનથી,  
 વાટિકા વિકાશ ભાવભૂપના સુયશની. ૨૯

॥ શુભં શ્રુયાત્ ॥

